

કુલિંગી કોઈંગીંગી જ્ઞાન કોઈંગીંગી હોઈંગીંગી જ્ઞાન  
 શ્રી જૈન કન્યાશાળાની  
 ખાળાયોને ઈનામ.  
 બાઇ ચાંદન વીસનગરધાલા શોડ  
 ગોકળાઘ મુલંચાંદની  
 દીકરી તરફથી,  
 ધારણ નામ  
 સંવત ૧૯ સન ૧૯  
 કુલિંગી કોઈંગીંગી જ્ઞાન કોઈંગીંગી હોઈંગીંગી જ્ઞાન





## श्री चातुर्विशालातिजनि स्तुति देशाना संग्रह.

बपांचो प्रसिद्ध करनार्.

श्री आद्य जैनधर्म प्रवर्तक सन्ना  
पांजरापोळ अमदावाद (तरफयी).

शा. बाल्दा जाई ककल्हजाई.  
मांडवीनी पोळ—अमदावाद.

अमदावादमां—“राजनगर प्रिन्टिंग प्रेस” मां गाठयोः

चौर संवत् १४३७. विक्रम संवत् १९५७.

किमत रु. ०—१५—०.

प्रस्ताविना।

सांप्रतं काळमां संप्रतिराजा समान जैं कुमारपाल राजा तेमना गुरु महाराजे श्री हैमचंद्राचार्य थाया जे पोतानी असधारण बुद्धबलश्री कलिकालमां संवैक्ष कहेचाया तेमना नामयी कोड़पण जैन-कामेज़ अजाइयो होइे। तेमणे कुमारपाल शृपालना अति आग्रहश्री त्रिपुष्टि शलाका पुरुष चरित्र संस्कृतमां श्लोकबद्ध वनाव्यु। तेमां चोबीस तीर्थकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव बलदेव अने नव प्रतिवासुदेवोनु चरित्र आवै लुं भे। तेनु गुजराती जागांतर ज्ञावनंगरेनी श्री जैनधर्म प्रसारक सच्चाए कर्यु छे। तेमां चोबीस तीर्थकर जगवानना जन्म समये तथा केवलज्ञान समये इन्द्र महाराजे करेली। स्तुतिनु तथा तेमनी पहिली देशनाउ चतुर्विध संघने घणो ज्ञाव उत्पन्न करनारी तथा बोधदायक जाणी अमदावाडमां चाहती साधवी शालामां जणनार साधवीउने माटे वांचनमाला तरीके वापरवा सारु श्रमारी सच्चाए तेनो संमह करी। उपावी प्रसिद्ध करी तेनी अंदर जे जे अधरा शाढो मालम-पड़वा तेना अर्थ पण बेटना जागमां दा, खल कर्या छे जेझी जणनारने तथा वांचमारने तेनी सारी समंज पडे।

झाँचनार वग्ने तम्रताप्रवृक्ष आरज करु लुँ के दक्षपूर्वक आ गंध वांची मनन करी  
अपूर्व लाज्ज मेलवचा चुकशो नहीं, तथा आ युस्तकनी अंदर मंदबुझी, हष्टी दो-  
लाशी, प्रमादशी तथा डापनारनी चीनकाळजीशी जे काह कानो, साज्जा, अनुस्वार तथा  
हस्त दीर्घनी झुलुकुरु रही गइ होय तथा जिनाहा चिरुक्क लखाण थयु होय तेने  
मादे मिथ्याउकुत देउ लुँ, ने सुहुपुरुषोने ते सुधारी वांचवा तथा मने लखी जणावा  
सविनय मार्शना करु लुँ के बीजी आवृद्धितां ते सुधारी शाकाय.

लि, पल्लद्रकता शी आद्य जैनधर्म पवर्तक सज्जा.

पांजरपोठ असदावाद (तरफथी)

सा. ३-३-१०.

शा. बालाजाई कक्खलाई.

## अनुक्रमणिका।

पृष्ठांक.

विषयानुक्रम।

पृष्ठांक.

विषयानुक्रम।

श्री रिषतदेव चरणवातना। जन्म बखते

इन्द्र महाराजे करेली स्तुति।

श्री रिषतदेवजीनी दीक्षा बखते इन्द्रे

करेली स्तुति।

प्रचुना केवलङ्घात बखते इन्द्रे करेली

स्तुति।

चरत चक्रवर्णेषु रिषतदेव स्वामीनी

करेली स्तुति। २

चरते श्रष्टापद् उपर करेली प्रश्नी

स्तुति। ३

११  
१२

१३  
१४

श्री रिषतदेव प्रश्नी अष्टापद् उपर नि-

र्ण नमस्ये चरते करेली स्तुति।

श्री आदिजिन स्तुति।

” ” ”

” ” ”

श्री अजितजिन स्तुति

श्री अजितनाथनी स्तुति।

” सगर चक्रवर्णेषु करेली स्तुति।

श्री संजवनाथजीनी स्तुति।

श्री अजितनंदन स्वामीनी स्तुति।

” ” ”

२०

२१

२२

२३

विपर्यासुकम्  
श्री सुमतिनाथजीनी स्तुति.

" " "  
श्री पद्मप्रसूजीनी स्तुति.  
" " "  
श्री सुपार्श्वनाथजीनी स्तुति.

" " "  
श्री चंद्रप्रसूजीनी स्तुति.

" " "  
श्री सुविधनाथजीनी स्तुति.  
" " "  
श्री श्रीतलनाथजीनी स्तुति.

५५  
५६

पृष्ठांक.

निषयालुकम्.

श्री अर्यांसनाथजीनी स्तुति.

१७

१८

श्री वासुपूर्वचजिन स्तुति.

१९

श्री विमलनाथजिन स्तुति.

२०

२१

२२

२३

श्री धर्मनाथजिन स्तुति.

२४

२५

२६

२७

श्री शांतिनाथजीनी स्तुति.

२८

२९

३०



कर्ये पाने।

कथा सागवासनी देशना।  
श्री शूलोतनाशजीनी देशना।  
श्री संज्ञवनाशजीनी देशना।  
श्री अजिनंदनजिन देशना।  
श्री सुमतिनाशजीनी देशना।  
श्री पञ्चप्रचुजीनी देशना।  
श्री सुपा श्रुत्वाशजीनी देशना।  
श्री चंदप्रचुजीनी देशना।  
श्री सुविधीनाशजीनी देशना।  
श्री शीतळनाशजीनी देशना।  
श्री श्रेयांसनाशजीनी देशना।  
श्री वालुप्रदयजिननी देशना।  
श्री विमलनाशजीनी देशना।

आ विषयां उपर।

द्वेत्रसमास सविस्तर वर्णन।  
अनित्य जावना।  
अशरण जावना।  
एकत्र जावना।  
संसार जावना।  
अन्तर्लंब जावना।  
अशुद्धि जावना।  
आश्रव जावना।  
संवर जावना।  
निर्जरा जावना।  
धर्मदुर्लभ जावना।  
बोधिकुर्लभ जावना।

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

कर्मे पाने।

तत्त्व स्वरूप।

कथायतो जय।

इंडियोतो जय।

मनशुद्धि।

राग देष जय।

समता।

गृहस्थ धर्म।

श्रावक दिनचर्या तथा मनोरथ।

अज्ञव्य लाग।

श्रावकनां बारबत्।

पांच अव्रत लाग।

पापनां फल तथा हितोपदेश उपर देशना। साधुने उपदेश।

शा विषय उपर।

कथा जगवाननी देशना।  
श्री अनंतनाथजीनी देशना।

श्री धर्मनाथजीनी देशना।  
श्री शांतिनाथजीनी देशना।

श्री कुंशुनाथजीनी देशना।  
श्रो अरनाथजीनी देशना।

श्री महिनाथजीनी देशना।  
श्री मुनिसुवतस्त्रामिनी देशना।

श्री नमीनाथजीनी देशना।  
श्री अरीषु नेमिनाथजीनी देशना।

श्री पार्श्वनाथजीनी देशना।  
श्री महावीर स्वामीजीनी देशना।

पापनां फल तथा हितोपदेश उपर देशना। साधुने उपदेश।

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

चान्दूल्लालि जिला इन्द्राजि लुंशाला संयुक्त.

## सुलिलि संग्रह.

अभी विश्वनाथदेव अगवालना अन्धा वरवते इन्द्रजिहाराजे करेली स्तुति।  
हे तीर्थनाथ ! हे जगत्वेण सज्जाय करनार, हे कृपारसना समुद्र, हे नाजिनंदन, त-  
सने नमस्कार करुं छ. हे नाथ ! नंदनादिक तण उद्यानोशी जेम सेरु पर्वत शोजो, तेम  
मति विग्रेर तण झालसहित उपजनाशी तसे शोजो ठो. हे देव ! आजि आ मरतहेत्त  
स्वर्गशी पण विशेष शोने ठे, केमके त्रैलोक्यनां मुगटरहस्यान एवा तसे तेने अखंकृत  
कर्यु ठे. हे जगन्नाथ ! जन्म कल्याणकला महोत्सवशी पवित्र धएदो आजनो दिवस, संसा-  
रमां रहुं लां सुधी तमारी पेटे बंदन करवाने योऽय ठे. आ तमारा जन्मसनां पर्वशी आजे  
नारकीडने पण सुख अयुं ठे. केमके अहंतोनो उद्य कोना संतापने हएनारो न शाय ?

आ जंगुदिपते विषे जरतकेत्रमां निधाननी पेरे धर्म नष्ट शह गयो ठे, तेने तमारी आङ्गा  
रूपी चीजधी पाठो प्रकाश करो। हे जगत्कृ! तमारा चरणने प्राप्त करी ने हवे कोण संसा-  
रने तरक्षो नहि? केसके नवना योगत्रये लोडुं पण समुद्रना पारने पासे ठे. हे जगत्कृ!  
बुद्धविनाना देशमां जेस कटपहुँक भटपत्त थाय, आने मरुदेशमां जेस नदीनो प्रवाह  
थाय तेस तमे आ जरतकेत्रमां दोकोना! पुन्यधी अचतरेला गो.

॥५॥ इखचढ़ेवजीनी दिक्षा वशते दृढ़े करेछी स्तुति।

हे प्रदु! तमारा यथार्थ गुण कहेवाने असे असमर्थ ठीए, तथापि असे स्तुति क-  
रीए ठीए; केसके तसारा प्रज्ञावधी आसाई। बुद्धिनो विस्तार थाय दे. हे ज्ञानि! त्रस  
अने रथावर जंतुठनी हिंसानो परिचार करवायी अजयदान आपत्तारी दानशाळारूप  
षणद्वा आपने असे नमस्कार करीए ठीए. सर्वेशा मुषाचादनो परित्याग करवायी हित-  
करी, सल्य अहे प्रियवन्नरूपी मुषारसना समुद्र एवा आपने असे नमस्कार करीए  
ठीए. हे जगत्कृ! अद्दत्तादाननो ल्याग करवायी खीचाइ गएलो सार्गमां प्रथान पंथी

शपला आपने असे नमस्कार करीए ठीए. हे प्रश्न ! कामदेवरूपी अंधकारतो नाश करनार अनें अखंकित ब्रह्मचर्यरूपी महा तेजवाळा सूर्यसमान आपने असे नमस्कार करीए ठीए. तुण्णी पेटे पृथिव विगोर सर्व जातना परिमहने एकसाथे त्याग करनार निर्दोजता रूप आत्मवाळा आपने असे नमस्कार करीए ठीए. पंचमहाब्रतनो ज्ञार उपाखवासां वृषत्समान अने संसार सिंधुने तरवासां काचबा समान आप महात्माने असे नमस्कार करीए ठीए. हे आदिनाथ ! जाए पांच महाब्रतोनी पांच सहोदरा होय तेवी पांच लम्फीतिने धारण करनारा आपने असे नमस्कार करीए ठीए. आत्मारामने विषेज जोनेहा शनवाळा, वचननी संवृत्तिशी शोकता अने शरीरनी सर्व चेष्टाऊंशी निवृत्त अपदापवा ऋण गुप्तिभारक तमने असे नमस्कार करीए ठीए.

प्रचुना केवलझन वरहते इन्द्रे करेली स्तुति.

हे जगत्पते ! रतोवके रहाकर शोने तेम आप एकज आंत झान दर्शन वीर्यना आंदशी शोजो ठो. हे देव ! आ जरतकेत्रमां बणा काळथी नष्ट अपेल धर्मरूप वृद्धने पुनः उत्पन्न करवासां तमे बीज समान ठो; वली हे प्रश्न ! तमारा महात्म्यनो कांड अ-

वधि नथी कारण के पोताने स्थानके रहेला अनुत्तर विमानना देवोना संदेहने तमे अहीं  
रहा उत्ता जापो ठो, अने ते संदेहुं निवारण पण करो गो. मोटी ऋद्धिवाळा अने कां-  
तिथी प्रकाशी रहेला आ सर्व देवताऊनो जे स्वर्गमां निवास ढे ते तमारी ज्ञकिना देश  
मान्वनुं फल्ह ठे. मुख्यजनने गंधनो अनुव्यास जेम कहेशने अर्थेज आय ढे तेम तमारी  
ज्ञकिविनाना मनुष्योना मोटां तप पण श्रमने माटेज आय ढे. हे प्रश्न ! तमारी स्तुति  
करनार अने तमारो छेष करनार बन्ने उपर तमे तो समान ऊषिवाळा गो, परंतु तेउने  
शुन अने अनुग्रह प्रम जिज्ञ फल्ह आय ढे तेथी अमने आश्चर्य आय ढे. हे नाथ !  
मने स्वर्गनी लक्ष्मीयी पण संतोष नथी तेथी हुं पर्वुं माण्युं के मारी तमारे विषे आकृष्य  
अने अपार जक्कि आहुं.

जहात चक्रवर्तिए इखवदेव स्वामिनी करेली स्तुति.

हे अश्विल जगज्ञाथ ! हे विश्वने अचाय आपनार ! हे प्रथम ती झेश ! हे लंसार  
तारण ! तमे जय पामो. आजे आ अवसरिपणीमां जन्मेला लोकोहपी पद्माकरने सूर्य  
समान तमारा दर्शनथी मारे अंधकारनो जाश अइने प्रजाता असुं ढे. हे नाथ ! जठरजी-

बोला सनहुपी जल्लै निर्मल करवानी कियागां कतकना चूर्ण जेवी तमारी बाणी जय-  
वंती वर्ते रे. हे करुणा द्वीर सागर ! जे तमारा शासनहुपी महारथमां आरुड आय ले  
तेउने लोकाच (मोक्ष) छुर न अची. हे देव ! निकारण जगत्वंधु आप साक्षात् जोवासां  
आवो ठो तेथी आ संसाराते असे लोकाच्यु धण अधिक मानीह डीए. हे स्वामिन् ! आ  
संसारमां पण निश्चल नेत्रोवदे तमारा दर्शनना महानंदहुपी कुरासां असने मोक्षुखना  
स्वादनो अद्वितीय आय ले. हे नाथ ! रागदेव अनेक कषायादि शहुल्लेह लंधेला आ जगत्ने  
आ नयदान देनारा तमे बद्धेषित करो ठो (रुधनमांशी ओकाचो ढो.) हे जगतपते ! तत्त्व  
जणाचो ठो, तमे मार्ग बताचो ठो, अनेत तमे विश्वनी रक्षा करो ठो तो तेषी विशेष हुं तसा  
री पासे हुं शाचना करुं ? जेवी अनेक जातना उपद्रव अनें संशामशी परस्परनां गासो अने  
पृथ्वीने खद लेनारा रे एवा आ सर्व राजाले आपनी सज्जामां परस्पर मित्र शहुले रहेला ले.  
तमारी पर्णदामां आवेदो आ हस्ती पोतानी सूंदरी केसरीसिंहना करने (सुंदने) आकर्षण  
करी लेनावके पोताना कुंशशळले वारंवार कंसुयन करे ले ( खजवाल्ले ). आ महिष,  
अन्य महिषनी देवे वारंवार स्तेव्यु पोतानी जीवहावमे आ हणहणता अश्वने सार्जन

करे हे. लीलायी पोताना पुंछकाने हदावतो आ मृग उंचा कान करी अने सुखने नमाची पोतानी नासिकाशी आ बाजना मुखनुँ आश्रण करे हे ( सुंधे हे ). आ तस्ण माजार<sup>१</sup> आगळ पाहळ अने परखे पोताना बहवानी पेठे फरता एवा मूषक<sup>२</sup> ने आलिंगन करे हे. आ चुजंग पोताना शारीरनुँ कुंपाळुँ करी आ नकुल रैनी पासे मित्रनी पेठे निर्जय थाइने वेठो हे. हे देव ! आ बीजा पण निरंतरनां वैरवाळा प्राणीहे अहीं निवैर थाइने रहा हे. आ सर्वनुँ काण तमारो आतुद्य प्रजाव हे.

मरतचक्रीए आद्यापद उपर करोडी प्रश्ननी स्तुति.

हे प्रश्न ! अठता गुणोने कहेनारा मनुष्यो अन्यजनोनी स्तुति करी शके हे, पण हुंतो तमारा उता गुणो कहेवाने पण आसमर्थ हुं तेथी आपनी स्तुति केस करी शकुं ? तंथापि दरिक पुरुष पण जेस लहसीनतने लेट करे हे तेस हे जगवाश ! हुं आपनी स्तुति करीश. हे प्रश्न ! चंदनां किरणोशी शोफाळी जातनां वृक्षोनां पुष्पो गळी जाय हे तेस तमारा चरण जोवा मात्रची मनुष्योनां अन्य जन्मसां करेशां पापो गळी जाय हे. हे

स्वामी ! जेनी चिकित्सा न आइ थाके पवा महा मोहरुपी संनिपातवाळा ब्राणीउने विषे  
पण अमृत औषधिना रस जेवी तमारी वाणी जयवंती वर्ते छे. हे नाश ! वरसादनी  
बुटिनी जेम चक्रवर्ती अने रंकजन उपर सदृश चाचवाळी तमारी हष्टि ग्रीति संपत्तिना  
एक कारणरूप हे. हे स्वामी ! कूर कर्मरुपी बरफनी गांउने गाळी देवामां सुर्यनी जेवा  
आप अमारा जेवाना पुण्यशीज पुध्वीमां विचरो ढो. हे प्रलु ! शब्दानुशासनमां व्यापी  
रहेला संझासुत्रना जेवी उत्पाद, व्यथ, अने धौठयमय तमे कहेली निपदी जयवंती  
वर्ते छे. हे जगवन् ! जेउ तमारी स्तुति करे तेउने आ ढेह्वो जन आय ढे तो जेउ तमारी  
सेवा अने ध्यान करे तेनी तो चातज शी करनी ?

न्यरतचक्रीए आष्टापद उपर करेली पञ्चनी स्तुति.

हे प्रलु ! मारा जेवाए तमारी स्तुति करवी ते कुंजशी समुद्रतुं पान करवा जेउ छे,  
तथापि हुं तमारी स्तुति करीश केमके हुं चक्किशी निरंकुश हुं हे प्रज्ञो ! दीपकना संप-  
र्क्षी जेम वाटो पण दीपकपणाने पामे छे, तेम तमारा आश्रित जविजानो तमारी तुद्य  
आय छे. हे स्वामिन् ! मद् पामेला इंद्रियरुपी हस्तीयोने निर्मद करवामां औषधरुप अने

सार्गने बतावनार तमारुं शासन विजय पामे थे। हे निचुवने श्वर ! तमे चार घातीकर्मने हुएगीने बाकीनां चार कर्मनी जे उपेक्षा करो गो ते लोककट्याणने साटेज करो ठो एम दुं माउं डुं। हे प्रछ ! गरुहनी पांखमां रहेला पुरषो जेस समुद्रतुं बहुंधन करे थे, तेस तमारा चरणमां लभ थएला जाव्यजनो आ संसारसमुद्रतुं उहुंधन करे थे। हे नाथ ! अनंत कट्याणरुप वृक्षने उद्धसित करवामां दोहदरुप अने विश्वनी मोहरुपी महा निदासां प्रातःकाळ समान तमारुं दर्शन जयवंत वर्ते थे। तमारा चरण कमळना स्पर्शशी प्राणीउनां कर्म विदारण थइ जाय थे, केमके चंडना मुडु किरणोशी पण हाथीना दाँत फुटे थे। भेघनी वृष्टिनी जेम अने चंडनी चंडिकानी जेम हे जगद्वाश ! तमारो प्रसाद् सच्चने सरखोज थे।

श्री रिखवदेव पञ्चनी अष्टापद उपर निर्वाण समये ज्ञरते करेली स्तुति.

हे जगत्सुखाकर ! हे निजगत्पति ! पांच कट्याणकशी नारकीजने पण सुख आप नार एवा आपने हुं नमस्कार करु छुं। हे स्वामिन् ! सूर्यनी पेत्रे विश्वनुं हित करनारा तमे हमेशां विहार करीने आ चराचर जगत् उपर अनुग्रह कर्यो थे। आर्थ अने अनार्थ

ए अंकों उपरनी प्रीतिश्ची तमे चिरकाळ विहार करता, तेथी पञ्चननी आने तमारी गति परो-  
 पकारने माटेज छे. हे प्रश्न ! आ लोकमां मनुष्योनो उपकार करवाने माटे तमे चिरकाळ  
 विहार कर्यो हुतो, पण मुक्तिमां तमे कोनो उपकार करवाने माटे गया ? तमे अधिष्ठित  
 करेलुं लोकाय (मोहु) आज खरेखर लोकाय शयुं छे. अने तमे ढोकी दी धेल आ मर्य  
 लोक खरेखर मर्य लोक (मृत्यु पासवा योग्य) शयो छे. हे नाय ! जेठे विश्वने अनुग्रह  
 करनारी देशनाने संचारे ठे ते लड्य प्राणीठने हजारीपण तमे साक्षातज ठो. जेवे  
 तमारं लपस्य एवुं ध्यान करे ठे तेवा महात्माठने पण तमे प्रस्त्रकौज ठो. हे परमे श्वर !  
 जेवी रीते ममता रहित एवा तमे आ सर्वं संसारनो ल्याग कर्यो तेवी रीते हुवे कदापि  
 मारा सननो ल्याग करशो नहि.

### श्री आदिजिन स्तुति.

हे जगवास्थ ! हे नैखोक्य कमळ मातृक ! हे संसारलपि मरुस्थलसां कदपृष्ठ !  
 हे विश्वोद्भूतण बाध्यव ! हुं तामने नमस्कार करु छुं. हे प्रश्न ! ए सुहूर्णी पण वंदन करवा  
 योग्य ठे के जे मुहूर्चेमां धर्मने जन्म आपत्तारा—अपुनजन्मा—विश्व जंत्मा जन्म ठुःखनुं

ठेदन करनारा, आपनो जन्म स थयो भे हे नाथ ! आ वखते तमारा जन्मानियेकना जळना पुरथी ध्यावित थएदी अने यला कर्या सिवाय जेनो मध्य छूर थयो भे एवी आ रत्नप्रचा पृथ्वी सत्य नामचाली थाइ भे. हे प्रश्न ! जे मनुष्यो तमारं अहर्निश दर्शन करशे तेउने धरय भे. अमे तो अबसरेज आपतुं दर्शन करनारा डीए. हे द्वामिन ! जरत केन्द्रना जंतु उनो मोक्षमार्ग खीलाइ गयो भे तेने आप नवीन पांथ अह पुमः प्रगट करशो. हे प्रश्न ! तमारी अमृतना तरंग जेवी धर्मदेशना तो छूर रहो, परंतु तमारं दर्शन पण प्राणीहरुने श्रेय करनार भे. हे जनवतारक ! तमारी उपमाने पात्र कोइ नथी तेथी हुंतो तमारी तुल्यज तमेज हो एम कहुं बुं पटखो हवे बधारे स्तुति केची रीते करवी। हे नाथ ! तमारा सद्गुतार्थ गुणोने पण कहेवाने हुं असमर्थ बुं केमके द्वयंश्रुरमण समुद्रना जाखने कोण मापी शके ?

श्री आदिनिन स्तुति.

हे जगवत ! जो के उत्तम योगीरथी पण आपना गुणो सर्व प्रकारे जाणवा अशक्य हे तो स्तुति करवाने योग्य पवा ते आपना गुणो क्यां अने नित्य प्रसादी पवो हुं स्तोता

करनार अने प्रदालन विना पवित्र एवं तमारी काया कोने आँदेप न करे ? सुंगधि :

### श्री अजितजिन स्तुति.

हे प्रलु ! जातिंत सुवर्णना भेदना जेवी उबिशी आकाशना जागने आच्छादन

कयां ? तशापि हे नाथ ! हुं यशाचक्कि तमारा गुणोने दत्तीशा, हुं दंगनो मनुष्य दीर्घ  
मार्ग चाले तो तेने कोइ निवारे ? हे प्रलु ! आ संसारलुपी आतपना बद्देशासी परचशा  
येयेशा प्राणीबने जेना चरणदे डाया छलनी ठाशाउं आचरण करे भे एवा आप आमारी  
रहा करो ! हे नाथ ! सूर्य जेस परोपकारने याटे भगे भे तेस फल खोकने साटेज विहार  
करता एवा आप कुतार्थ ठो. स्वयानहुना सूर्यनी जेस आप प्रलु अगट शये देहनी ठा-  
यानी जेस प्राणीउनां कर्म चोलरफशी संकोच पासी जाय छे; जेहु हमेशां तमने जुए  
भे ते लिर्यचोने पण धन्य हे अने जे तमारा दर्जनशी शून्य भे ते इच्छामां रहेला होय तो  
पण अपन्य हे. हे निःजगतपति ! जेहुना हृदयलुपी चैत्यशां तमे एक अधिदेवता रहेला  
ठो ते ज्विकजनो उक्षुमां पण उक्षुष्ट छे. हुं आपनी पासे एकज माणु छुं के गामोगाम  
अने लगार नगर निहार करता आप कदानि पण आरा हृष्णने भोकशो नहि.

हे प्रश्न ! तीर्थकर नाम कर्मची श्येला सर्वना अजिपुरुषपणे हमेशां सन्मूख थाह्नेते तमे सर्व प्रजाने आनंद पसारो ठो. वळी एक शोजनना प्रसाणचाळा धर्मदेशनाना मंदिर

श्री ऋजितजिन इति.

विलेपन कर्या शिवाय पण निला सुगंधी पवा तमारा अंगासां मंदारनी मालानी जेस देवताउनी छोडैनां नेत्रो अमरपणाते पासे डे. हे नाथ ! दिव्य अमृतरस स्वादना पोष-यथी जाणे हणाइ गया होय तेवा रोगरूपी सर्पना समुहो तमारा अंगासां प्रवेश करी शकता नशी. दर्पणला तखासां लीन श्येला प्रतिर्वचना जेवा तमारा शरीरमां करता पसीनाना विदीनपणानी कशा पण केम संचोने ? हे वीतराग ! तमारु मन मात्र रागरहित ठे एस नशी पण तमारा शरीरमां रुधिर पण उधनी धारा जेवुं श्रेत ठे. तमारामां धीरुं पण जगत्यां विलक्षण ठे एस असे कही शकीए ढीए. कारण के तमारु मांस पण नहू बग-रेवुं अविज्ञत्स अने शुच ठे. जल तथा स्थलासां उपक्ष अयेद्दी पुण्योनी मालाने गोरुने जमराउ तमारा निः शासनी सुगंधने अनुसरे ठे. तमारी संसारदिश्यति पण लोकोत्तर चमत्कार करनारी ठे, कारण के तमारा आहार अने निहार पण चर्मचक्षु गोचर घता नशी.

रमां करोको तिर्यंच, मतुहृष्य अने देवतारे परिवार सहित समाय हे अने एक जागामां  
बोलाउं डतां पण सर्वने पोतपोतानी जागामां समजाउं अने मनोहर खागे एडुं तमाहं  
वचन जे धर्मना बोधने करनाहं आय हे ते पण तीर्थकर्ता म कर्मनोज प्रजाव हे. तमारी  
विहारगूम्फी चोतरफ सचासो सचासो योजन सुधी पूर्वे उत्पन्न श्रयेदा रोगरूपी वर-  
सादो तमारा विहाररूपी पवनना भर्मितशी प्रयासविना लाय पामी जाय हे अने राजा-  
उए नाश करेली अनीतिनी जेम आप डयां विहार करो गो ते पृथ्वीमां सुषक, तीक,  
अने सुका विगरेनी उत्पन्निप उत्पन्निका इतिउ पण प्रगट थाती नशी. तमारी कुपारुपी पु-  
इकराचन्तनी वृष्टिशी पृथ्वीपर ल्ही, केन्त्र अने इठयादि कारणोशी उत्पन्न श्रयेलो वैरुप  
आग्नि पण शांत अद जाय हे. हे नाश ! अशिवतो ब्रह्मेद करवामां पक्षरूप तमारी प्रजाव  
पृथ्वीमां परिच्रमण करतो होवाशी मनुष्य लोकना शत्रुरूप मारी विगेरे रोगो उत्पन्न थता  
नशी. विश्वना एक वसल अने लोकोना मनोरथने ब्रह्मनारा तमे विचरता होवाशी उप-  
तापने करनारी अतिवृष्टि अने अवृष्टि पण थाती नशी. तमारा प्रजावशी सिंहता नादशी  
हाशीउनी जेम स्वराज्य अने परराज्य संबंधी कुद उपद्रवो सहवर नाश पामे हे. सर्व-

प्रकारना अद्वित प्रजावचाला अने जंगम कटपवुकहप तमे पृथ्वीमां विहार करता उताँ  
डुर्जिदानो हय थइ जाय ठे तमारा महतक उपर पाडला जागमां सूर्य मंकळना तेजने  
जय करनालं पठुं जामंकळ, आपतुं शारीर लोकोने डुरालोक न थाले एम धारीने पिंफा-  
करि थयेलुं दोय तेम जणाय ठे. हे जगवन्! घातीकर्मनो हय थाची थयेलो आ योग  
साम्राज्यनो महिमा विश्वमां प्रख्यात थयेलो ठे ते कोने आश्वर्यनुं कारण नथी? अनंत  
काळधीसंचय थयेलाँ अनंत कर्मरूपी तुणने सर्वशा प्रकारे तमारा जिवाय बीजो कोइ  
एण मुलधी उन्मूलन करी शकतो नशी. क्रियाना! समजिहारशी तेवी रीतना उपायमाँ  
तमे प्रवत्तेला ठो के जेशी नहि इच्छता उताँ पण लक्षीनो आश्रय करीने रहा ठो, मैत्रीना  
पवित्र पात्रहप हर्षना आमोदशी शोजता अने कुगा तशा उतेका करनाराउमां मुख्य  
एवा तमने योगात्माने हुं नमस्कार करु छुं.

श्री अजितनाथनी सगर चक्रवर्तीए करेली स्तुति.

हे प्रभु! मिथ्याहटिने कट्यांतकाळना सूर्यसमान अने समकितहटिने अमृतना  
अंजन सपान तेमज तीर्थकरपणानी लाव्हनीने तिजकहप आ चक्र तमारी आगळ वृक्ष

पामेलुं ठे. आ जगत्रमां तमे एकज स्वामी ठो एम कहैवाने जाए इंड्रे इन्द्रधनुजना  
मिषथ्री पोतानी तर्जनी आंगली उंची करी होय एम जणाय ठे. ज्यारे तमारा चरणो  
पणदां ज्ये त्यारे सुर असुरो कमळ रचवाना मिषथ्री कमळमां वसनारी लक्ष्मीने  
विस्तारे ठे. दानत, शीळ, तप अनें जाव ए चार प्रकारना धर्मने एक साथे कहैवाने माटे  
तमे चार मुखवाळा थया ठो, एम हुं मातुं. आ त्रण शुचनतुं त्रण दोषथ्री रक्षण करवा  
ने तमे प्रवत्तेद्वा ठो, तेशीज देवताठेए आ त्रण गढ करेला जणाय ठे. तमे पृथ्वीमां  
विहार करो ठो त्यारे कांटाठे अधोमुखी यइ जाय ठे पण तेमां कांइ आश्वर्य नथी, केम  
के सूर्यनो उदय थ्यारे अंधकार सन्मुख यइ शकेज नहि. केश, रोम, नख अने  
डाढी मुठ वृक्ष पामया शिवाय अन्वस्थित रहेला ठे, एव्वी रीतनो बहारनो योग महिमा  
तीर्थकरो शिवाय बीजाठेए प्राप्त करेल नथी, शब्द, रूप, रस, स्पर्श अने गंध नामना  
पांच इंद्रियोनां विषयो तमारी आगळ ताकिक दोकोनी जेम प्रतिकूलपणाने जजता  
नथी. सर्व रुद्रुं अकाळे करेला। कामदेवनी सहायना लयथ्री जाणे होय तेम एक  
साथे तमारा चरणनी उपासना करे ठे. आगळ उपर तमारा चरणो स्पर्श आवानो ठे

एम विचारीने देवताओं सुरांशी जलना वर्षाद्वयी अने दिव्य पुष्पोनी वृष्टिकी ते पृथ्वीनी  
पूजा करे डे. हे जगत्पृथ्य ! पक्षीडे पण चोतरफथी तमारी प्रदक्षिणा करे डे. तो तमा-  
राशी निमुखवृत्तिवाल्ही थाय डे, अने जगतमां मोटा थांडने करे डे ते पुरुषोनी तो शी  
द्वियतुं तो दौःशीढ्य वयांशीज थाय ? तमारा महाल्लयथी चमत्कार पासेलां वृद्धो पण  
मस्तक नमावीने तमने नमे डे, तेथी तेऱनां मस्तक कृतार्थ डे पण जेमनां मस्तक तमने  
तमतां नथी यना मिथ्याहृष्टितनां मस्तक कृतार्थ नथी—नयर्थ डे. जघन्यपणे पण कोटी  
गमे सुरा सुरो तमारी सेचा करे डे, कारण के मूर्ख—आक्लसुपुरुषो पण जाग्यना योगथी  
द्वचय थपुद्या अर्थमां उदासपणे रहेता नशी.

अभी संन्नवनाथंजीनी स्तुति.

हे जगवान ! विश्वना प्रतिपादन करनार ! मोटी समुद्रद्वारोए सहीत अने त्रीजा  
तीर्थनाथ एवा आप जगवंतने नमस्कार कर्ह लुं. हे विजो ! जन्मथीज ब्रात श्येला त्रण  
झान अने चार अतिशयोशी तमे जगतमां विद्वक्षण डो. अने तमारामां स्फुटरीते एक

हृजार दाढ़णों रहैलां भे हमेशाँ प्रसादों पुरुषोना प्रसादना डेढ़नुं कारण पड़ुं आ तमां  
 जन्म कढ़याएक आजे मारा लेजाना कढ़याणने माटेज अर्थुं भे. हे जगत्यनि ! आ रात्रि  
 आखी प्रशंसा करवाने योग्य थइ भे, कारण के जेमां निष्कलंक चंद्रलुप एवा तमे प्रगट  
 थया गो. हे प्रश्न ! तमने वंदना करवाने जो आठन्य करता अनेक देवताओशी आ मतुष्य  
 दोक हमणां स्वर्गलोकना जेवो जणाय भे, हे देव ! तसारा दशार्तलुप अमृतना खाद्य  
 जेओनां चित्त संतुष्ट शेयदाँ भे एवा अमृतजोजी हेवताओशी जीर्ण शयेला खा-  
 गना अमृतनी काँइ जरुर नशी. आ जरतहेत्रलुपी सरोवरमां कमललुप एवा हे जगवान् !  
 तमारामां लमरानी धेरे मारो परम लय थइ जाओ. हे अधीश ! जेओ हमेशा तमालं द-  
 शन करे भे ते मतुष्योनेपण धन्य भे, कारणके तमारा दर्शननो उत्सव स्वर्गना राज्यशी  
 पण अधिक भे.

श्री संज्ञवनाथजीनी स्तुति.

हे प्रश्न ! सर्वना तमे न बोद्धाव्या भलां पण सहायकारी गो, कारण सिवाय बास-  
 द्यवान गो, प्रार्थना कर्या वगरना उपकारी गो, अने संबंध बगरना बांधव गो, तेथी हे

नाथ ! आत्मांग कर्या वगर स्त्रिय हृदयवाला, मठापकर्षण विना उज्ज्वल वचनने बोल-  
नारा, प्रकालन कर्या वगर निर्भव शीलवाला अने शरण करवाने दायक एवा तमारा  
शरणनो हुं आश्रय करुं लुं. हे स्वामि ! शांति डरत्वाचान अने सर्वमाँ  
सरखी रीते वर्त्तनारा एवा तमोप कर्महृषि कुटिल कांटाने अत्यंत कूटी नांख्या डे. अजन  
डरत्वा महेश, अगद डरत्वा तरकने ठेदनार ( कुण्ण ) अने आराजस डरत्वा तमने  
अमे नमस्कार करीए नीप. हे प्रश्न ! सिंचन कर्या सिचाय फलदृप अने पकवा वगर  
मोटा वधेला एवा तसे संकटप रहित कडपवृक्ष लो माटे तमाराषी मने मोटुं फल प्राप्त  
याउ. हे स्वामि ! ऊऱ्यादि संग रहित, ममताए वाजित, कृपालु, मध्यस्थ अने जगतने  
पालन करनार एवा आप जिनेश्वरनो हुं कोइ पण प्रकारना चिशुलादि चिन्ह विनानो  
किंकर लुं. हे नाथ ! नहि गोपवेला रत्ना निधरूप, वारु विनाना कटपवृक्षरूप अने नहि  
चिंतवेला चिंतासणीरूप एवा तमारे विदे आ मारा आत्माने में अपूण करेलो डे. हे  
प्रश्न ! हुं फलनी चिंताशीरूप एवा तमारी मूर्ति फलरूपज छे तेशी ‘शुं करबुं, एवा  
विचारमाँ जम अथेला मने मारे शुं करबुं जोइप ते बतावचानो प्रसाद करो.’

श्री अन्नदान स्त्रामीनी स्तुति.

चोशा तीर्थकर, चोशा आराहूप आकाशमां सूर्यसमान अने चोशा पुरुषार्थ (मो-  
क) नी लहूनी प्रकाश करनार हे प्रलु ! आप जय पामो. हे नाश ! लांवे काले आप-  
नाशी सनाश शेण्डुं आ जगत हवे विवेकती चोरी करनारा मोहादिकशी क्यारे पण  
उपदत्तने पामशे नहीं. हे प्रलु ! आपना पादपीठमां जेतुं मस्तक लोटे ऐ एवा मारे विषे  
पुण्यरूप परमाणुना कण जेवी आपनी चरणरज दीर्घकाल स्थापन शाउ. हे ईश ! मारं  
नेत्र आपना मुखने विषे आसक होवाशी नहीं जोवा लायक वस्तुने जोवाशी उत्पन्न  
थेला प नेत्रना मळने हर्षशुभ्रनी उमीजेवके कृष्णवारमां धोइ नांखो. हे प्रलु ! लांचा  
कालती ममताना दर्शनशी उत्पन्न शपदां मारं रोमांचो चिरकादानी असहश्रूत ( मि-  
ध्यादर्शन ) नी वासनाते फूर करो. हे नाश ! मारं नेत्रो सर्वदा तमारा मुखने जोइ चि-  
दास पामो, मारा हाश तमारी उपासना करो, अने: मारा कान तमारा गुणना श्रोता  
शाउ. हे देवाधि देव ! कुंर पवी मारी बुद्धि जो तमारा गुणने ग्रहण करवा तरफ उत्कंठा  
वाली होय तो तेतुं कल्याण शाउ; केमके तेने बीजाशी शुं शबानुं छे. हे नाश ! हुं तमारो

शिष्य, दास, सेवक अने किंकर हुं प्रपाणे तमे स्वीकार करो एथी वधारे बीजुं काँइ  
पण हुं कहेचा इच्छतो नयी।

### श्री ऋग्निनंदन स्वामीनी स्तुति।

हे जगवन् ! आपे सर्वदा कष्टकारी एव्ही मन, वचन अने कायानी चेष्टानो संहार  
करी शिथिवपणाथी मनरूपी शाल्यने ऊँडुं करेलुं ले. हे नाथ ! तमारी इंद्रियो संसात पण  
नयी तेमज उहुंखल पण नयी एम सम्यक्प्रकारे प्रतिपादन करीने तमे इंद्रियोनो जय  
करेलो ले, योगनां जे आउ अंग कहेलां ले तेतो फक्त प्रपञ्चमात्र ले, नहीं तो ए योग वा-  
लपणाथी आरंभी तमारी सात्रयताने केम प्राप्त आय ? हे स्वामिन ! लांचा काळधी  
साथे रहेनारा विषयोमां तमने विराग ले अने अदृष्ट एवा योगमां सात्रयपुं ले ए अ-  
मने तो अदौंकिक लागे ले. जेवा तमे अपकार करनार उपर राग धरो ठो तेवो बीजाउ  
उपकार करनार उपर पण राग धरता नयी. अहो ! तमारुं सर्व अदौंकिक ले. हे प्रश्न !  
तमे हिंसक पुरुषोना उपकार कयो अने जे आश्रित हता तेमनी उपेक्षा करी एवा  
तमारा विचित्र चरित्रने कोण अनुसरी शके ? हे जगवन् ! परम समाधिमां तमे तमारा

आहमाने एवं रीते जोड़ी दीधो डे के जैशी 'हुं सुखी' बुँ के डुःखी लुं अश्वा सुखी के डुःखी नशी' एम तमारा मनमां पण शावतुं नशी. जेमां ध्याता, ध्यान अने ध्येय ए निपटी एकात्माने पासेदी डे एवा तमारा योगना माहात्म्य उपर बीजाउने के म श्रद्धा आवे?

### श्री सुमनिनाथजीनी स्तुति.

हे देव ! आपना जन्म कठधाणकथी आ पृथ्वी कठधाणवाङ्की शई गई डे तो ऊपरे तमे चरणकमठशी आ पृथ्वीपर विहार करणो ल्यारनीतो वातज शी करवी ? हे जगवान् ! तमारा दर्शनशी आमारी हृष्टिरु कुतार्थ शई डे अने तमारुं पूजन करवाई आ हाश कृतार्थ श्येला डे. हे जिनताथ ! तंमारां स्नात्र अर्चन विग्रेनो जे महोत्सव करवामां आवेदो डे ते चिरकाळना मारा मनोरथरुपी प्रासाद उपर कलशरुप शयेदो डे. हे जगद्वाष ! सांप्रतकाले पण हुं आ संसारनी प्रशंसा करं लुं कारणके जेमां मुकिना एक निवंधनरुप तमारुं दर्शन प्राप्त शयुं डे. हे देव ! स्वयंक्रूरमण समुद्रना उभिंडी गणी शकाय, पण मारा जेवा पुरुषो, अतिशयोना पात्र एवा तमारा गुणोने गणी शके नहि. धर्मरुपी मंदपना संस्करणा दृष्योत्तर करवामां सूर्यरुप अने दया

रुपी बेलाना आश्रयने साटे मोटा वृक्षरूप पवा हे जगतपति ! आ विघ्नी रक्खा करो.  
हे देव ! मुक्तिना वंध थयेला छारने उघारुवामां कुंचीरूप तमारी देशना पुण्यनंत प्रा-  
णीजीनाज सांचाळवासां आवे ले. हे चुवनेश्वर ! उडवला दर्पण जेवा मारा मनमां हमेशा  
प्रतिविवरूपे परेली तमारी मूर्त्ति मने मुक्तिना सुखना काणहूप आउ.

श्री सुमतिनाथजीनी रुत्ति.

हे जगतन् ! आ अशोक बृक्ष जमराडेना गुजारवशी जाए गातो होय, चखायमान  
पत्रोशी जाए नाचतो होय अनेते तमारा युणोमां रक्त थवाशी रक्त थयो होय एवो खुशी  
आतो देखाय ले. आ देवताडे जेउनां बंधन ( डीटां ) नीचां ले एवां पुष्योने योजन प्र-  
माण तमारी देशना छूमि उपर जानु प्रसाण वर्षावे ले. तमारो मालव कौशीकी प्रमुख  
ग्राम तथा रागशी पवित्र एवो जे दिव्यधनि थाय ले तेने मृगदारे पण हर्षवके उंची  
मीवा करीने पीए ले ( सांचले ले ). तमारी आगळ रहेली चंद्र जेवी उडवल आ चामर  
श्रेणी जाए तमारा मुख कमळनी सेवा करवाने आवेदी हंसनी पंक्ति होय तेवी शोजे  
ले. सिंहासन उपर बिराजी तमे उथारे देशना आपोबो ल्यारे मृगदारे सिंहनी सेवा

करवा जाए आवतां होय तेस ते देशना सां चलवाने आने ले. उयोहस्नाथी उयास एको  
रचन्द्रमा जेस चकोर पह्नीने हर्ष आपे ले तेस काँतिलेखी व्यास एवा तमे सर्वनी हुष्टिउने  
परस हर्ष आपो छो. हे विश्वपति ! तमारी आगळङ्ग आकाशमां ध्वनी करतो ऊँडुजि सर्व  
जगत्मां आह पुरुषोने विषे तमारा मोटा साझाड्यने जाणे बतावतो होय तेस जणाय  
रे. पुण्य समुद्दिउना क्रम जेवा अने त्राणुवत उपरना तमारा प्रौढ प्रशुपणाने बतावतां  
आ त्रण उन्हों तनारी उपर शोऱ्ही रह्यां छे. हे नाश ! आची तमारी चमत्कारी प्रातिहार्य  
लक्ष्मीने जोइने कथा मिथ्याहुष्टिपण आश्र्य न पासे ?

श्री पद्मप्रज्ञनी स्तुति.

हे देव ! आ अपार संसारहप महादेशमां संचार करता प्राणीउने चिरकाले अमृ-  
तनी परव तूद्य तमारुं दशन श्येद्दु ले. रुपश्री अनुपम एवा तमने अश्रांतपणे जोनारा  
देवताउना लेत्रोनी अनिमेषता कृतार्थ श्येली ले. तमारा जन्म वरवते नित्य अंधकारमां  
उद्योत श्यो तेमी नारकीउने पण सुख शयुं माटे तमारुं तीर्थकरपणुं कोने सुखरूप नयी ?  
हे नाश ! संसारीउना पुण्योश्रीज तमे धर्मरूपी वृक्षने दयारूप नीकना जलशी सिंचन

करीने वृद्धि प्रमाणो हो। हे प्रश्न ! जलना कीत्वपणानी। जेस त्रणजगतनुं स्वामीपणं अने  
त्रय झाननुं धारण करनापणं तमारे जन्मस्थीज सिद्ध अयेलुं हे। पद्मना जेवा वर्णवाला,  
पद्मना चिन्हवाला, पद्मना सुगंध जेवा मुख पवनने धरनारा, पद्मना जेवा मुखवाला,  
पद्मा (लङ्मी) ए युक्त अने पद्मना गृहरूप एवा हे प्रश्न ! तमे जय पामो। हे नाथ ! आ-  
पार अने उस्तर एवो आ संखारहयी सागर तमारा प्रसादथी हवे जानुप्रसाण शर्व  
जयो। हे स्वामी ! हवे हुं कदपांतरनुं साम्राज्य के अनुचर विमाननो निवास पण इष्टतो  
नष्टी, फक्त तमारा चरण कमलनी सेवानेज इहुं लं.

### श्री पद्मप्रसुजीनी स्तुति.

हे प्रश्न ! परिस्थोत्री सेवाने हणता अने उपसर्गोने विदारता पण तमे शमताने  
पामेला गो। अहा ! महान पुरुषोनी केवी विद्मता। हे नाथ ! तमे विरागी भर्ता मुक्तिने  
ओगवनारा गो, अने अद्वेषी उतां शत्रुउने हणनारा ठो, अहो ! महात्माउनो केवो लोक  
दुर्लभ महिमा भे ! हे देव ! तमे हमेशां जिगिया रहित गो अने अपराधथी जय पामो  
गो तथापि तमे त्रण जगतने जितेलुं हे। अहा ! मोटा पुरुषोनी केवी चातुरी ! हे नाथ !

कोईने तसे काँइ आएं न थी आमे कोईनी पासेथी काँइ सीधुं न थी तथा पि तमारे प्रश्न-  
पांगे हे. अहा ! चिद्वानोनी केवी चिच्छ कठा होय हे. हे प्रश्न ! जे सुकृत थी जाउंप देह  
ल्याग करीले दण मेलठांयुं न थी ते सुकृत, सुकृत संपादनसं भद्रासी एवा तमारा चरण  
धीढ उपर आलोटे हे, रागादिकमां क्षूर आने सर्व प्राणीड पर कृपालु तेथी जायंकर अने-  
मनोहर वने गुणवाळा एवा तमे सर्व साक्षात्य साधें ले, सोटामां मोटा अने महात्मा-  
उने पूजाचा योग्य एवा तमे अहो ! सारी स्तुति गोचर शयेला हो. हे स्वामि ! वीजाउमां  
जे सर्व रीते दोषो उते तमारामां गुणरूप हे. आ तमारी स्तुति जो मिथ्या होय तो ते  
विषे आ सकासदो प्रकाणरूप हे. हे जगत्पति ! तमारा चरणबुं मने वारंवार दर्शन आउ-  
एवीज हुं इला यालुं लुं. ते सिवाय सोहनी पण सारे इडा न थी।

थी सुपार्वनायजीनी स्तुति.

हे प्रश्न ! जेकुं स्वरूप अनिकेय हे एवा तमारे विषे अर्थवाद करवानो आयह जे-  
हुं धाकं लुं ते आदित्य मंदिरने ग्रहण करवाने कपिय फाल मार्या जेवुं हे; तथा पि हे पर-  
मेश्वर ! तमारा प्रजावशीज हुं तमारी स्तुति करीश कारण के चंद्रकांत मणि चंद्रनी का-

तिना प्रजानवशीज करे भे. हे प्रचु ! तमारा सर्व कदम्याणकोने आवसरे तमे नारकींने  
 पण सुख आपो ठो तो तिँच, नर अने, देवताउने सुख आपनारा तमे केम न थाउ ?  
 तमारा जन्मोत्सवने समये त्रण जगतमां जे उद्योत श्यो भे ते चविष्यमां उद्य पाम-  
 नारा केवलहानरूप सूर्यना अहणोदय भे एम जणाय भे. हे परमे श्वर ! जाणे तमारा प्र-  
 साडना संपर्कभी येली होय तेम आ सर्व दिशाउ हमणां प्रसन्न थयेली भे. हे पवित्र  
 आङ्कितिवाळा प्रचु ! हमणां आ पवनो पण सुखकारी वाय भे कारण के तमारा जेवा  
 सुखदायक प्रचु प्रगट थतां जगतमां प्रतिकृद वर्तनार कोण आय हे ? हे प्रचु ! अ मारा  
 ग्रमादने धिकार भे के जेने आपना जन्म समयनी खबर न परी अने आ अमारा आस  
 नोने धन्य भे के जेहेट चलायमान थइने तमारा जन्म कञ्चाणकनी अमने खबर जाणावी.  
 हे प्रचु ! नियाणु बांधुं ए निधिरु भे. तोपण तमारा दर्शनतुं फल मने तमारी जकि-  
 रुपज निरंतर थाउ, एबुं नियाणु हुं बांधु लुं.

श्री मुपार्वनायजीनी स्तुति.

सर्वचनकाशरूप कमलमां सूर्यसमान अने प्रथम अहंत एवा श्री जगवंत तमने

हुं नमस्कार करुं लुं हे प्रश्न ! हवे विश्वरुद्धुःख गयुं ऐ अने हृषी उत्पन्न अयो ले कारण  
के ली श्रीपरावर्तनश्री आ विश्व जाये परावृत्त अयुं होय तेमज जणाय ऐ. हे धर्मचक्री !  
ग्रामाशास्त्रात एवा तमारा वचनरूप रत्नदंकश्री आज निवाणरूप वैताळ्यगिरिं द्वार उच्च-  
करो. हे नाथ ! उद्भव एवा मेघनी जेम तमारुं दर्शन सर्व जीव लोकना संतापने ब्रेदवाशी  
हधने माटे थाय ऐ. अनंत झानवाळा हे न्नगवन् ! तमारी देशनानां वचनो, दरिंदी  
घणा काळे द्यन्य पासे तेम असे चिरकाले प्राप्त करीद्युं. प्रथम तमारा दर्शनश्री कृतार्थ  
येखा असे हवे अत्युक्तिवाळा अने मुक्तिना द्वारने प्रकाश करनारा तमारा देशनाव-  
चनश्री आजे विशेष कृतार्थ शद्द्युं. अनंतदर्शन, अनंतझान, अनंतवीर्य अनंत  
आनंदसय स्वरूपवाळा तेमज सर्व अतिशयोना पात्ररूप एवा तमने योगी स्वरूपने  
हुं नमस्कार करुं लुं. हे जगतपति ! आ दंदादिक पदवीनी प्राप्ति तो शुं मात्र ले केमके  
तमारी सेवाश्री तो तमारा जेवाज थवाय ऐ.

श्री चंद्रप्रकृजीनी स्तुति.

हे प्रश्न आकाशने आधार आपवानी बुद्धीश्री ऊचा पग करीने रहेनारा ईटोका

पढ़ी नी जेस आनंत गुणवाला एवा तमारी स्तुति करवाने हुं जे प्रवृत थयो हुं ते पंकि-  
तोने हास्यना स्थानरप लुं, तथापि तमारा प्रजावशी दयापक बुद्धिने प्राप्त थयेदो हुं  
तमारी स्तुति करवाने समर्थ शइश; कारण के एक देश मात्र वादवानो जाग पण पूर्व  
दिशाना पचनना संगमशी सर्व दिशाउमां नयापी जाय ने, हे प्रजु ! चानि प्राणीउप, जो चा  
मात्रशी अथवा ध्यान करवा मात्रशी तसे तेउना कर्मरूप पावाने ठेदवाने कोइ अपूर्व  
शस्त्ररूप थाले हो, सूर्यशी कमलोनो अशुद्ध थाय तेम विश्वना अंधकारने ठेदनारा  
एवा अहूर्व सूर्यरूप तमारा जन्मशी आजे जगतमां शुक्र कर्मनो शुद्ध थयेदो हुं, चंद्रना  
किरण मात्र पडवाई जेम शोफालिकाना पुष्प खरी पडे भे तेम लमारा दर्शन मात्रशी  
मारु अशुक्र पोतानुं फल आप्या सिनाय गढ़ी जये, विश्वने अन्नय आपनारु तमारु  
दीक्षाई स्वरूप तो एक तरफ हुं, पण हे जगवन ! तसे आ बाह्यावस्थानी मूर्तियी  
पण प्राणीउना छुःखने हरी दयो हो, वनना बुद्धोनुं उम्मूखन करवाने जेम उम्मात्तु गजेंद्र  
आवे तेम लमे संसार ले मूळ जेनुं एवा सर्व कर्मने ठेदवाने शाटे अहूर्व अवतर्या हों।  
जेम मुक्ताहाराद्विमारा हृदयनुं बाह्य आपूर्वण रे तेम नण जगतनापति एवा तमे

सारा हृदयम् आंतर आजुयण ते।

भ्रि चंद्रपश्चुजीनि स्तुति.

हे प्रचु ! सुर, असुर अनेते नरोप मरतक उपर धारण करेलुं ज्ञान लोकता चक्रवर्ती  
एवा तमां शासन आ जगतमां विजय पामे भे। हे जगवन् ! प्रथम ऋण ज्ञानने धारण  
करनारा, पठी मनःपर्यव ज्ञानने धरनारा अनेते अद्युना केवलज्ञानवाला एवा तमे  
अनेते दिनपरदिन अधिक जोवामां आठया हो। हे नाथ ! मार्गना हृष्टनी  
हायानी जेस विश्वने व्यपकार करनाहं तमाहं उज्ज्वल केवलज्ञान जय पामो। हे जगवन् !  
दयां सुधी सूर्योदय यथो नथी त्यां सुधीज अंधकार रहे ले, ज्यां सुधी केशरीसिंह  
आवतो नथी त्यां सुधीज गजेङ्को मदांध रहे ले, ज्यां सुधी कदपवृह प्राप अटुं नथी  
त्यां सुधीज दारिद्र रहे ले, ज्यां सुधी बुधिकारक मेघ शतो नथी त्यां सुधीज जलनी  
तंगाश रहे ले, अनेते ज्यां सुधी पूर्णचंद्र उगतो नथी त्यां सुधीज दिवसनो ताप रहे ले,  
तेम ज्यां सुधी तमे जोवामां आवेदा नथी त्यां सुधीज आ जगतमां कुबोध रहेलो ले।  
जे प्रणीत निष्प तमने ऊप ते अनेते सेवे भे तेलनी हृषी सर्व काल अनुमोदना कर्तुं ले।

हे प्रकु ! हालसाँ तमारा प्रसादथी तमारा दर्शनतुं फल—उत्तम सम्यक्तव मने यावळी-  
वित निश्चलपणे रहेवारूप आळू.

### श्री सुविधिनाथजीनी रुति.

धर्मरूपी हवेलीना हुडं स्तं चरूप, सम्यक क्लानरूपी आमृतता ऊहरूप अने जग-  
तने आनंद आपवासां मेघरूप एवा हे त्रिकुञ्चनपति ! तमे जय पासो. हे जगदीश ! त-  
मारा एक ऊदाज प्रकारना अतिशयने अमे छुं कहीए के जे तमारा महात्म्य गुणथी  
खरीद अयेवा आ ब्रण लोक तमारा दासपणाते पासेल हे, जेवी रीते तमारा दासप-  
णाथी हुं प्रकाशुं बुं—शोचुं लेनी रीते मारा इच्छाजयी पण हुं शोचतो नयी, कारण  
के चरणना करासां जरेलुं रल जेवुं शोचे हे तेवुं पर्वत उपर पढेलुं शोजतुं नयी. मोहे  
जयानी इड्डावाढा तमे वैजयंत विमात मोहदृष्ट्याननी नजीक छातो मोहने माटे चांतिमा  
सटकता एवा दोकोने मार्ग बतावचाने माटेज अहीं आवेला हो. आ जारतक्षेत्ररूप  
गृहना तमे घणा दर्शना एक देवता हो तेयी तमारा आवचायी ए गृहमां रहीने  
धर्म गृहस्थनी जेम आजे निःशंकपणे आनंद पासो. हे विश्वनाथ ! सर्व आ देवताभुजों

समूह तमारा अतिशायी रूपनी अंदर अवतारपणाने पासी जाय छे, अश्रुत ते सच्चर्तु रूप आपना रूपसां समाइ जाय छे. चंद्रनी उपोस्तना जेवी तमारी कांतिना पूरसां स्पृहा सहित दीन घयेलां असारां लोचनो आजे लांचे काले सारा नसीबने लीधे चकोर प-कीनुं आचरण करे ठे, वासगृहसां के सज्जासां वेसता एवा मारे सर्व अर्थनी सिङ्गने आपनारुं तमारा नामरूप मंत्रानुं स्मरण श्यां करो.

श्री सुविधनायजीनी स्तुति.

हे प्रभु ! तमे जो बीतराग छो तो तमारा हाथ पगमां राग केम हे ? तमे जो कुटि-दाताने ओमी दीधी छे तो तमारा केश कुटिल केम हे ? तमे प्रजाना गोप छो, तो तमारा हाथमां दंड केम नशी ? जो तमे निःसंग छो तो त्रैलोक्यना नाय केम कहेवाई हो ? जो तमे ममता रहित छो तो सर्व उपर शा माटे दयालु छो ? तमे जो अलंकार मात्रनो द्याग कयो छे तो तमने त्रण रहल (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) केम प्रीय हे ? जो तमे सर्वने आनुकूल छो तो मिथ्यादृष्टि उपर शा माटे द्वेष करो छो ? जो तमे स्वचाने सरल छो तो पूर्व उपरास्थपणे केम रह्या हता ? जो दयालु छो तो कामदेवनो केम निश्चह कयो ! जो

तसे निर्जय हो तो संसारशी केम जय पायो हो ? जो तसे भवेका करवामां तपर ढो तो विवना उपकारक केम हो ? जो अदीप गो तो जासंकलथी दीप केम हो ? जो तमे शांत रखजावी हो तो चिरकाल केम तपो हो ? जो रोष रहित हो तो कर्म उपर केम रोप राखो हो ? आ प्रमाणे जेहुं स्वरूप जाणी शकाहुं नभी जे मोटाधी पण मोटा ऐ अने जेने अनंत चतुष्पथ सिद्ध थयेद डे एवा तमो जगवंतने हुं नमहकार कहुं लुं.

### श्री श्रीतलनाथजीनी स्तुति.

हे प्रचु ! इद्वाकु कुलरूपी क्षीर समुद्रमां चंद्ररूप आने आ जगतनी महानिकानो नाश करवामां सूर्य समान एवा तमे अयवंत वर्तो. हे नाश ! तमने जोवाने, तमारी स्तुति करवाने अने तमारं पूजन करवाने माटे मारा शरीरमां अनंत नेत्रो, अनंत जिन्हाउ अने अनंत छुजाउ आय एवी हुं दहा राखुं लुं. दसमा तीर्थकर प्रचु ! तमारा चरणकमळमां में आ पुढपो स्थापन कर्या तेश्री हवे मने तेहुं फल संपादन अदृ चूकयुं छे. डुःखना तापथी पीडायेला दोकोने अंसद आनंद आपनारा एवा तमे आ मनुष्य दोकमां नवीन मेघनी जेस अवतरेला हो. वसंत ऋतुवहे बुद्धोनी जेस तमारा दर्शनशी

आजे सर्वं प्राणीं नहीन शोचावाला थे येदा हे. जे दिवसों तमारा दर्शनशी पवित्र हे तो ज मारे दिवसों हे वाकीना जे दिवसों हे तो मारी कृष्ण पक्षनी रात्रि जोवा हे. आत्मानी साथे नित्यपणे परोक्षायेदां पूर्वां प्राणीडुनां कुकमो आयस्कर्ति सणिश्ची लो-ढाती जेम तमारा दर्शनादिकशी आजे उदां पर्फी जाउ. आ लोकमां, हन्तरमां के बोजे गमे त्यां रहुं तोपख तमनेज हृदयमां वहन करनारो हुं तमारुं वाहन आउं एवी इच्छा राखुं लुं.

### श्री श्रीतलनाथजीकी स्तुति.

हे ऋण ऊवनोना पति ! जे पुरुषो तमारा चरणकमलना नखनी कांतिना जाखरुपी जखना प्रचाहर्यां इनान करी करीने पोताना आत्माने पवित्र करे हे तेजे धन्य हे. मूर्यशी जेम आकाश, दुंसयी जेम सरोवर अने राजाशी जेम नगर तेम तमाराशी आ लारत केत्र शोजे हे. सूर्यनो अस्त अने चंद्रना उदयना अंतरमां अंधकारशी जेम प्रकाश पराजय पामे हे तेम नवमा दशमा ले प्रचुना अंतरमां मिथ्यात्यशी धर्म पराचव पान्यो हे. विवेकरुपी लोचन वगरुं आ जगत अंध याइ जाए दिग्गमूळ श्रयुं होय तोम

सर्वं प्रकारे कुमागांमां प्रवर्त्तें थे। सर्वं होको ज्ञाति पासीने अधर्मते धर्म बुद्धियों, आदे-  
वने देन बुद्धियों, अने अगुरुने गुरु बुद्धियों ग्रहण करे थे। एकी रीते आ जगत् नरक-  
रूप खाकामां पक्षनाने जो चामां लैयार थयेहुं हहुं तेवामांज तेना पुण्योदयथी। खाजाविक  
दयाना समुद्र एका तमे अवतरेला गो, हे प्रश्न ! उयां सुधीं तमारुं वचनरूपी अमृत  
आ होकमां प्रसर्यु नथी लां सुधीज आ लोकमां मिथ्यात्वरूपी सर्वं चिरकाल समर्थ  
शद् प्रवर्त्तें थे, पण वातिकर्मना दयथी। जेस तमोने केवलङ्घान उत्पन्न श्रुतं ले तेस तमारा  
उपदेशयों आ जगतने मिथ्यात्वनो नाश थइने समकितनी प्राप्ति थरो.

श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तुति।

हे प्रश्न ! सर्वं कल्याणकोमां श्रेष्ठ तमारुं जन्म कल्याणक पवित्र जक्किवाला यत्रा  
मने कल्याणकारी आउ। हे ईश ! तमोने हुं केटहुं लात्र करावुं ? तमारुं केटहुं पूजन करुं ?  
अने तमारुं हुं केटहुं स्तवन करुं ? मने तमारुं आराधन करवामां तुसिज थती नयी। हे  
प्रश्न तमारा जेवा रक्षक थतां कुतीर्थकरूपी वयाघयी त्रास पामेहो आ धर्मरूपी वृषभ हवे  
आ जरन कोप्रमां स्वेहाघयी त्रिचरो, हे देवाधिदेव ! आजे सारे जागे मारा हृदयरूपी

मंदिरमां तमे निवास करी तेने सताथ कोई भै. जेही रीते तमारा चरण तखनां किरणो  
मारा द्विर आगल ब्रह्मसरक्षी जने आच्छणहृष आय भै तेबी रीते आ मुगट विगेरे  
आचूषणो थतां नथी. हे जिजगजाथ ! तमारा गुणेनी हुति करतां मने जे प्रसन्नता  
आय भै तेबी प्रसन्नता चारण चाटो मारी स्तुति करे हमारे घरी नथी. तमारी पासे  
क्रुमि उपर वेसतां जेबी मारी उडति आय भै तेबी उवति सौधर्मी अंदर सिंहासनपर  
वेसतां थती नथी. हे प्रक्षु ! तमारा जेवा स्वासीनी परांत्रतामां लांबो काळ रहेवाने जेम  
हुं इहुं दुं तेबीरीते मारा राज्यनी स्वतंत्रतामां रहेवाने हुं इहुतो नग्री.

श्री श्रेयांसनाथ्यजिल स्तुति.

हे परमे श्वर ! अंनंद आंनंदना जराने आपनारा अने मोहना कारणहृत एवा  
तमने मोहने अर्थे अमारो नमस्कार भै. तमारा दर्शन मात्रथीज प्राणी बीजां कमोने  
उली जह आत्मारामी आय भै तो तमारी देशना सांचल्याथी तो शुं न थाय ? आ  
संसारहृषी मरु देशमां तमारो आवतार शवाथी जाए द्वीर समुद्र प्रगट्यो होय, कद्य-  
वृक्ष उग्युं होय के मेघ वरस्यो होय तेम ऊणाव भै. क्रूरकर्मलुप नडारा ग्रहो वर्के पीका

पागना एवा आ विश्वानुं रक्षण करवा माटे तमे आपारमा जिनेक उयोति पयोता पति  
( चंड ) लैे उदय पास्या ठो, स्वजावधी ज निर्भक इहवाकु शाजाहेंकुं कुल जलचडे  
सफाउकनी लेप तमे अिषेष निर्भल करेंगुं ठे. हे प्रचु ! त्रषु जगतना सर्वे प्रकारना  
संशापने हरवायी तमारु चरणमूल समय प्रकारनी गायाउयी पण अधिक आय ठे. हे  
जिनेश्वर ! तमारा चरणकमलमां चमरलैपे रहेतां मने पटलो बधो हर्प प्राप्त आय ठे के  
जेयी छोगते साटे के लोकते माटे मने स्पृहा रहेती नयी. हे जगन्नाथ ! जबोचन तमारा  
चरणां लाले चारण यजो इन्हुं प्रार्थना कहंलुं तमारी सेवाकी ऊं साधी शकाहुं नयी.  
श्री बासपञ्चज्ञिन स्तुति.

हे नाथ ! चक्रवर्तीहुना चक्रायी, वासुदेवोना चक्रायी, इशानेहुना चिशुद्धायी, मारा  
वजायी, अनें दीजा इंद्रोना अस्त्रोधी, पण जे कमो दयारे पण जेदातां नयी ते कमो  
तमारा दर्शन मात्रयी चेदाइ जाय ठे. इहीर ससुद्धनी वेद्यायी, चंडादिकनी कांतिथी,  
मेघनी धाराउयी, शोशीर्वं चंद्रना लेपनथी, औने कल्द्युड्युचा घाटा उद्यानोधी, जे  
दुःखोनो चरिताप समी जतो नयी ते तमारा दर्शन मात्रयी तत्काल शांतिने पासी जाय

ले, अनेक प्रकारना बचायो (उकाला) थी, जात जातना चूणौथी, घणा प्रकारना ले-  
पोथी, अनेक प्रकारनी शास्त्रक्रियाशी तथा वहु रीतना संत्र प्रयोगोथी, जे रोगो ठेदाता  
नथी। ते रोगो तसारा दर्शन मात्रशी, तरत प्रदृश्यने पासी जाय ले। हे प्रश्न ! वधारे शु-  
क्षेपेहुं ? दुंकामां एटबुं कहेवाहुं ले के जे कांइ आ जगतमां असाध्य ले ते तसारा द-  
र्शन मात्रशी साध्य शइ जाय ले; माटे हे जगत्पति ! आ तसारा दर्शनहुं हुं ए फल  
इहुं लुं के बारंवार मने तसारुं दर्शन थाउं।

श्री वासुपुञ्यजिन स्तुति ॥

हे प्रश्न ! आ संसारहूपी अति चायंकर समुदमां एक तरफ मोहरुपी डुर्दिन प्रसरे  
ले, एक तरफ आशारुपी नवी वेळाले द्वाणे इष्टे अया करे ले, एक तरफ मोटा  
मधरना जेवो डुर्वार कासदेव रहेलो ले, एक तरफ प्रचंक ओले प्रतिकूल पवनना जेवा  
पापरुप निषयो प्रवर्त्ते ले, एक तरफ मोटा मोटा आवर्ती (जमरी) नी पेरे क्रोधादिक  
उग्र कषायो रहेला ले, एक तरफ मोटा खुककती जेवा जलकट रागडेष रहेला ले, एक  
तरफ मोटा भर्मितनी पेरे विविध डुःखोनी परंपरा ले, एक तरफ वरुचानलनी जेम

आनं तथा रौद्रध्यान थयां करे ले, एक तरफ वेत्रवृद्धीना जेवी सखदाना करनारी ममता रहेली रहे, अने एक तरफ उद्दत नकोना। समूहनी जेम धणा डया धिले आडया करे ले; तेथी हे प्रश्न ! एवा दारुण संसारहपि सागरनी अंदर परेला प्राणीउनो हवे आप उळार करो. हे जगतपति ! तसाहु केवळज्ञान अने केवळदर्शन बुद्धना पुण्य अने फळनी जेम परना उपकारने माटेज ले. आज मारो जन्म वेतव कुतार्थ थयो ले, कारण के जेथी तमारी पूजानो महोत्सव करवानो मने लाज प्राप्त थयो ले.

### श्री विमलनाथजिन स्तुति.

हे जगतपति ! चो तरफ प्रसरता मोहरूपी अंधकारथी अति कोप करनारा जटा-धारी, तापसरूपी निशाचरोथी बुद्धरूप सर्वखने हरतारा, चार्चाकहपी तस्करोथी माया-कपटमां धणा नियुण एवा ब्रह्मणहपि शियाळोथी मंकळी अईने फरता, कोलाचार्यहपी नाहरोथी अनेक प्रकारनी चेष्टा करता पालंकीरुप बुचक पक्कीउंगी, अने विवेकहप नेत्रने द्युस करनारा मिथ्यात्वरूपथी तथा सद्भूत पदार्थना सर्व प्रकारना अझानथी आ सप्तधणा काळथी रात्रिनी जे गो आ चरतदोऽन्नमां प्रवर्ततो हतो, तेमां आप जेवा

स्वामीरूप सृथनो उदय अतां अस्यारे प्रज्ञातकाळं अयेलो ऐ. नीचा स्थानमां जनारि  
आ संसारहृषी नदी के जे अत्यारसुधी नीचजनोए बहुंघन करी शकाणी नशी ते हवे  
तमारा चरणरूप सेतुने प्राप्त करी सुखे बहुंघन करवा योग्य थई ऐ. हुं धारुं दुं के जे  
जाग्यजनो तमारा ज्ञासनहृषी निश्रेणी उपर चड्या दे ते शोका काळमां उंचा लोकाम  
उपर पण पक्षी चुक्याज ऐ, ग्रीष्मकृतुना तापशी तपेला वटेमार्गुडने जेम वर्षादि प्राप्त  
आय तेम स्वामी चगरना एवा आमोने चीरकाळे तमे एक उत्तम स्वामी प्राप्त अयेला ठो.

### श्री विमलनाथजिन स्तुति.

हे देव ! वर्षीकाळना जल्थी पृथ्वीना कादवनी जेम तमारा दर्शनशी आ जग-  
तना प्राणीजितुं सांसारिक दुःख नाश पामर्युं ऐ. हे स्वामी ! तमारा दर्शनना कारणरूप  
आजनो दिवस घणो पवित्र दे के जेमां दुष्कर्मशी मलिन एवा असे निर्मल शशुं. अमारी  
हष्टिजेए शरीरना सर्वं अंगोमां राजापण्डं प्राप्त करेलुं हहुं, तेहेए आज तमारं दर्शन  
प्राप्त करी पोतानी बराबर चुक्कि करेली ऐ, तमारा चरणना संपर्कशी आ जरतहैत्रनी  
चूमि पवित्र अइ गइ दे तो तमारा दर्शन तेहुता पापते नाश करे तेमां शुं कहेवुं ? हे

प्रलु ! गूवक पक्कीउनी जेस मिल्याहिए बुलपोने तमालं दर्शन केवलहातरूप सूर्यना  
प्रकाशना अजावनुंज कारण थरो. तमारा दर्शनरूप अमृतपानबने जेमना जारीर  
उद्धास पामेलां रे एवा प्राणीउनां कर्मचंध आजे अववश्य तुटी जरो. चिवेकरूपी दर्पणने  
साफ करवामां तत्पर अनेकल्याण वृद्धना बीज जेवा तमारा चरणना। रजकणो आमोने  
पवित्र करो. हे द्वामि ! अमृतना गंदूष जेवा तमारां देशनावचनो संसाररूप मरुदेशमां  
मन थयेला अमोने स्वस्थ करवाने माटे आळे.

### श्री अनन्तनाथजिन स्तुति.

हे नाश ! जेउ तमारी आगल चूमिपर आलोटी पृथ्वीनी रजधी व्याप्त आय रे  
तेउने गोशीर्ष चंद्रननो अंगराग उर्बेज नथी. जेउ लकियमे एक पुण्य पण तमारा म-  
स्तकपर चारावेरे तेउ मस्तकपर उत्र धारण करीने निरंतर विचरे रे, तमारा अंग उपर  
जेउए एकवार पण अंगराग कर्यो होय तो तेउ देवदूष वल्लने धारण करनारा आय तेमा  
कांड पण दांका नथी. जेउ तमारा कंठ उपर एकवार पण पुष्पमाळा धरे रे तेउना कंठ  
उपर देवतानी ल्लीउनी ल्लुजलाल्ली वीटाइ वले रे. जेउ तमारा अति निर्मल गुणोनुं  
१५

पक्षवार पण वर्णन करे तेउ लोकमां अतिशयचान थेइ देवताउनी हीडुखी गचाय छे,  
 जेउ चाल चतुराइयी तमारी आगल तुल्यादिक चेप्टा करे छे तेउने ऐरावत हाश्चीना  
 संध ब्रह्म आसन मळ्हु ढुल्ज नशी। हे देव ! जेउ रात्रि दिवस तमारा परसातम  
 सवरूपदु ध्यान करे छे तेउ हमेशाँ आ लोकमां सर्वते ध्यान करवा घोष्य आय छे.  
 हे प्रश्न ! तमने ल्लात्र, अंगराग, नेपथ्य, ते आचूषण विग्रे धारण करावासाँ तमारा  
 प्रसाद्यी हमेशाँ मारो अधिकार रहे।

श्री श्यानंतनाथजिन स्तुति.

हे प्रश्न ! उयां सुधी तमे अधी श्वर अया नशी त्यां सुधीज प्राणीडना मनहूपी  
 धनते विचयरूप तस्करो चोरी शके छे, लोकेनी डृष्टें अंध करनारु अने विस्तार पामहुं  
 कोपरूपी अंधारु तमारा दर्शनरूप अमृतांजनशी छुर नाशी जाय छे, उयां सुधी अङ्ग  
 प्राणीड तमारा वचनरूप मंत्रते सांचलता नशी त्यां सुधीज तेमने मानहूपी चृत वल-  
 गया करे छे, तमारा प्रसाद्यी मायारूप वेस्ते तोझी सरबतारूप वाहनमाँ वेसनारा  
 प्राणीडते मुक्ति काँइ पण हुर नशी, जेम जेम प्राणीड निःस्फुहताशी तमारी उपासना

करे उन्हें तेस तमे तेसने उत्कृष्ट फल आपो गो, य मोहुं आश्र्य उे. आ संसार-  
रूपी सरिताना राग अने द्वेष ए वे प्रवाह भे, तेनी मध्यमां द्वीपनी जेवा मध्यस्थप-  
णामां तमारा शासननशी रहेवाय रे. मोहुकारमां प्रवेश करवाने उत्सुक मनवाला प्राणी।-  
उन्हें मोहुरूपी अंधकारमां तमे जो द्वीपकपुण्डि धारण करो ठो तेबुं वी जो कोइ धारण करतो  
नयी, माटे हे परमेश्वर ! अमारा उपर प्रसन्न आई के जेथी आमे विषय, कथाय, राग  
द्वेष अने मोहुद्विकथी अजित अद्दप.

### की धर्मनाथजिन स्तुति.

परस ध्यान करवा योग्य स्वरूपनवाला अने परस ध्यान करवारा एवा पञ्चरमा ती-  
थंकरने मारो नमस्कार रे. हे प्रश्न ! देव अने दानवथी हुं मनुष्योन्ति। मोटी महेन्द्रा माँडुं  
बुं, कारण के त्रण लोकने बंदन करवा योग्य एवा तमे मनुष्यपणामां प्रगट श्रेयला गो.  
हे नाश ! मोहुरूप साधनने साधी लेवा माटे तमालं शिव्यपुण्डि ग्रहण करवानी इच्छावाला  
एवा सने हमणां ज आ दक्षिण चारतवर्षमां मनुष्यपण्डि प्राप्त थाई. जे प्रमादीठें तमारा  
चरणतुं दर्शन अतुं नथी तेवा स्वर्गाऊं शुखी छतां पण तेसनामां अने नारकी जीवोमां

कांड पण चेद् नथी। हे प्रचु ! उयां सुधी सूर्यनी जेम तमारो उदय थयो नहतो त्यां  
सुधीन बुवद पङ्कीनी जेम कुतीर्थित्र बोली शकता हता, हवे वरसादथी सरोवरनी जेस  
तमारी धर्मदेशनारूप जातवदे आ जरतार्द थोकाळमां पूर्ण लाइ जारो. हे परमे श्वर !  
राजा जेम शाश्वता देशने मुक्त करी तेऊं राज्य तेने आपे तेम तमे अनंत प्राणीत्वने मुक्त  
करीने अचल सुख आपयो. हे जगवन् ! देवदोकमां पण चमरानी पेरे तमारा चरण  
कमळमां लीन थयेदा चितवक्ष मारा दिवसो निर्गमन आउ.

श्री धर्मनाथ जिन स्तुति.

जगतना तेजरूप, चकोर पढीने आनंद आपत्तामां चंद्ररूप अने मिथ्यात्वरूप  
अंधकारने दूर करतामां स्मृथरूप एवा हे जगत्पति धर्मनाथ ! तसे विजय पामो. हे  
नाथ ! तसे हर्षस्थपणे चिरकाळ रहा ते उतां उद्ध (कपट) रहित ठो अने अनंतदर्शन  
उतां अन्य दर्शनने वाध करनारा ठो. तमारी देशनारूप जलना पूरकी जेसनो आत्मा  
द्वाचित थयेदो हे ते प्राणीत्वनी कर्मनी मर्दीनता तत्काळ धोवाइ जाय ठे. जेकी रीते  
तमारा चरण मूलनी गायाथी प्राणीत्वना संताप शासी जाय ठे तेवी रीते मेघ अने हु-

झन। गायामां पण संताप शमतो नशी। हे प्रचु ! तमारा दर्शन करवाशी आयेला निः-  
संपद शारीरवाळां प्राणीर्ज जाणे कोतरेली पुतलीर्ज होय तेवां जाणाय ले. हे जगत्वांधु !  
आ त्रण जगत स्वचावादिनी केटलीक विलळताशी लुडुं लुडुं ले पण आजे तमारा प्रजा-  
वशी एकत्र मळी जइने वंधुरुपे थइ गयेलुं ले. आ त्रिलंक चरतदेवना मूळस्थानना  
देवताळुप हे प्रचु ! जेमने बीजुं कोइ शारण नशी एवा अमारी तमे रक्षा करो. हे जग-  
तपति ! अमे तमने वारंवार प्रायीप ठीए के हमेशां तमारा चरणकमळमां अमारुं मन  
अमरनी चेष्टा करो.

### श्री शांतिनाथजीनी स्तुति.

हे जगवन् ! विश्वजनना हितकारी, अदृश्यत समुद्रिद्वाडा अने आ संसाररूप  
मरुदेशाना मार्गमां डायावाळा वृक्क जेवा तमोने नमळकार ले. हे परमेश्वर ! आजे सारे  
आये तसालं दर्शन शवाशी मारे पूर्वसंचित पापरूप रात्रिनो प्रजात समय शयो ले. हे  
जगतपति ! जेनावडे तमारां दर्शन शयां ते नेत्रने धन्य हे अने लेनावडे तमारो सपरी  
शयो ते हाथने ते करतां विशेष धन्य ले. हे प्रचु ! कोइवार तमे विद्याधरोना। मोटी

कह दिलाया चक्रवर्ती थया हो, कोइचार उत्कुष्ट बलदेव थया हो, कोइचार  
अच्छुतेंद्र थया हो, कोइचार महाइकानी चक्रवर्ती थया हो, कोइचार ऐवेयकना आचुष्पण  
चूत अहमिंद्र थया हो, कोइचार महासत्त्व शान् अने अवधिङ्गानी थया हो, अने कोई  
चार सत्त्वार्थसिद्ध विमानना अंकाररूप अहमिंद्र थया हो, हे परमे श्वर ! कया कया ज-  
नमां तमे उत्कुष्ट नशी थया. ऐवटे आजे तिर्थ करना जन्मथी तमारा वर्णननी वाणी  
परिपूर्ण आइ गइ ठे. तमारा गुणनुं वर्णन करनाने हुं सतर्थ नशी तेशी मात्र हुं मारोज  
स्वार्थ कही वताउं दुं के हे नाश ! प्रत्येक जनने विषे तमारा चरण कमळमां मारी पूर्ण  
जकि हजा.

श्री लांतिनाथजीनी इति.

हे जगत्पति ! दिनना भत्सने करनार ह्लान सूर्यहृप तमारा उदयमी आजे  
जगत्नो कहयाणदशामां प्रवेश थयो ठे. हे अगदूरु अमारा जेवने पूर्व पुण्यना योग-  
श्रीज कहयाण प्राप्तिना चिंतामणीहृप तमारा कहयाणकना उत्सवो प्राप्त थाय ठे. हे  
जगद्वाप ! तमारा दर्शनरूप जखना तरंगो सर्व प्राणी उत्ता कवायादि, मल्लथी जरेला

मनने थोड़ नाले हे. कर्मने ठेदवाने मोटो यह करी तमे जे पूर्वे तिथंकर नामकर्म उपर्युक्त तेज तमार्ह निःस्वार्थ परोपकारीपतु हे. आ जगतमां घोर संसारथी जय पासेवा प्राणीठने तमार्ह आ समोसरण मोटा किल्वानी पेंडे शरणरूप हे. हे प्रचु ! तमो सर्व जीवोना सर्वजाति जाणो हो अने सदा हितकारी गो तेथी तमारी पासे कांड पण प्रार्थना करवानी जहर नशी. तथापि एटली प्रार्थना करु छुं के जेम तमे पृथ्वीमां निहार करी गाम, आकर, अने नगर विग्रेने काणे काणे ठोकी योगो तेम कोइ वखत पण मारा हृदयने ठोक्यो नहि. अने हे जगवन् ! तमारा प्रतार्दथी निरंतर तमारा चरण कमळमां सारु चित्त चमररूप अयेलु रहे एकी रीते मारो सर्व काळ निर्ममन थजो.

### अभि कुंथनाथजीनी रत्नति.

हे जगतपति ! आजे हीरसागर प्रमुख जळाशयोनां जळ, पद्म विग्रे ऊहोनां जळ अने कमळो, कुट हिमादय विग्रे पर्वतोनी औषधीर्ड, जळशाळ प्रमुख वनना युपो अने मलयाचदती आसपासनी चूमिनां चंदन ए सर्वे तमारा स्नात्रमां उपयोगी वार्षी कृतार्थ थयां हे. अने हे देव ! तमारा जन्म कहूपाणकनो महोत्सव करवाची आ

वथा देवताओं और बृह्य पण कुतार्ह अर्थु भे, तमारा निंवश्चि। अदंकृत श्रेष्ठो आ मेरु-  
गिरि आजे तमारा प्रासाडनो जेस सर्व पर्वतोमां भवकृष्ट अने तीर्थल्प श्रेष्ठो भे. हे त्रु-  
नेवर ! तमारा दर्शनश्चि अने इपर्दीयी आजे नेत्र अने हाय खरेखरा नेत्र अने हाश  
यथा भे. हे नाश ! आजे मारुं ल्वाजाविक अवधिङ्गान पण सफळ अयेलुं भे के जेनावमे  
हे यज्ञ ! तमारो जन्म जाणीने असे जन्मोत्सव कर्यो भे. हे प्रज्ञ ! जेम हमणां ल्वाजाकाले  
तमे मारा हृष्टशपर रहा हता तोम हृष्टद्यनी. अंदर पण चिरकाळ रहो.

श्री कुंश्यनाथजीनी स्तुति.

चतुर्विंश धर्मलो उपदेश करनार, चार शारीरकाळा, चार मुखवाळा अने चोआ  
पुरुषाश्च (मोहन) ना स्वाभि पृना तमारी अने हतुति करीए ठीए. हे जगदीश्वर ! तमे  
निःसंगपणाश्चि चौद शहरलोनो ल्वाग करी त्रण निर्दोष रहोने धारण करो भो. हे नाश !  
तमे आला निश्चना मनने हरो भो ते उत्तां तमे मनरहित भो, अते उत्तम सुवर्णना जेवा  
उपर्यवाळा उत्तां चंडना जेलुं शीतल तमारा स्वरुपनुं ध्यान आय भे. हे प्रज्ञ ! तमे निःसंग  
हतां मोटी झूँढिवाळा भो, ध्यान करवा योग्य उत्तां ध्याता भो, कोटि देवोयी वीटायला

उताँ कैवलयोनेज जाऊँ ओ, पौते वितराग उताँ विश्वनों तमारापर राग वधारो ओ अने  
आकिंचन उताँ जगत्ने परस समुद्रिने माटे थाउँ ओ. हे अहं ! जेनो प्रज्ञाव जाणी श-  
कातो नथी अने लेनुं रूप कल्पवामा आवत्तु नथी एवा आप दशालु सचरमा चगवत्ने  
आसारो नसस्कार ले. हे विच्छु ! तमने प्रणाम करवो ते पण मनुष्योने अचिंल चिंतामणी  
रूप थाय ले तो समारु मनथी, ध्यानथी अने, वचनथी स्तवन करतां चुं न आय ? हे प्रलु !  
तमारा स्तवनमां, प्रणाममां, ध्यानमां, अने तमाराज विषयमां मारी प्रवृत्ति सदा रहो-  
कीजा मनोहर पदाशोनी असारे काँई जरुर नथी.

श्री अरनाथजीनी स्मृति.

आढार दोषरहित अने अडार प्रकारना बहा चर्यने धारण करनाया पुरबोने द्यान  
करवा योग्य एवा अडारमा तीर्थकरने मारो नमस्कार आरु. हे तीर्थनाथ ! जेवी रीते  
तमे गर्जमांशीज त्रण झान धारण करो ओ, तेवी रीतेज आ त्रण जगत्ने पण धारण  
करो ओ. हे स्खामि ! राग देवेषादि तस्करो—मोहरूप अवस्थापिनी निदा मुकीने आ त्रण  
जगत्ने दांचा चखताथी ढुंटी ले भे माटे हवे सत्त्वर तेनी रहा करो. हे नाश ! जेम श्रांत

यह गये दाउं रथने, तुल्णानुरी नदीने, तापशी तपेलाउं हुक्कानी वायाने, चुबी जताउं वाहाणने, रोगीउं औपथने, अंध कारथी अंध थयेखाउं दीपकने, हिमथी दीफित थयेलाउं सूर्यने, भार्ग घूली गयेदाउं जोसीआने, अनें दयावथी जय पासेखाउं अग्निने ग्राह करे तेम अनाशपणने द्वीधे घणा काठथी विधुर अह गयेदा अमोए अल्हारे तमारा जेवा तीर्थपति नाशने प्रात करेझा रे. तमारा जेवा स्वामीने ग्रास करी आ सुर, असुर अने मनुष्यो हर्षथी न समाता होय तेम पोत पोताना स्थानथी अहीं आवे रे. हेनाश ! हुं तमारी पासे बीजुं काँइ पण मात्र एट्टुंज माणुं ढुं के तसे जावो जन मारा नाथ थजो.

### श्री अरनाथजीनी स्तुति.

ऋचनता अधीश, सर्व विश्वपर वासद्वय जावना धरनार, करुणाना सागर आने अतिशयोथी शोन्नित एवा है प्रशु ! जय पासी. हे नाश ! जेम निकारण जगतना उपकारने माटे सूर्य पोताना सकल कीरणोथी विश्वने प्रकाश करे रे, जेम थंड पोतानी उपोत्त्वाशी विश्वनो संताप हरे रे, जेम वर्षाक्षहुं सेवना जदथी जीवन आपे

न्नि श्री महित्रिनाथ जिन स्तुति।  
न्नि श्री महित्रिनाथ जिन स्तुति। तीर्थ करने हुं नम-  
स्कार करं लुं. हे नाथ ! सारे जाये तमारा दर्शन श्री हुं चिरकाले पण अनुप्रहीत शरों  
लुं, केमके साधारण पुण्यथी अर्हतप्रशुतुं साहात दर्शन अंतुं नशी. हे देव ! आजे त-  
मारा जन्मोत्सवना दर्शन श्री देवतालुं देवतन सकल श्रुतुं ब्रह्म एक तरफ अच्छुत इन्द्रनी

ठे, जेम वायु पोतानी निरंतरनी गतियो जगतने आ श्वासन करे ठे, तेवी रीते निकारण  
पण द्योकना उपकारने माटेज तमारी प्रवृत्ति जय पासे ठे. हे स्वामि ! जे आ जगत  
आव्यार सुधी अंधकारसय आने अंध अद् रुं हुं, ते तमाराशी हवे प्रकाशसय आने  
तेत्रवालुं अग्रेलुं ठे. हे नाथ ! हवेयो नरकनो मार्ग खीलाइ जाये, तिर्यच योनिमां पण  
योकी गति प्रवर्त्तये, स्वर्गद्योक एक सीमादाना वीजा गामका जेंतुं थरे, आने सुकिं  
ने घणी ढूर ठे ते पण नर्जीक थरे. हे प्रज्ञो ! विश्वता उपकारने माटे तमे विहार क-  
रता प्राणीउने आसंनवित कहव्याण पण शुं शुं प्राप्त नहीं आय ? अर्थात् सर्व कहव्याण  
प्राप्त थरे.

उपर अनें वीजीं तरक अन्य प्राणीउनीं उपर समान अनुग्रह करवानी बुद्धिनाला है  
 प्रबृ ! संसारमां परकता एवा अमालं रक्षण करो, पृथ्वीना सुवर्ण मुगट जेवा आ तमे  
 इंद्र नीलमणिनी जेम अतिशय शोको ठो, इहा कर्या वागर मात्र स्मरण करवाची पण  
 तमे मोहने माटे याँ ठो तो दर्शन अने सुनि करीने तमारी पासे तेथी अधिक फळ  
 ऊं सागीए? एक तरफ वधा धर्मकायो अने एक तरफ तमाहं दर्शन ते वज्रेनी फळ  
 प्राप्ति तरफ जोता, तमाहं दर्शन अधिक फळ प्राप्तिना साधनरूप जणाय ठे, तसारा  
 चरणकमळमां आलोटतां जेबुं सुख मने आय ठे तेबुं सुख इंद्रपणामां, आहमिंद्रपणामां  
 के मोहमां पण मने अतुं नशी, एम हुं सानुं भुं.

### श्री महाद्वानायुजीनी स्तुति.

हे अईन ! जेउ सारे जागे तमारा चरणमां नमे ठे तेलना खलाट उपर जे तमारा  
 चरण नक्षनां कीरणो पके ठे, ते आ चायंकर चवग्री चय पामेला ज्ञाणीठने रक्षाना ति-  
 लक जेवा आय ठे, हे प्रभु ! तमे जन्मस्यो ब्रह्म चारी होवा प्री तमारे दी होा पण जन्मथीज  
 ठे अने तेशी तमारो वधो जन्म वतपर्यायमां न ठे, एम हुं सानुं भुं. हे नाथ ! उयां त-

मानु दर्शन न थी ते धर इया कामाउं ले, अते तमारा दर्शन थी पवित्र एवं आ वधुं जूमि  
तळ कट्टियाण्ठलप ले. हे प्रक्षु ! आ संसारहृप शान्तुर्थी ज्ञय पासेदा मनुद्य, देव अने तिर्थच  
प्राणीउने तमाहं समोसरण एक शरण आपत्तार किद्वाघृत ले तमारा चरणमां प्रणाम कर्या  
स्त्रियता बीजा जे काँइ कर्मो भे ते सर्व कुक नो ले, जे उ आ संसारनी दियतिना कारण  
एवं कर्मोने प्रसठयांज करे ले. तमारा ध्यान चिना जे बीजां ध्यान ले ते सर्व दुर्धन ले,  
जेनाश्री पोताना तंतुर्थी करोळीयानी जेन पोतानो आहमाज बंधाय ले, तमारा युष्णनी  
कश्चा चिना जे कथा भे ते सर्व छुट्ट कश्चा ले, जेनाश्री वाणीचमे तित्तर पह्फीनी जेम प्राणी  
विपत्तिने पासे ले. हे जगद्गुरु ! तमारा चरणकमळनी सेवाना प्रजावशी आ संसारनो  
उडेह आउ अश्रवा जावे ज्ञावे तमारी ज्ञक्ति थया करो.

श्री मुनिसबतनायजीनी स्तुति.

हे प्रक्षु ! त्रमर्हपी असोए आजे आ अवसर्पिणी काळकृप सरोनरमां कमळ जेवा  
तमोने सारा ज्ञाये घणे काळे प्रास कर्या ले. हे देव ! अल्यारे तमारा हतोवर्धी, ध्यानश्री,  
अने पूजादिकथ्री अमारां वाणी, मन, अने शरीरे कल्याणकारी फल मे कल्यु ले. हे

ताथ ! जेस तमारि विध मारी बक्कि निरोष विशेष आय दें तेस तेस मारां पूर्वकमो  
बहु लघु थतां जाय भे. हे दवामि ! महा पुण्यनुं कारण एडुं तमालं दर्शन जो असने त  
अयुं होत तो अमो के जे अविरत ढीए तेसनो जन्म अधो निरर्थक अद्व जात. हे पञ्च !  
तमारा अंगना स्पर्शाशी, तमारी इतुति करवाशी, निर्माला सुंधवाशी, तमारा दर्शनशी,  
अने तमारा गुणगान सांचलवाशी, अमारी पांचे इंद्रियो कृतार्थ आद गद्द हे. वर्षांकहुना  
मेघनी जेस नेत्रने आनंद आपलार अने नीलरळ जेंकी कांतिवाळा तमारावके आ नेहु-  
गिरिनुं शिखर शोळे भे. जो के तमे मात्र जारतवर्षमां रह्या ठो ते डतां सर्व ठेकाणे उपास  
यायेला जणाऊ ठो, केसके सर्व रथानके रहेला प्राणीडना जावनी पीकानो तमे नाश करो  
ठो. अहिंशी उपवनकाळे पण सने तमारा चरणनुं इमरण अजो कारण के, पूर्व जन्मना  
संस्कारशी जावांतरमां पण ते (इमरण) ज सने शयां करे.

श्री मनिसवतनाथजीनी स्तुति.

हे जगदपति ! जे तमारा गुणोनुं वर्णन करवाने अमारा जेवा पण तैयार आय ठे ते  
तमारा चरण दर्शननोज प्रजाव ठे. हे परमेश्वर ! देशना समयमां शास्त्ररूप वत्सने प्र-

श्री नमिनाथजिन स्तुति।

हे परमेश्वर ! मोहा मार्गना कहेनार, सर्व कर्मों संहार करनार, अनेक कथायो

सब आपतारि तमारी बाणीरुय गायत्रे अमे चंदन कंरिद लीए. जैम चीकणा पदा र्हना  
योगअर्थी पात्र पण चीकणु थाय ठे तेम तमारा युणने अहण करनारी शाष्ट्रस पण तत्काळ  
गुणी शहू जाय ठे. जेउ अन्य कर्मनो लाग करी तमारी देशना साँतके ठे तेउ क्षण-  
वारमां पूर्वकमोनि पण लाग करे ठे. हे देव ! तमारा नामख्य रक्ता मंत्रथी संचारित  
यएला आ जागतने हवे पठी पापहृष पिशाच वलगी शाकरो नहीं. हे नाथ ! विश्वने अ-  
चय आपनार एधा तसे विद्यमान ठतां हवे कोईने काँड पण जय नयी, पण ऊयारे अमे  
आपारा इथानां जइकुं ल्यारे तमारो वियोग थरो ते अमने जय ठे. हे र्हामि ! तमारी  
पासे सा श्रुत वैरथी अंध अयेला। बहिरंग शत्रुघ्नि जाय ठे एम नहीं पण  
अंतरंग शत्रुघ्नि जे काम क्रोधादि ठे ते पण शामी जाय ठे. हे गङ्ग ! तमारा नामनी स्फुलि  
के जे आ लोक अने परबोकना वाँ छित मनोरथने आपवासां कामधेनु तुदय ठे ते हुं गमे  
तयां रहुं तोपण मने ब्राह्म श्रया करजो।

ते प्रहार करनार, एवा तसे जय पासो। हे जगद्गुह ! कुमरने दाउनार, जालने दौरनार  
(नायक) अने सद्वोधने प्रचत्तीवनार एवा तमने नपहकार कहं दुँ. सर्व विश्वने हे श्वर्ण  
ते आपनार, विश्वना पापनो तिरस्कार करनार, अनिकारी अने उपकारी एवा तमाराथी  
आ चाँदुं जगत सनाथ दे, धर्मना बीजने वाचनार, अतिशय संपत्तिने धरनार अने शुन  
संधना रचनार एवा तमने नमहकार छे. कुमारांशी निवृत करनार, मुक्ति सार्गने वाचा-  
वनार, अने सर्वने उपदेश करनार, एवा तमाराची हवे धर्मनी भवननि अरो। नवीन  
तीर्थनी प्रतिष्ठा करनार, तप संपत्तिने आचरनार, अने जगत्तुना अधिग्राता एवा त-  
मारा असे किंकर ठीए। हे त्रैशोक्यशरण षड्छु ! नोऽकु सुखने आपनार अने वि-  
श्वने अतय देवार एवा तमारे शरणे दुँ प्राप्त अगो दुँ. हे जगद्गति ! जेंआ तमे आ च-  
वमां मारा स्वामि अया हो, तेंवी रिते ज्ञांतरमां पण प्रारा हयानि थारु। ए सिवाय वीजो  
काँइ मनोरथ नकी।

श्री नमिनाथजिन स्तुति.

हे प्रचु ! तो केवलज्ञानरूप नेत्रशी आ चधा जगतने जुरु लो जेशी चण नेत्रवाला

तमने नमस्कार दें। पांचीरा अतिशय सहित वचनवालों अने चौबीरा अतिशय गाठा परमेष्टि स्वरूप तमने नमस्कार दें। हे नाथ ! मालव कौषिकी डे मुकुल जेसां एवा याम अने रागश्री सनोहर अने सर्व जाधाने अनुसरनारी तमारी वाणीनी असे भवासना करीए ठीए, ग़रुना दर्केन्द्री जेम ढड़ एवा पण नागपाता तुटी जाय लेप तमारा दर्शनी प्राणीठना हड़ कर्मपाता पण तुटी जाय दें। तमारा दर्शनश्री प्राणीदु जाणे मोक्षनी निःशेषी होय तेवी युणवाणी श्रेष्ठीपर शनैः शनैः चक्षे छे। हे द्वामि ! सांन-केला, संज्ञारेला, स्तुति करेला, ध्यान करेला, जोधेला, ल्यरेला, आने नमस्कार करेला, तमे जे ते प्रकारे सुखने साटेज थाउ डो। हे द्वामि ! आमारा युर्जना पुष्यातुवंकी पुष्यज डे के जेथी आसाधारण सुख आपनारा तमे आजे दृष्टिगोचर आया डो। हे नाम ! अनामा रुचं रात्र बिगेरे सुखनु गमे तेम जाले थाउ तमारी देशतानी वाणी कर्दी पण अमारा हृदयमांथी जरो नहि।

श्री नेमिनाथजिन स्तुति.

हे मोक्षगामी अने शिवादेवीनी कुक्षिल शुक्तिमां सुक्तामणि समान प्रदु ! तमे

हुई जगद्वाय ! सर्वं विश्वना उपकारी, जन्मस्थी ब्रह्मचारी, दृयाचीर अने रक्षक एवा  
श्वे नेमिनाथ्यजिन स्तुति.

कटव्याणना एक स्थानरूप अने कटव्याणना करनारा ठो. जे मनो समिपेज माओका रहेलु ढे  
एवा, समस्त वस्तुर्डे जेमने प्रगाट श्रेष्ठे एवा आने विविध प्रकारना कहुद्दिना निधानरूप  
चाचीसमा तीर्थकर ! तमने नमस्कार आउ. तमे चरम देहधारी जगद्गुरु ठो, तमारा ज-  
नमयी हरिनंश अने आ चरत हौवनी छूमि पण पवित्र अङ ठे. हे निजगद्गुरु ! तमेज  
कृपाना एक आधार ठो, वहु स्वरूपना एक स्थान ठो, अने ऐ श्वर्यना अद्वितीय आश्रय  
ठो. हे जगत्पति ! तमारा दर्शने करीनेज अति महिमावदे प्राणी उत्ता मोहनो विघ्वंस  
श्रवाकी आपनु देशना कर्म सिद्ध आप ठे. हरिवंशमां अरु युक्ताफल समान हे प्रबु !  
तमे कारण चिना जाता, हेतु चिना चत्सद्य अने निमित्त चिना जातो ठो. अत्यरे अपराजित  
निमान करतां पण चरतहून उत्तम ठे, कारण के तेसां लोकोना सुखने माटे वोधिना आप-  
नार एवा आप अवतार्या ठो. हे जगबंत ! तमारा चरण निरंतर मारा मानतने विषे हंस-  
पणाने जजो अने मारी चाणी तारा गुणनी स्त ता करवा वरे चरितार्थ (सफळ) आउ.

तमने अमारो नमस्कार के। हे स्वामि ! चोपन दिवसे शुक्रवानश्री तमे धातीकर्षने घात कर्या ते जाय योगे घुण्ज साहं शयुं रे। हे नाथ ! तमे केवल यहु कुलनेज शोजाहुं रे एम तथी पण केवल क्वानता आलोकश्री सूर्यरूप एवा तमे बैलोक्यने पण शोजाहुं रे। हे प्रभु ! आ संसारसागर के जे अपार अने अथाग भे ते तमारा प्रसादश्री गो-ठण मात्र उंको अने गायनां पगदां मात्रज विस्तारवालो थइ जाय रे। हे नाथ ! सर्वं हृदय ललनाईना ललित चरित्रश्री चेदाय भे पण आ जगतमां तमे एकज तेनाथी असेद्य अने वज्रना जेवा हृदयवाना गो, बीजुं कोइ तेवुं नाथी। हे प्रभु ! तमने बत लेवामां निषेध करनारी जे बंधुउनी वाणी शइ हती ते अत्यरि तमारी आ समृद्ध जो-वाश्री पश्चातापते माटे शाय रे, ते बखते डुरायही बंधु वर्गश्री अमारा जाग्यबळेज तमे सखलित शया नहि ते बहु साहं शयुं, हवे जगतना पुण्यश्री जेने अस्त्रलित केवल इन उत्पन्न शयेवुं रे एवा तमे अमारी रहा करो। हे देव ! उधां ल्यां रहे ना अने जेस तेम करता एवा पण मारा हृदयमां तमे रहेजो। बीजानी मारे काँइ जरुर नाथी।

श्री पार्वती जनन स्तुति.

प्रीयं गुहकृती जेवा नील वर्ण शाला, जगतना। प्रियता हेतु ऋतु आने ठुस्तर संसार-  
रुप सागरसां सेतुरुप एवा तमने हुं नमस्कार करुं छुं। झानलृपी रखना कोशा (जंमार-  
रुप) चिकित्सित कर्मङ जेवी कांतिजाऊ अने चांदश्य शाणीरुप कर्मलमां सुर्य जेवा हे  
यागचंत ! हुं आपने नमस्कार करुं छुं। फलदायक एवा एक हृजारने आठ नर लहडाएने  
धारण करनारा आने कर्मरुप अंधकारनो नाश करवामां चंड जेवा तमने मारो नमस्कार  
गे। तण जगतमां पवित्र, झानादि रहत्रय धारण करनार, कर्मरुप इथलते खोदवामां  
खनित्र समान आने श्रेष्ठ चरीत्रना धारक एवा तमने मारो नमस्कार गे। सर्व अतिशयता  
पात्र अति दशावान आने सर्व संपत्तिना कारण ऋतु एवा हे परमात्मा तमने मारो नम-  
स्कार गे। कषायने दूर करनार, करुणाता ढीरसागर अने राग द्वेषशी विमुक्त एवा हे  
मोहङ्गामी प्रजु ! तमने मारो नमस्कार गे, हे प्रजु ! जो तमारा चरणनी सेवानुं फल होय  
तो ते फलनके तमारी उपर चेवेजावमां मने जक्किजान प्राप्त थजो।

## श्री पार्वतीर्थजन इति.

हे प्रञ्जु ! सर्वत्र बूत, चवित्र अने वर्तमानकालना जावते प्रकाश करनालं तमारं  
आ केवलहात अप पाने ले. आ अपार संसाररूप समुद्रमां प्राणीउने वहाएरूप तमे  
लो अने निर्यामक पण तयेज लो. हे जगत्पति ! आजनो दिवस आमारे सर्व दिवसोमां  
राजा जेको ले, करण केजेलां आमारे तमारा चरण दर्शननो महोत्सव प्राप्त यायेल ले, आ  
अङ्गानरूप अंधकार के जे सतुहयोनी विवेक उष्टुप्तारं भे ते तमारा दर्शनरूप औं  
षधीना इस विना निवृत अतुं नवी, आ महोत्सव नदीना नवा आरानी जेम प्राणीउने  
आ संसारमांथी पार उत्तरज्ञाने एक नवा तीर्थ (आरा) रूप ले, अनंत चतुष्पृथक्ने—सिद्ध  
करनारा, सर्व अतिशयोश्री लोकनारा, उदासीपक्षामां रहेनारा, अने तदा प्रसन्न एवा  
तमने नमस्कार ले. प्रथेक उन्मयां अलंत उपद्रव करनार एवा उरात्मा मेघमाळी उ-  
पर तमे कहणा करी हहसी याउं तमारी कहणा क्यां लव्ही ? (अर्थात् सर्वत्र ले) हे प्रञ्जु !  
ज्यां हाँ रहेता अने गते ह्यां जाता एवा लने हमेशा आपनिने निवारनार एवुं तमारा  
चरणकमळसुं सप्तरथ्य हजो.

३७) महाकीर्णिन इति.

अङ्गत जगते, स्वयं तु द्वा, चिधाता, अने पुरुषोमां उत्तम एवा आदिकार तीर्थकर  
कृप तमने हुं नमस्कार करु लुं. लोकमां प्रदीपरुप, लोकते प्रयोत्तना करनारा, लोकमां  
उत्तम लोहना अधीय अने लोकना हितकारी एवा तमने हुं नमुं लुं. पुरुषोमां श्रेष्ठ  
पुंरुरीक कशलल्प सुहना आपत्तावाल्ला, पुरुषोमां सिंह समान अने पुरुषोमां सदगंधी  
गजेंकरुप एवा तमने नमस्कार शाहु. चकुते अने अचयने आपनारा बोधिद्यायक, सागद-  
शाक, धर्मद्वायक, धर्मदेशक अने शरणदायक एवा तमने हुं नमुं लुं. धर्मना सारणि,  
धर्मना नेता, धर्मना चक्रवर्ती, ठज्ञाद्यपणाने निवृत करनार अने सम्यक् इतनदर्शन  
धारी एवा तमने नमस्कार शाहु. जिन अने जापक, तरेला अने तारतार, कर्मशी मुक्त अने  
सुकावनार तथा तु अने दोध करनार एवा तमने हुं तमुं लुं. सर्वहु, सर्वदर्शी, सर्व  
आतिशयना पात्र अने आठ कर्मनो नाश करनार एवा हे हजामी ! तमने नमस्कार शाहु.  
द्वेष, पात्र, तीर्थ, परमात्मा, स्थाद्वादवादी, वीतरण अने मुनि एवा तमने नमस्कार  
शाहु. पूजयोना पण पूजय, सोहोटायी पण मोटा, आचार्योना पण आचार्य अने उपेष्टा पण

हे प्रचु ! दावएयदी पवित्र शारीरवाक्ता अने तेजने अप्रतांजनहृप एवा तमारे  
श्री महावीरनिन स्तति.

न्येष्ट एवा तमने नमस्कार आउ। विश्वने उत्पन्न करनार, योगीउना नाश आने योगी, पवित्र  
करनार अने पवित्र, अनुत्तर अने उत्तर एवा तमने नमस्कार आउ, पापतुं प्रकालन करनार,  
योगाचार्य जेताथी कोइ वीजुं विशेष उत्तम नशी एवा आय, वाचस्पति अने मंगलहृप  
तमने नमस्कार आउ। सर्व तरफशी उदित श्येदा एक वीर सूर्यहृप अने उंचु छूर्छूवःस्तः  
ए वाणीथी द्युति करवा योग्य एवा तमने नमस्कार आउ। सर्व जनना हितकारी, सर्व अ-  
र्थना साधनार, असुतहृप बहुवर्थने उदित करनार, आप अने पारंगत एवा तमने नम-  
स्कार आउ। दक्षिणीय, निर्विकार, दयाकु अने वज्रऋष्ण ताराच शारीरना धारण करनार  
एवा तमने नमस्कार आउ। त्रिकाळना जाणनार, जिनेंद्र, स्वयंशृङ्, इन, वल, वीर्य, तेज,  
शक्ति, अने ऐ शर्वसय एवा तमने नमस्कार आउ। आदि पुरष, परमेष्टी, महेश आने हयो-  
तिस्तत्वहृप एवा तमने नमस्कार आउ। सिद्धार्थ राजना कुलहृपो कृशाग्रमां चंद्र  
जेवा महावीर, धीर, अने त्रण जगतना स्वामी एवा तमने नमस्कार आउ।

विष सञ्चरणयुग्मं राख्युं ते पण दोषने माटे डें तो द्वेष राख्यानी तो बातांज शी कर्नी ? कोपादिकशी उपद्रव पासेदाउते पण तमारा प्रतिपक्षी डें एव्ही लोकवार्ता शुं विनेकी लोको करे डें ? अर्थात् नशी करता. तमे विरक्त ठों तेशो जो रागवान्त तमारा निपक्षी होय तो ते विपक्षज नशी, केमके सूर्यनो विपक्षी शुं खउड्ह होइ शाके ? लवसत्तम (अनुत्तरवासी) देवताउे पण तमारा योगने इड्हता डता तेने पामता नशी तो योगमुखा विनाना वीजाउनी बातांज शी कर्नी ? हे स्वामि ! अमे तमारा जेवा नाथना शरणनेज अंगीकार करीए ठीए, तमने स्तवीए ठीए अने तमारीज उपासना करीए ठीए, तमारा सिवाय वीजो कोइ ज्ञाता नशी तेशी क्यां जाइने कहीए अने शुं करीए ? पोताना आचार नदेज मल्हीन अमे परने भेतरवासांज तत्पर एवा बीजा देवोशी आ जगत् उगाय ठे. अहो ! तेनो पोकार कोनी आगळ करीए ! नित्य मुक्त रहेनारा डतां आ जगतनी उत्पन्नि, स्थिति, अने दय करवामां उद्यत थनारा अने तेशीज वंदयाह्वीना वाळक जेवा देवोनो कयो सचेत पुहन आश्रय करे ? हे देव ! चीजा केटलाक मूढ़ पुऱ्हो छदरपृत्तिना करनारा अने विपर्येक्षियोना ठुराचार करनारा देवताउशी तमारा जेवा देवाधिदेवना

निन्द्वन याये ते केया खेदनी वात ? आहो ! केटलाक घरमां रहीने गर्जना करनारा मी।  
 यातीचे आवऱ्युं आगांशा प्रदपवत् ते पवी उत्पेक्षा करीने आने तेचुं कांडक प्रमाण  
 कटपीने देह अने गेहगां आनेद मानता रहे ले. कामराग अने स्लोहरागनुं निवारण करवु  
 तेतो सहेज वनी शके तेचुं ले, पण द्विराग तो एवो अति पापि ले के जे सत् पुरुषोने  
 पण उद्देदन करावो मुडकेवा पासे ले. हे नाश ! प्रसन्न सुख, सध्यवस्थ द्विइ आने लोकने  
 प्रीति उपजावनारु वचनत—ए बधुं तमारामां आलंत प्रीतिना स्थानलघु उतां मुढ लोको  
 उग्रा तमाराशी उद्दास रहे ले, कद्दी वाई स्थीर रहे, पर्वत द्रवे आने जळ उग्रजवयमात  
 याय, तथापि रागादिकवद्दे ग्रहत शेषेज्ञा पुरुषो कडी पण आह स्थाने योग्य नयी।

---

श्री रिषबवदेव सत्तुति.

निन्द्वन याये ते केया खेदनी वात ? आहो ! केटलाक घरमां रहीने गर्जना करनारा मी।  
 यातीचे आवऱ्युं आगांशा प्रदपवत् ते पवी उत्पेक्षा करीने आने तेचुं कांडक प्रमाण  
 कटपीने देह अने गेहगां आनेद मानता रहे ले. कामराग अने स्लोहरागनुं निवारण करवु  
 तेतो सहेज वनी शके तेचुं ले, पण द्विराग तो एवो अति पापि ले के जे सत् पुरुषोने  
 पण उद्देदन करावो मुडकेवा पासे ले. हे नाश ! प्रसन्न सुख, सध्यवस्थ द्विइ आने लोकने  
 प्रीति उपजावनारु वचनत—ए बधुं तमारामां आलंत प्रीतिना स्थानलघु उतां मुढ लोको  
 उग्रा तमाराशी उद्दास रहे ले, कद्दी वाई स्थीर रहे, पर्वत द्रवे आने जळ उग्रजवयमात  
 याय, तथापि रागादिकवद्दे ग्रहत शेषेज्ञा पुरुषो कडी पण आह स्थाने योग्य नयी।

योगिय मनोहर थे। महादेव ! मातृता कुही ! स्त्री भरने दात्यावंतर राज्ञेन्द्र ठै। अग-  
जगतना घणा घणा लोक रहित करवा युर्मसान ठो। वल्ली सर्व देव-  
निमाक्षय लक्ष्मीने विवासि करवावै कमलाकर (सर्वेष) सर्विता है ब्रह्म ! तमे जयवंता  
वता। आवितक्य स्वत्तरके रहेहा मुकुटना माणिक्यकमी कांतिरुप पाणीनी लोहेशी  
नयमान, देवाना कामम ! एक एकमी आदेश व्राद्वने नमस्तकार करवासां तदपर एवा अमर  
आने नरसमुहना सस्तके रहेहा मुकुटना माणिक्य व्यपदा, लीन वती गणदा अन्न-  
मत्तम, काम, क्रिधादिक द्वयहृप यत्व जेए एवा, अपार संसारलुप समुद्रमा। उच्चता  
प्राणीने पंखमग निरूप तीरपर पहोचाक्षाने जहाँक समान एवा है प्रद्य ! तमे जयवंता  
वता। सुंदर निलिहृप वधुना है इच्छ ! तमे जरतार ठै। अजर, असर, अबल, अरुर,  
अपर, अपरंपर, परमे श्री, योगी श्री है अपि यमादि जिने शर ! तमने नमस्कार थाई।

क्षी जिनेव्यर रत्नात्.

जय चागचन्द्रैलोक्य तारण, आशरण शरण परमात्मा, परमे शर, जगत्त्रयाधार,  
कुपाचतार, महिमानिधान, इष्टपित सकलं विधान, समय जंतुना कहणावंधु, जडयजी-  
वोने धर्म प्रसारता, अवस्थितुमां अनाश नाश, शिवपुर साय, परमद्याल, वचनरसाठ,  
जगदुपकारी, वंदे नरतारी, तथा जे सुधासंयमी, निर्वय पंथ पाठ्ना, चारित्र द्वयण  
टाळता, सर्व जीवने हितकर्ता, आठवाने उद्भरता, एवा अनेक साधुए परवर्या, अलं-  
कर्या, क्रोधो गमे देवताए सेवीत, अनंत द्वानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारित्रमय,  
अनंत तपोमय, अनंत दानमय, अनंत वीर्यमय, अनंत लाजमय, अनंत ज्ञागमय,  
अनंत उपचोगमय, क्रोध रहित, माया रहित, लोभ रहित, हास्य रहित,  
रति रहित, आरति रहित, जय रहित, शोक रहित, दुःख रहित, राग रहित, द्वेष  
रहित, मोह रहित, मिथ्यात्म रहित, निदा रहित, काम रहित, अझान रहित, कंदप  
रहित, रोग रहित, निरालंबी, निरासी, निराकारी, अनंत चतुष्पृष्ठी, अकृप,  
अचल, अकल, अमल, आगम, अनामी, अकर्मी, अवंधक, अनुदय, अनेदी, अनेदी,

अरेणु, अवेद्धि, असदायी, अलेशी, अनवगाह्नि, अवश्यपि, अनाश्रयी, आकंप, आ-  
स्वलीत, अविमोग, अनाश्रित, आवल, अलोक, अलोक, लोकलोक क्षायक, शुद्ध-  
वृक्ष, स्वलाभसमणी, सहजानंद, एक, असंख्य, अनंतपुणि करि विराजमान एवा अनंत  
सुखना लोगी, ब्रैह्मोक्षयना गाजा, ब्रैह्मोक्षयना पति, ब्रैह्मोक्षयना स्वामी, ब्रैह्मो-  
क्षय लिङ्क, ब्रैह्मोक्षयते विषे मुकुटमुखा समान, ब्रैह्मोक्षयते विषे हञ्च समान, ब्रैह्मो-  
क्षयते विषे सुर्य समान उच्योतना करनार, मिथ्यात्व इच्छय अंधकारना टाळतार, चंद्र-  
मनि परे झौतलताना करनार, विषय कृष्णद्वय वल्लतराता टाळतार, लक्ष्मी लक्ष्मी पार उत्तरनार, तथा आर प्राप्तिहर्षनी संघददये करि विराजमान तथा पूजाति-  
लनां चार आम ते चार गुणे करि शोलित, तेस ज चार अतिशय सहजना। जन्म शक्ति-  
होम अन्ते कर्मु कुप्र श्रया यक्ति आगीआर तया। देवताना करेला लगणीस मळीते चो-  
क्षीस अतिशये करि विराजमान अना एवा। श्री विराजमान अना एवा। श्री विराजमान मळीते हितो-

इति चतुर्विंशति जिन स्तुति समाप्त.

पदेश करता मिथ्यालवहस्य अंधकारने नृता आका विचरता हता लाए हर्ष जक्किए-  
चाविक शका जननपति, ठंयंतर, ऊयोतिपे, अने वैमानिक, ए चार निकायना देवताए-  
मण्डलीने रूप, सुवर्ण तथा रक्षामय त्रया गहनी रचना करी ते मध्यमं रक्षजकीत सिंहास-  
नने विषे पोते बोगा. मस्तके त्रण उत्तर शोते छे, चार चामर विंजाय ठे, सुर, असुर, मनुष्य,  
विद्याधर, किञ्चर, गंधर्व इत्यादिकनी पर्षदाने देशना देनार वीतराग चरगचानने आ-  
सारो परम अद्भुतव्यक नमस्कार आई.

## अभि द्वेरान्ना संग्रहः

श्री इत्यवदेव नगवाननी देश ना।

आधि, दमाधि, जरा अने मूल्युरुपी सेकरो उचालाउयी आकुळ एवो आ संसार सर्व प्राणीउने देष्टिप्रभात अग्नि जेवो ठे; तेशी तेसा विद्धानोए लोशमान्न पण घसाद करवो युक्त नष्टी; केम के रात्रिए भृद्वंघन करवाने योग्य एवा सरुदेशासां अङ्गानी एवो पण कोण ग्रमाद करे? अनेक जीवायोनीहूप आपर्तनके आकुळ एवा संसार समुद्रमां अटन करता जंतुठेने उत्तम रहनी पेठे आ मनुष्यजन्म प्राप्त थाँ डुर्लभ ठे. दोहद पुरवाशी जेम वृद्ध फळयुक्त श्राव तेस परदोक्तुं साधन कहाशी प्राणीउनो सनुष्य जन्म सफल श्राव ठे. आ संसारमां शाह लोकोनी वाणीती पेठे श्राव मधुर अने परिणामे अति ढारुण एवा विद्यो, विश्वने ठगनारा ठे. घणी जंचाइनो शंत नेष्ट पक्षासां ठे, तेस संसारनी अंदर वर्तता सर्व पदार्थोना संयोगनो अंत वियोगमां ठे. जाणे परव्यपर स्प-

धर्मी होय तेम आ संसारमां प्राणीहेते आयुष, धन अने यौवन—ए सबै नाशावंत अने  
 जचानी व्वराचालाँ रे. मरुदेशमां जेम स्वादिष्ट जल न होय तेस संसारनी चारे गतिमां  
 कदापि सुखनो देश पण नशी; देव दोपशी ठुःख पासता अने परमाधार्मिकोए क्वेचा  
 पमानेला नारकीहेते तो क्यांशीज सुख होय? शीत, वात, आतप अने जळथी तेमज  
 वध, वंधन अने कुधा विगेरेशी विविध प्रकारे पिका पासता तिर्थहेते पण युं सुख हे?  
 गर्भवास, डयाधि, जरा, दारिङ् अने मृत्युथी शता ठुःखवडे आलिंगित थपला मतु-  
 ल्योने पण क्यां सुख हे? परस्पर मत्सर, अमर्ष, क्वाह, तथा उपचन विगेरे ठुःखोथी  
 देवताहेते पण सुखनो देश नशी; तथापि जल जेम नीची जर्मीन तरफ जाय हेतेम  
 प्राणीहु अङ्गालथी वारंगार आ संसारनी तरफज चाहे हे. माटे हे चेतन (झान) वाढा  
 नविजनो! ठुधन हे सर्पनुं पोषण करवानी जेम तमे पोताना मनुष्य जन्मवके संसारनुं  
 पोषण करशो नहि. हे विवेकीहु! आ संसार निजासथी उत्पन्न थता अनेक ठुःखो चि-  
 चारीने सर्व प्रकारे मोहने माटे यहन करो. नहिना ठुःख जेतुं गर्ववासनुं ठुःख संसा-  
 रनी पेरे क्यारे पण मोहपां प्राप्त थर्तुं न शी. कुँजीना मध्यमांशी आकर्षण कराता ना-

रकीता जीवोनी पीका जेवी प्रसववेदता मौकामां क्यारे पण प्रात थती नशी; बहार  
अने अंडर नांखेदा शाढ़य जेवा अने पीकाना कारणलय एवा आधि ठाड़ी उत्तमां नशी;  
यमराजनी अमद्दती सर्व प्रकारता तेजने चोरनारी तथा पराधीनपणाने उत्पन्न करनारी  
जारा पण सर्वशा ल्यां नशी; अने नारकी, तिर्यंच, मतुहय तथा देवताउनी पेउे फरीशी  
तत्र ब्रमणनुं कारणलय एवुं मरण पण मोक्षमां नशी; ल्यां तो महा आनंद, अद्दैत अने  
अट्टयप्रसुल, शाखतलय अने केवळ इनातलय सूर्यवदे अवंत इयोति भे; हमेशां इन,  
दर्शन, अने चारित्रलयी त्रण उड़वळ रहोतुं पालन करनारा पुरुषोज ए सोक्षते मेळनी  
गाके भे. तेमां जीवादि तत्वोनो संकेपशी अथवा विस्तारशी यशार्थ अन्वयोध ते समयक्  
हान जाणवुं, मति, श्रुत, अवधि, ते मनपर्यव अने केवळ एवा अन्वय सहित ले-  
दोयी ते इन पांच प्रकारतुं भे. तेमां अवग्रहादिक जेदोचालुं तथा वीजा बहुआही  
आनुग्राही जेदोचालुं अने जे इंद्रिय अनिंदियशी उत्पन्न प्राय ते मतिझान जाणु.  
पूर्व, अंग, उंग, अने प्रकीर्णक सूत्रो—पंचोशी बहु प्रकारे विस्तार पासेलुं अने स्यात्  
शब्दनमे लांचित एवुं श्रुतज्ञान अनेक प्रकारे जाणु. देवता अनेक प्रकारे जाणु. देवता अनेक प्रकारे जीवोने जे

न च संवर्धी भृत्यज्ञ आय हे ते अवधीङ्गान कहेवाय हे. ए कृष्ण भृत्याम दक्षणवालुं रे अने मनुष्य निर्वच आश्रि तेना मुख्य ठ चोद हे. मनःपर्यायज्ञान कञ्जुमती अने विपुल मती एवा वे प्रकारचुं हे, तेसां चितुउत्तमती तुं चिशुकिं अने अप्रतिपातपणावर्के विशेषपूर्ण जाणी लेउं. सप्तस्त इडयपर्यायना विषयवालुं विश्वलोचन समाज, अनंत, एक अने दियोता विषय विनाटुं झान तो केवलज्ञान कहेवाय हे.

शास्त्रोक्त शत्रवां हजि ले इस्यक्षत्राद्वा कहेवाय हे. ते श्रद्धा (समकित) शत्रजावर्षी अने गुरुनां भवद्वेशवर्षी भ्रात आय हे. आ अतादि अनंत संसारना आवर्तमां वर्तता प्राणी अने इनानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी अने अंतराय नासनां कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति त्रीस कोटालुं कोटी सागरोपमनी हे; शोक अने नामकक्षर्मनी दिघति दीश सागरोपम कोटालुंकोटी हे अने मोहनीय कर्मनी स्थिति सितेर कोटालुंकोटी सागरोपमनी हे. अनुकमे फलना। आनुज्ञवर्ची। ते सर्व कर्मां पर्वतमांची नदीमां अशकातो पद्मर गोलं थइ जाय ते नयायबत् पोतानी मेळे कृष्ण पामे हे. ए प्रमाणे कृष्ण अता कर्मनी अमुकमे उगण्डवीस, डंगणीस, अने अगणोतेर कोटालुंकोटी सागरोपम सुधीनी

दिश्यति हृष्ण पासे अनेते दैशो ऊंणी (कांडक उर्ध्वी) एक कोटानुंकोटी सागरोपमनी दिश्यति  
वाकी रहें ल्यारे प्राणी चयाप्रवृत्तिकरणवके यंशीदेशने श्रास आय ठे. राग ढेपना डुःख  
जेदी शकाय एवा परिणाम ते यंशी कहेवाय ठे, ते काटनी गांठ जेवी डुरडेव अने ध-  
लीज छड होय ठे. कीनारा समीपे आवेदुं वायुप्रेरित बहाण जेम समुद्रमां पाहुं जतुं  
रहे तेम रागादिके भ्रेदा केटलाएक जोचो यंशीने जेवा विलाज यंशी स्त्रीपश्चीज  
पाडा फरे ठे. केटलाएक प्राणीउ मार्गमां इखलाना पासेला सरिताना जळनी धेरे कोइ  
प्रकारनां परिणाम विशेषयी ल्यांज विराम पासे ठे. कोइ प्राणीउ जेमतुं ज्ञविष्यसां जड  
यवानुं होय ठे तेउ अपूर्वकरणवके पोतानुं वीर्य प्रगट करीने झ्वेटा सार्गने उल्लंघन  
करेनारा पांश लोकी जेम वाटनी चूमिनुं उद्घंशन करे तेम ते उद्दृथ यंशीने तारकाल  
जेदी नाखे ठे. केटलाएक चार गतिचाला प्राणीउ अनिहृतिकरणवके अंतरकरण करीने  
मिथ्यात्वने विरख करी अंतमुहूर्त मात्र सस्फ्यकृदर्शनने पासे ठे. ते नैसर्गिक (खाजा-  
विक) सम्यकश्रद्धान कहेवाय ठे. यहता उपदेशना आवंचन्तशी चबय प्राणीठेने जे सम-  
कित उत्पत्त आय ठे ते गुरुता अधिगमयी अपलुं समकित कहेवाय ठे.

समकितना औपकामिक, साखादत, हायोपशमिक, वेदक अने कायिक एवा  
पांच प्रकार रे. जेती कर्मवंशी ज्ञेद पासेदी रे एवा प्राणीने जे समकितनो साज प्रश्नम  
अंतसुहृद साज थाय रे ते औपशमिकसमकित कहेवाय रे, तेमज उपशम श्रेणीना  
योगर्थी जेतो मोह शांत थयो होय एवा देहीने मोहना उपशमर्थी उपत्त थाय ते पण  
औपशमिकसमकित कहेवाय रे. सम्यक्नावनो त्याग करीने मिथ्यात्वनी सन्मुख  
यएदा प्राणीने आनंतातुंबंधी कषायतो उदय थतां उत्कर्षथी ठ आवळी पर्यंत अने ज-  
घन्यथी एक समय समकितनो परिणाम रहे ते साखादतसमकित कहेवाय रे. मिथ्या-  
त्व मोहनीयतो कृष अने उपशम थवायी उपत्त थपत्तु त्रीछुं हृयोपशमिक समकित  
कहेवाय रे; ते समकित मोहनीना उदय परिणामवाला प्राणीने थाय रे. वेदक नामतुं  
चोयुं समकित द्वपक नावने प्रास थवेला, आनंतातुंबंधी कषायती चोकरी हृय थायदा,  
क्षायक समकितनी सन्मुख थवेला, मिथ्यात्व मोहनी अने मिश्र मोहनी सम्यक् प्रकारे  
जेमनी कृष पासी रे एवा अने समकित मोहनीना रेह्वा अंशाने चोगवनारा प्राणीने  
प्राप्त थाय रे. साते प्रकृति रोण करनारा अने शुल लाववाला प्राणीने द्वायिक ना-  
मनुं पांचमुं समकित प्रास थाय रे.

समकित दर्शन गुणश्री रोचक, दीपक, अंते कारक एवा नामधी ब्रह्म प्रकारनु-  
पे, तेमां शास्त्रोक्त तत्त्वमां हेतु अने उदाहरण विना जे ऊँड प्रतीति उत्पन्न आय ते  
रोचक समकित, जे वीजाउना समकितने प्रदीप्ते करे ते दीपक समकित अने जे संयम  
तथा तप विगोरेने उत्पन्न करे ते कारक समकित कहैवाय छे. ते समकित शम, संवेग,  
निवेद, अतुकंपा अने आस्तिक्य ए पांच लक्षणोष्ठी सारी रीते उल्खाय छे. अनंतानु-  
वंशी कपायनो उदय न आय ते शम कहैवाय छे अश्ववा सम्यक् प्रकृतिश्चि कषायना  
परिणामने जोँटु ते पण शम कहैवाय छे. कर्मना परिणाम अने संसारनी असारताने  
चिंतत्वता पुरुषने विषयोमां जे वैराग्य आय ते संवेग कहैवाय छे. संवेगवाला पुरुषने  
संसारवास कारणहुँ छे, अने स्वजन डे ते वंधन छे, एको जे विचार आया करे ते निवेद  
कहैवाय छे एकेक्षिय विगोरे सर्व प्राणीउने संसार सागरमां ऊवाश्री आता कदेशने जोइ  
हृदयमां आईता, तेमनां ऊँखश्री ऊँखीपणु अने ते ऊँख निवारणना उपायमां यथा-  
शक्ति प्रवृत्ति कर्वी ते अनुकंपा कहैवाय छे. वीजां तत्त्वो सांझलतां भतां पण आहेत  
तत्त्वमां आकांक्षारहित प्रतिपत्ति रहेवी ते आस्तिक्य कहैवाय छे. एकी रीते सम्यक्

दर्शन वर्णिवेलुं छे. तेनी दाणवार पण प्राप्ति थतां पूर्वुं जे मति आङ्कान होय उे ते पाच-  
जन्व पासीने मतिझानपणाते पासे छे, श्रुतआङ्कान पराचन्व पासीने श्रुतझानपणुं पासे छे,  
अने विचंगङ्कान पराचन्व पासीने अवधिझाननां जावते पासे छे.

सर्वं साचाय योगनो ल्याग ते चारित्र कहेवाय छे. ते आहिंसादिक ब्रतना जेदशी  
पांच प्रकारे कहेलुं छे. आहिंसा, सत्य, अचौर्य, बहुचर्य अने अपरिग्रह ए पांच वरतो  
पांच पांच जावताए युक्त घटकाशी सोडते अर्चं शाय छे. प्रमादना योगशी त्रस अने  
स्थाचर जीवोना जीवितनो नाशं न करवो ते आहिंसावत कहेवाय छे. प्रीय, हितकारी  
अने सत्य वचन बोलालुं ते सुनुत (सत्य) व्रत कहेवाय छे. अप्रीय अने अहितकारी स-  
त्य वचन पण असत्य समान जाणुं. अदत्त वस्तुलुं ग्रहण न करावूं ते असतेयवत कहे-  
वाय छे; केमऱे द्रव्य ए माणसना बहिर प्राण छे, तेथी ते हरण करनार पुरुष तेना प्रा-  
णते हरण करे छे एम जाणुं. दिव्य (वैकिय) अने औदारिक शरिरवके अबहुचर्य  
सेवतनो—सत, वचन, अने कायाशी करावूं, करावूं अने अग्रुमोदवूं ए ऋण प्रकारे हयाग  
करवो तेने बहुचर्यनत कहावूं छे; तेना अढार लेद थाय छे. सर्वं पदाशो छुपर सोह (मूर्ती)

तो लाग करवो ते अपरिवहनत कहेवाय ले; केमके मोहर्थी अरती बस्तुमां पण चिन्तनो  
विष्वव्र आय ले. यतिधर्मसां अनुरक्त एवा यत्तोऽने आ प्रमाणे सर्वथी चारित्र कहुं ऐ  
अने यहस्थोने देशाश्री चारित्र कहुं ले.

समकित मूळ पांच अणवत, तण गुणवत, अने चार शिक्षावत ए प्रमाणे यह-  
इश्वोनां चार व्रत ले. बुद्धिंतं पुरुषे पंगु, कुष्ठि, अने कुणित्र विगेरे हिंसानां फल जोइ  
निरपराधी त्रस जीवोनी हिंसा संकटपथी गोकी देवी. मन्मनपण्ठु, काहलपण्ठु, मुंगापण्ठु  
अने मुखरोग—ए असत्यनां फल जोइ, कन्या अलिक विगेरे पांच मोटां असत्य ढोकी  
देवां; कन्या, गाय अने चृमि संनंधी असत्य, आपण तेळवडी अने खोटी साकी पूरकी  
ए पांच स्थूल (मोटां) असत्य कहेवाय ले. डुर्जाग्य, कासीडुं, दासत्व, अंगनो ठेद  
अने दरिद्रता ए अदत्तादान (चोरी) नां फल जाणी स्थूलचैर्यनो त्याग करवो;  
नपुंसकपण्ठु, अने इंद्रियनो ठेद ए अवहन्त्रयनां फल जाणी सद्बुद्धिंत गुरुषे स्वत्रीमां  
संतुष्ट थइ परखीनो लाग करवो. असंतोष, अविश्वास, आंसू अने डुःख—ए सर्व  
परिघडनी मूर्ढनां फल जाणी परिग्रहनुं प्रमाण करवुं. (ए पांच अणवत कहेवाय ले.)

दर्शे दिशामां निष्ठय करेली सीमानुं उद्दीपन त करुन् ते दिग्बिरति नासि प्रथम युग-  
वत कहेवाय ठे. जेमां शक्तिपूर्वक लोग उपजोगनी संख्या कराय ते जोगोपत्रोग प्रमाण-  
नासे वीजुं गुणवत कहेवाय ठे. आर्त, रौद्र-ए वे अपध्यान, पाप कर्मनो उपदेश, हिंसक  
अधिकरणोंनुं आपुं तथा प्रमादाचरण-ए चार प्रकारे अनर्थदंक कहेवाय ठे; शारी-  
रादि, अर्थदंकना प्रतिपक्षपणे रहेल अनर्थदंकनो ल्याग करवो ते नीजुं गुणवत कहे-  
वाय ठे. आर्त अने रौद्रध्याननो ल्याग करीने तथा साचव्य कर्मने ठोकी देइ मुहूर्त (व-  
घकी) सुधी समता धारण करवी ते सामाचिकवत कहेवाय ठे. दिवस अने गत्रि संबंधी  
दिग्ब्रहतमां परिमाण करेलुं होय, तेनु संक्षेपण करुन् ते देशावकाशिक ब्रह्म वत कहेवाय ठे.  
चार पर्वणीने दिवसे उपवास विगेरे तप करवो, कुठ्यापारनो त्याग करवो, ब्रह्मचर्य  
पाळुं अने वीजी खानादिक क्रियानो ल्याग करवो ते पौषधवत कहेवाय ठे. अतिथि  
(मुनि) ने चतुर्विध आहार, पात्र, वश्त्र अने स्थान (उपाश्रय) तुं दान करुन् ते अतिथि  
संविचाग नासे ब्रह्म वत कहेवाय ठे.

मोहनी प्राप्तिने माटे यति अने आचकोए सम्यक् एवा आ त्रण रहोनी हमेशा  
उपासना करवी.

श्री अनितनाथजीनी देशना.

आहो ! मुरध बुळिवाळा प्राणीले वैद्यर्थ मणिनी बुळिशी काचने अहण करे तेम आ असार संसारने सारवाळो जाणे ले, दरेक ढणे चंधातां विविध प्रकारां कर्मेशी प्राणीतेने आ संसार दोहोशी बुळनी जेस बुळि पासे ले, कर्मना अचावथी संसारनो अचाव थाय रे तेशी बिळातोए कर्मनो नाश करवाने माटे सदा प्रथल करवो. कर्मतो नाश शुनायानथी थाय रे. ते ध्यान आङ्गा, अपाय, विपाक अनें संस्थानना चित्तचनथी चार प्रकारचुं रे तेमां जे आस युरुषेनुं वचन ते आङ्गा कहेवाय ले ते ले प्रकारनी ठे. तेमां पहेली आगम आङ्गा अनें चीजी हेतुचाद आङ्गा. जे शब्दशीज पदाशोने प्रतिपादन करे रे ते आगम कहेवाय ले अनें वीजा प्रमाणोना संचादथी पदाशोने प्रतिपादन करे रे ते हेतुचाद कहेवाय ले. आ वहेचुं तुवय प्रसाण मेळवीने जे दोषरहित कारणोशी आरठ थाय ते लक्षणथी यसाण कहेवाय ले. राग द्वेष अने मोह ए दोष कहेवाय रे ते अहंतने उत्पन्न थता नशी माटे दोषरहित कारण य अनें प्रमाणशी सिल्ह, पूर्वपर एचुं ए अहंतोनुं नचन प्रसाण रे ते ( वचन ) य अनें प्रमाणशी

विरोध विनारुं वीजा चक्किष्ट शासनोर्थी पण अप्रतिक्षिप्त अंग उपांग प्रकीर्ण चि-  
मेरे वहु शास्त्ररूपी नदीरुना समुद्ररूप अनेक अतिशयोनी साक्षात्य दाह्मीथी शोचित  
हृष्णवृहुषोरुं डुर्वेच ज्ञात्यपुरुषोने सुवर्ज गणिपिटक पणे रहेहुं तेमज शास्त्र  
अने देवताए नित्य स्तुति करवाने योग्य ठे एवा आगम वचनोनी आङ्गानुं आदिवन  
करीने स्याद्वाद न्यायना योगशी द्वन्धपर्यायरूपे नित्यानित्य वस्तुउर्मां तेमज स्वरूप  
अने पररूपशी सत्र असत्रपणे रहेला पदार्थोमां जे स्थिर प्रतीति करवी ते “आङ्गा  
विचयव्यान” कहेवाय ठे. जेउए जिनमार्गनो इपर्श कर्यो नशी, जेउए परमात्माने  
जाएया नशी अने जेउए पोताना आगामी काळनो विचार कर्यो नशी तेवा पुरुषोने  
हजारो अपाय ( विद्वा ) शाय ठे. साया मोहरूपी अंधकारशी जेहुं चित्त परवश थयेहुं  
ठे एवो प्राणी शुं शुं पाप करतो नशी अने तेशी ते कया अपाय ( कष्ट ) ने पामतो  
नशी? एवो प्राणी विचार करे के--नारकी, तिर्यक्त अने मनुष्योमां जे जे डुःख में जोग-  
ठयां ठे ते चित्तरहित एवा मारा प्रमाद वडेज ठे, परम बोधि बीजने मेलहया उतां  
पण मन, वचन अने कायाचडे करेली ऊष्ट चेष्टाउर्थी मैंज मारा पोताना सस्तक

उपर अद्वितीय कर्यों दे. मुक्तिमार्ग मरि स्वाधीन भर्ता कुमारग्ने शोधी हो मार्ग चालीने मेंज मारा आत्माने अपायो (काष्ठो) माँ नाख्यो दे. जेम सार्हं राज्य प्राप्त थाया उतां पण मूर्ख माणस जिहाने माटे परिच्छयाण करे, तेम सोहृ साक्षात्य मारे स्वाधीन भर्तां पण मारा आत्माने हुं संसारमां चमण कराउं दुं. आ प्रमाणे राग द्वेष अने सोहृ उत्पन्न थाता अपायोने चिंतवासां आवे तेतुं नाम “अपायचिच्य” नामे ध्यान कहेचाय दे.

कर्मतुं जे कळ ते विपाक कहेचाय दे. ते विपाक शुज्ज अने अशुज्ज एम वे प्रकारनो दे, अने ऊव्य केजादिकनी सामझीवडे ते विचित्रल्पे अशुज्जवासां आविडे; तेमां ल्लो, पुष्पोनी माळा, अने खाद्य ऊव्य विगेरेना उपजोगयी शुज्ज विपाक कहेचाय दे अने सर्प, शङ्ख, अग्नि अने जेर विगेरेयी जे अशुज्जव कराय ते अशुज्ज विपाक कहेचाय दे, ( ऊव्यविपाक ). महेल, विमान तथा उपचतादिकमां निचास करचाई शुन विपाक कहेचाय दे अने इमशान, जंगल तथा अराय विगेरेमां रहेचाई अशुज्ज विपाक कहेवाय दे, ( कोन विपाक ). टाढ अने तडका रहित एवी ब्रह्मतादिक झट्टुमां अमण कर-

वार्थी शुल्क विपाक कहेवाय हे अने तरका तथा टाढ़वाळी ग्रीष्म अने हेमतकृतु  
 विगोरेसां च्रमण करवाथी अशुल्क विपाक कहेवाय हे, ( काळ विपाक ). मननी प्रसन्नता  
 अने संतोष विगोरेसां शुल्क विपाक शाय हे अने कोध, अदंकार तथा रौद्रपणा विगोरेसां  
 अशुल्क विपाक शाय हे, ( जात विपाक ). देवपणासां अने तोग चूमि संबंधी मनुष्यादि  
 जावसां शुल्क विपाक शाय हे अने कुमनुष्यपणासां निर्यच्चपणासां अने नरक विगोरेना  
 जावसां अशुल्क विपाक शाय हे, ( जन विपाक ). कहुं हे के इन्ध, हृत्र, काळ, जाव अने  
 जावने पामीने कमोनो उदय, हृय, हृयोपशम, अने उपशम आय हे. एवी रीते इन्धा  
 दि. सामग्रीना योगथी प्राणीने तेसनां कमों पोत पोतानुं फल आपे हे, ते कर्मना  
 मुख्य आठ लेद हे. ते आ प्रमाणः--वस्त्रना पाटायी नेत्रनी जेम जे कर्मना उदयथी  
 सर्वकृ स्वरूपवाला जंतुं झान हमेशां रुधाइ जाय ते झानाचरणीय कर्म कहेवाय हे; मति  
 शुत, अवधि, मनःपर्याय अने केवल ए पांच झानना लेद हे, ए पांचने आवरण करवा  
 ग्री ए झानाचरणीयना ए प्रमाणेज पांच लेद हे. पांच निञ्चा अने चार दर्शनोनी जे आ-  
 दृक्षि ( आदरण ) ते दर्शनाचरणीय कर्म कहेवाय हे. जेम पोताना स्वामीने जोवाने

इन्हतो पुरुष प्रतिवारना निरोधश्री जौइ शके नहि तेस जेना उदयश्री आरता पण  
जौइ शकाय नहि ते दर्शनवरणीय कहेवाय ले. मध्यश्री लिस करेकी खफती धारता  
अग्रजागनो आस्वाद देवा जेबुं वेदनीकर्म कहेवाय ले, ते सुखता अने ऊँखता श-  
मुचवरूप स्वजाववालुं होवायो वे प्रकारबुं ले. प्राङ् पुहवोए मोहनीयकर्मने मदिरा-  
पान तुल्य कहेबुं ले, कारण के ते कर्मना भद्रयश्री मोह पासेलो आत्मा कृतयाकृतयने  
समझी शकतो नयो; तेसां मिथ्याहटपणाता निपाकने करतां हृदयनोहनीय नासे  
कर्म कहेवाय ले, अने विरतने प्रतिबंध करतां है चारित्र मोहनीयकर्म कहेवाय ले.  
मतुष्य, तिथ्यच, नारकी अने देवताना जेद्यो आयुष्यकर्म चार प्रकारबुं ले, ते प्राणी-  
बुने पोतपोताना जवने विषे बंदीखानानी पेरे रोकी राखतां है. गति, जाति, विगेरे  
विचित्रताने करतां हृ नामकर्म चित्रकारना जेबुं ले, एनो विपाक प्राणीबुने शरीरमां  
प्राप्त शाय ले. उच्च अने नीच एम वे प्रकारबुं गोत्रकर्म ऊचा निचा गोत्रने प्राप्त करा  
वनां है ते कीरपात्र अने मदिरापात्रना लोदने करनारा कुंक्षारना जेबुं ले. जेनाथी  
वाधित अयेली दानादिक खडिखडु फलीकृत शती नशी, ते अंतरायकर्म चंकारीना

विचार्य" धर्मध्यान।

लेहुं ले. एकी रीते मूल प्रकृतिभूता ते ते प्रकारना विपाकने वितव्युं ते "विपाक

दिश्यति अने उत्पन्नि अने लयरूप आ आदि अंतरहित लोकनी आकृति जेमां वितव्यासां आवे ते संस्थानविचयध्यान। आ लोक कटी उपर हाथ मुकेला अने पण पहोळा करीने रहेला पुरुषनी आकृतिनी जेवो ढे अने ते दिश्यति उत्पन्नि अने नाशरूप पर्यायोवाळा घडयोशी पूराइ रहेलो ढे. ए नीचेयी वेत्रासननी जेवो ढे, मध्यमां ऊलरनी जेवो ढे अने तुपर मुदंगनी जेवी आकृतिवाळो ढे. ए लोक त्रण जगतपी व्यास रे एमां सहा बळवान घनांत्रोधि, घनवात अने तनुवातशी निचेनी साते पुढीली वीटाइ रहेली ढे. अधोलोक, तिर्यग्लोक अने उधर्लोकना लेदक्षी त्रण जगत् कहेवाय ढे, ते त्रणे लोकना विजाग रुचक प्रदेशनी अपेहाशी पढे ढे. मेरुपर्वतनी अंदर मध्यमां गयना स्तनने आकारे चार आकाशप्रदेशने रोकनारा चार नीचे अने चार आकाश प्रदेशने रोकनारा चार उपर ए प्रसाणे आठ उचक प्रदेश ढे, ते रुचक प्रदेशनी उपर अने नीचे नवसो नवसो योजन सुधी तिर्यग्लोक कहेवाय ढे. ते तिर्यग्लोकनी नीचे

आधोलोक रहेंदो ठे, ते नवसौ यो जने न्दून सात राज प्रताण ठे, अधोलोकमा एक ए-  
कनी। नीचे अनुकमे सात चूमिडु रहेलो ठे, जे चूमिमा नपुंसकबेदी नारकीउत्ता जायंकर  
निवासो ठे, ते सात पृथग्निवा रत्नपत्ता, शर्करपत्ता, वालुकपत्ता, पंकपत्ता, धूमपत्ता,  
तमःप्रता अने महातमपत्ता एवा सात नाम ठे, ते पृथग्निवे जानाइमां अनुकमे रहल  
पत्ताकी मांकनीने नीचे नीचे एक लाख अंशीहजार, एक लाख बज्जीहजार, एक लाख  
अठयाचिंशहजार, एक लाख निशहजार, एक लाख अंडारहजार, एक लाख शोलहजार  
अने एक लाख आठहजार यो जनता विहतारवाळी ठे, तेमां रत्नपत्ता नामनी पहेली पृ-  
थग्निमां चीसलाख नरकावासा ठे, चीजी नरकचूमिमां पचवीशलाख नरकावासा ठे,  
चीजी नरकचूमिमां पनरलाख नरकावासा ठे, चोशी नरकचूमिमां दशलाख नरकावासा  
ठे, पांचमी नरकचूमिमां त्र्यशलाख नरकावासा ठे, उद्दी नरकचूमिमां पांचे उडा एकलाख  
नरकावासां ठे आने सातमी नरकचूमिमां पांच नरकावासा ठे, ए रत्नपत्तादि साते त्रु-  
मिठनी दरेकनी नीचे मध्यमां चिंशहजार यो जन्त जानाइमां घनाठिध आवेदो ठे,  
घनाठिधनी नीचे मध्यमां असंख्य योजन सुधी घनवात आवेदो ठे, घनवातनी।

नीचे असंख्य योजन सुधी ततुचात रहेलो ले अने ततुचात योजन सुधी आ-  
काश रहेहुं ले, ए मध्यनी जाडाइयी असुकमे लैंगा थता घनाडिध बिगेरे प्रांते कंक-  
णना आकारने धारण करी रहेला ले. रत्नप्रजा छूमिना प्रांतज्ञागमां परिघिनी पेरे  
फरता वलयाकारे रहेला घनाडिधनो विस्तार न योजननो ले, तेनी फरतुं महाचाततुं म-  
डळ साडाचार योजन ले अने तेनी फरतुं ततुचाततुं मंडळ दोह योजन ले, ए प्रमाणेना  
रत्नप्रजानी फरता मंडळना माननी उपरांत शक्करप्रजा छूमिनी फरतो घनाडिधमा  
योजननो त्रीजो ज्ञाग वधो ले. घनचातमां एक गाउ वधो ले अने एक गाउनो त्रीजो  
ज्ञाग ततुचातमां वधो ले, शक्करप्रजाना वलयना माननी उपरांत त्रीजो छूमिनी फर-  
ता मंडळमां पण एज प्रमाणे वधारो आय ले, एकी रीते पूर्वना वलयना मानशी परीना  
वलयोना प्रमाणमां सातमी छूमिना वलयसुधी वधारो आय ले. ए घनाडिध, महाचात अने  
ततुचातना मंडळो ऊंचाइमां पोत पोतानी पृथ्वीनी ऊंचाइना जेटलाज ले. एकी रीते ए  
सात पृथ्वी घनाडिध बिगेरे धारण करेली ले, अने तेमांज पाप कर्मने लोगचाना स्था-  
नकरुप नरकचावासाठे आवेला ले. ए नरकछूमिमां जेस जोस मीचे जळए तेम तेम या-

तना, रोग, शरीर, आयुष्य, लेखा, डुःख अने जयादिक अनुकम्भे वधता वधता ऐ  
एम निश्चय समजबुं.

रखप्रना ऊमि एक लाखने एंशीहजार योजन जाडाइसां रहेली ऐ, तेमांथी एक  
एक हजार योजन उंचे अने नीचे टोडी देतां वाकी रहेला चागनी अंदर जावनपतिझाना  
छुवनो रहेलां ऐ. ते जावनपतिझान द्विष्ण अने उत्तरदिशासां जेम राजमार्गमां मकानोनी  
पंकिझै हाय तेम पंकिवंध रहेला छुवनोसां रहे ऐ. तेमां मुगटमणिना चिन्हचाळा  
असुरकुमार जावनपति ऐ, कणाता चिन्हचाळा नागकुमार ऐ, वज्रना चिन्हचाळा वि-  
युतकुमार ऐ, गरुडना चिन्हचाळा सुवर्णकुमार ऐ, घटना चिन्हचाळा अग्निकुमार ऐ,  
अ श्वना चिन्हचाळा वायुकुमार ऐ, वर्षमानना लांठनचाळा द्वीपकुमार ऐ, मकरना  
चिन्हचाळा उदधिकुमार ऐ, केशरीसिंहना लांठनचाळा अन्तर्विना अने हाथीना  
चिन्हचाळा दिशीकुमार ऐ. तेमां असुरकुमारना चमर अने अलिनामे वे इंझो ऐ, नाग-  
कुमारना धरण अने चूतानंद नामे वे इंझो ऐ, हरि अने हरिसह नामे चिन्हकुमारना  
ने इंझो ऐ, सुवर्णकुमारना वेणुंदेव अने वेणुदाली नामना वे इंझो ऐ, अग्निकुमारना अ-

ग्निशिख अने अग्निसाग्रह नामना बे इङ्को ले, वायुकुमारना वेलंब अने प्रजंजन नामना बे इङ्को ले, स्तनित कुमारना सुधोष अने महोष नामना बे इङ्को ले, अग्निकुमारना जलकांत अने जलप्रज नामना बे इङ्को ले, द्वीपकुमारना पृष्ठ अने अवशिष्ट नामना बे इङ्को ले, अने दिक्कुमारना अमित अने अमितवाहन नामना बे इङ्को ले.

खलप्रजा चूमिना उपर सुकी दृधेवा हजार योजनमांची उपर अने नीचे सो सो योजन ढोडी देतां मध्यना आउसो योजनमां दक्षिणोतर श्रेणीनी अंदर आठ प्रकारना ठंयंतरोनो निकाय वसे ले, तेमां पिशाच ठंयंतरो कट्टवृक्षना चिन्हवाळा ले, छूत ठंयंतरो सुवासवृक्षना चिन्हवाळा ले, यक्ष ठंयंतरो वटवृक्षना चिन्हवाळा ले, राक्षस ठंयंतरो सद्योगना चिन्हवाळा ले, किन्नर ठंयंतरो अरोक्तवृक्षना चिन्हवाळा ले, किंपुरुष ठंयंतरो चंपकवृक्षना चिन्हवाळा ले, महोरग ठंयंतरो नागवृक्षना चिन्हवाळा ले, अने गंधर्व ठंयंतरो तुंवरवृक्षना चिन्हवाळा ले, तेमां पिशाच ठंयंतरोना काळने महाकाळ नामना इङ्को ले, शून ठंयंतरोना सुरुप अने प्रतिरूप नामना इङ्को ले, यक्ष ठंयंतरोना पूर्णजद अने माणीजद नामे इङ्को ले, राक्षस ठंयंतरोना जीम अने महानीम नामे इङ्को ले,

कित्वर दंयतरोना किन्नर अने किंपुरुण नामे इङ्को रे, किंपुरुण दंयतरोना सप्तपुरुष अने  
महापुरुष नामे इङ्को रे, महोरग दंयतरोना अतिकाय अने महाकाय नामे इङ्को रे,  
अने गंधर्व दंयतरोना गीतरनि अने गीतपशा नामे इङ्को रे, आत्मी रीते दंयतरोना  
सोल इङ्को रे.

रत्नप्रक्षा चूमिना मूकी दीधेदा सो योजनमांशी उपर अने नीचे दश दश यो-  
जन ठोड़ी देतां चाकी रहेदा मध्यना औँशी। योजनमां दंयतरोनी चीजी आउ निकायो  
रहेली रे, तेमना अपहृति, पंचप्रङ्गस्ति, क्षुपिचादित, चूतवादित, कंदित, महाकं-  
दित, कृपांड अने पञ्चक ए आउ नासो रे, ते दरेकना थे वे इङ्को रे, तेमना संनिहित ने  
समान, खातु ने विधातुक, क्षुपि ने क्षुपिपाल, ईश्वर ने महेश्वर, सुवर्तसक ने विशाल,  
हास ने हासरति, श्वेत ने महा श्वेत, पचन अने पचकाश्रिप एवां नाम रे.

श्वलप्रसाना तळनी। उपर दशो नश्वन आठसो योजन लडप ल्यारे उमोतिष्क मंडल  
आने रे, प्रथम ताराउ रे, तेनी उपर दश योजने सूर्य रे। सूर्यनी उपर औंशी योजने  
चंड रे, तेनी उपर विश योजनमां ग्रहो रहेला रे, ए प्रमाणे जाडाइमां एकसो दश

यो जनसां ज्योतिलोक रहेहो छे. जंबुद्धीपना मध्यमां सेरुपर्वतश्ची आगयारसोने एकविश  
योजन ठेडुँ मेरुने नहीं स्पर्श करतुं मंडलाकारे रही सर्वे दिशामां ठयास थ्रइ रहेलुं ज्यो-  
तिप्रचक्क जम्ब्या करे छे, फक्त एक झुचनो तारो निश्चल छे. ते ज्योतिष्ठ्यक लोकना अंत  
चागश्ची आगयारसोने आगयार योजन अंदर रहीने लोकांतने नहीं स्पर्श करतुं मंडला-  
कारे रहेलुं छे. नहुओमां सर्वती उपर स्वाति नक्कन छे, अने सर्वती नीचे जरणी नक्कन  
छे. सर्वश्ची दक्षिणमां मूल नक्कन ढे अने सर्वश्ची उत्तरमां अनिजित नक्कन ढे. आ जंबु-  
द्धीपमां वे चंद्र अने वे सूर्य छे, लवणोदधिमां चार चंद्र अने चार सूर्य छे, धातकीखंडमां  
चार चंद्र अने चार सूर्य छे, काळोदधिमां बैतालिंग चंद्र अने बैतालिंश सूर्य छे, पुष्करा-  
द्धमां बौतेर चंद्र अने बौतेर सूर्य छे, एकी रीते अहोहीपमां एकसोने बन्नीस चंद्र अने  
एकसो बन्नीस सूर्य रहेहो छे. तेमाना एक एक चंद्रने अल्यासी ग्रहो, अ ल्याविशा न-  
क्कनो अने भासर हजार नवसोने पंचोतेर कोटाकोटी ताराउनो परिचार छे. चंद्रनुं  
विमान विहतारमां अने लंचाइमां एक योजनना एकसठ जाग करीए तेवा उपच जा-  
गानुं छे, सूर्यनुं विमान तेवा अ फतालीश अंशोनुं लांबुं पहोलुं छे, ग्रहोनां विमान अरु

योजनां रे, अने नक्षत्रोनां विमान एक एक गाउनां रे. सर्वथी उड्कुट्ट आयुष्यचाला  
तारानुं विमान अरुद्धा कोशानुं रे अने सर्वथी जघन्य आयुष्यचाला तारानुं विमान पांचसो  
धनुपनु रे. ते विमानो उच्चाइमां महेत्रनी उपरना जागमां पिशताळीस लाख योजनमां  
सर्वत्र लंचाइ करतां अरथा प्रमाणमां रे. ते सर्व विमानोनी नीचे पूर्व तरफ सिंहो रे, दक्षिण  
तरफ हाश्रीरे, पश्चिम तरफ बुधलो रे, अने उत्तर तरफ अश्वो रे. तेरे चंद्रादिकना  
विमानोना वाहनो रे. तेसां चंद्रना वाहनभूत सोऽङ्गहजार आजियोगिक देवतारे रे,  
ग्रहना आठहजार रे, नक्षत्रना चार हजार रे, अने ताराउन्ना वे हजार आजियोगिक  
देवता रे. पोताना रसथीज गति करनारा चंद्रादिकना विमाननी नीचे तेरे आजियोगिक  
कर्मचरे करीने निरंतर वाहनरूप यस्तै रहे रे.

मानुषोन्तर पर्वतनी वहार पचास पचास हजार योजने परस्पर अंतरित श्रवेदा सूर्य अने  
चंद्र दिश्यरपणे रहेला रे, तेमनां विमान मनुष्य कोत्र संचंधी चंद्र सूर्यना मानशी अरधा  
प्रमाणचालां रे. अनुक्रमे द्वीपोनी परिधिनी वृद्धिधी लेमनी संख्या वधती जाय रे.  
सारी देशयाचाला अने ग्रह नक्षत्र तया ताराउंची परिचारित श्रवेदा संख्यारहित ( अ.

संख्या ) एवा सूर्यने चंडो घंटाने आकारे मनोहर लागे तेवी रीते रहेला ले, अने तेज्ज स्वयंश्रैरमण समुद्रनी अचधि करीने लहूलक ह योजनवडे अंतरित थेला पोत पोतानी चंकितवडे हमेशां इथर रहेला ले.

मध्यदोकमां जंबुद्धीप अने लवण समुद्र विग्रे सारा सामोचाला असंख्य दीपो अने समुद्रो एक बीजार्थी बमणा बमणा विस्तारमां रहेला ले. पूर्वदा पूर्वदा दीपोने समुद्रो बीटीने रहेला होचार्थी तेज्ज वशयना आकारचाळा ले, तेमां स्वयंच्च तामे महोदधि ठेढ़ो ले. जंबुद्धीपनी मध्यमां सुवर्णना स्याळनी जेचो गोळाकारे मेलपर्वत रहेलो ले, ते पृथ्वीतदनां नीचे एक हजार योजन चुमिमां उंझो रहेलो ले अने नवाणु हजार योजन उंचो ले, दश हजार योजन पृष्ठनीने तले विस्तारचाळो ले अने उपर एक हजार योजन विस्तारचाळो ले, त्रण दोकार्थी अने त्रण कांडधी ते पर्वत विशक थेलो ले. सुमेह पर्वतनो पहेलो कांकु शुक्र पृथ्वी, पाषाण, हीरा अने शार्करार्थी जरपूर ले, तेज्ज एक हजार योजन प्रसाण ले. ते पछी तेनो बीजो कांकु त्रेसठ हजार योजन सुधी जात-चंत रुपुं, इफाटिक, अंकरल, अने सुवर्णवे चरपूर ले. मेलनो त्रीजो कांकु भर्तीश हजार

योजनामें रहे, ते सुवर्ण शिक्षामय रहे, अने वैद्यरत्नमी तेनी उपर सुंदर चूलिका उंचाइमां चालीस योजन रहे. मूलमां तेनो विस्तार चार योजन रहे, मध्यमां आठ योजन रहे अने उपर चार योजन रहे. मेरुपर्वतना तळमां जडशाळ नामे वन वलयाकारि रहेलुं रहे. जडशाळ वनश्री पांचसो योजन उंचा जडप त्योरे मेरुपर्वतनी पहेली मेलवला उपर पांचसो योजनना फरता विस्तारवालुं बीजुं नंदन नामे वन रहे, ते पठी सारीवाराठ हजार योजन जडप त्योरे बीजी मेलवला उपर तेटखाज प्रमाणनुं बीजुं सौमनस नामे वन रहेलुं रहे, ए सौमनस वनश्री उत्तीरा हजार योजन जडप त्यारे बीजी मेलवला उपर सैलने माथे पांक नामे चोथुं सुंदर वन आवेलुं रहे, चूलिकानी करतुं ते चारसोने चोराणु योजनना फरता विस्तारवालुं वलयाकारि रहे.

आ ऊद्धीपमां सात संझो रहे. तेमनां चरत, हैमनं, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, हेरापवृत अने प्रवत, एवां नाम रहे. दक्षिणमां अने उत्तरमां ए केद्रोना जुदा करनारा वर्षधर पर्वतो रहे. तेमनां हिमवान, महाहिमवान्, निषध, नीबन्धत, रुक्मी अने गिखरी एवां नाम रहे. ते पर्वतो मूलमां अने टोचे दुष्प विस्तारगी योने रहे, तेमां प्रगम

सुवर्णीनी अंदर पचनीश योजन उंको सुवर्णमय हिमवंत नामे पर्वत रहे, ते सो योजन उंचो रहे. बीजो महा हिमवान् पर्वत उंकाइमां अने उंचाइमां तेथी बमणो रहे अने ते अर्जुन जातिना सुवर्णनो रहे. तेनाशी बमणा प्रमाणवाळो ब्रीजो निषध पर्वत रहे, ते सुवर्ण जेवा वर्णनो रहे. चोशो नीलवंत पर्वत प्रमाणमां निषध तुद्य रहे अने ते वैद्युतमणिनो रहे. पांचमो लक्षी पर्वत रुद्रमय रहे अने प्रमाणमां महा हिमवंत तुद्य रहे. छठो शिखरी पर्वत सुवर्णमय रहे अने प्रमाणमां हिमवंत तुद्य रहे. ते सर्वे पर्वतो पार्श्व ज्ञागेमां चिच्चत्र प्रकारता मणिठेशी शोजे रहे. कुट हिमवंत पर्वतनी उपर एक हजार योजन दाँबो अने पांचसो योजन विस्तारवाळो पद्म नामे एक मोटो ऊह रहे. महा हिमवंत पर्वत उपर महापद्म नामे ऊह रहे पद्माऊहशी लंबाइमां अने विस्तारमां बमणो रहे. तेनाशी बमणो लिंगिनि नामे ऊह निषध पर्वत उपर रहेहो रहे. तेना जेवोज केसरी नामनो एक ऊह नीलवंत निरि उपर आवेदो रहे. महा पद्म ऊहनी तुद्य महापुंकरीक ऊह लक्ष्म पर्वत उपर रहे, अने पद्माऊहशी ऊह पुंकरीक ऊह शिखरी पर्वत उपर रहेहो रहे.

ए पद्मादिक ऊहेमां जायनी अंदर दशा योजन उकां गयेहां एवां चिकस्वर कमळो

रहंतां रे, ए ठग इहोमा श्री. ही, धूनि, कोई अर्त लकड़ी ए उ देवीउ अनुकमे पठयोपम आशुष्यवाली रहे रे. ते देवीउ सामानिक देवो, त्रण पर्षदाना देवो, आत्म रक्षको अने सेन्य सहित रे.

जरनकेवरनी अंटर गंगा अने सिंधु नामे मोटी बे नदीउ रे, हैमवंत केवरमा रो-  
हिता अने रोहिताशा नामनी बे नदीउ रे, हरिवर्ष केवरमा हरिसज्जीवा अने हरिकांता  
नामे बे नदीउ रे, महाविदेह केवरमा सीता अने सीतोदा नामे बे मोटी नदीउ रे,  
सम्यक केवरमा नरकांता अने नारीकांता नामनी बे नदीउ रे, हैरण्यवंत केवरमा इवण्ण  
कुआ अने रुद्रकृता नामनी बे नदीउ रे, अने ऐरवत केवरमा रक्ता अने रक्तावती ना-  
मनी बे नदीउ रे. तेवरमा पहेली नदीउ पूर्व समुद्रमा जइने मले रे, अने बीजी  
नदीउ पश्चिम समुद्रमा जइने मले रे. तेमां गंगा अने सिंधु नदी चौदू हजार नदीउए  
परनेरेखी रे, सीता अने सीतोदा नदीउ विना दरेक बबे. नदीउ तेयी वसणी वसणी  
नदीउना परिवारवाली रे, उत्तरनी नदीउ दक्षिणी नदीउ लेटलाज परिवारवाली रे,  
सीता अने सीतोदा नदी पांच दाल अने बत्तीस हजार नदीउना परिवारवाली रे.

नरत कै त्रनी पहोळाइ पांचसो भविस यो जन अने यो जनना उंगणीश जाग करीए तेचा  
उ जाग (उ कळा) नी ले. आ नुकमे वमणा. वमणा. विद्वारवाळा पर्वतो अने देवतो महा-  
विदेह कैंत सुखी ले. उत्तर वाजुना वर्षधर पर्वतो अने देवतो दक्षिणा वर्षधर पर्वतो  
अने देवतोनी जेटदाज. प्रमाणवाळा ले. ए प्रमाणे वधा. वर्षधर पर्वतोनुं अने खंडोनुं प-  
माण समजनुं. निषधाडीयी उत्तर तरफ अने मेरुथी दक्षिण तरफ. विद्वात्पत्र. अने सौ-  
मनस तामे पूर्व पश्चिममां ले पर्वतो ले, तेमनी हाथीना दांतनी जेवी आकृति ले अने  
लेवटे सेरु पर्वतश्री जग. स्पर्श कर्या विना लेटे रहेला ले. ए बजेनी मध्यमां देवकुर ना-  
मनुं युगलिआउं कैंत ले, तेनो विहङ्कंज (उत्तर दक्षिण पहोळाइ) अग्नयारहजार आउरशो  
ने बेताकीश यो जन ले, ते देवकुर देवतोदा नदीयी चेदायदा पांच झहो ले. ते  
पांचे ऊहनी वज्जे वाजु दशा सुवर्णना पर्वतो ले. तेनी एकत्र गणनी करवायी सो.  
स्वर्णगिरि आय ले. ते देवकुरमां सीतोदा. नदीना फूर्व अने पश्चिम तट उपर. चित्रकूट  
अने विचित्रकूट नामे ले पर्वतो ले. ते उंचा एक. हजार यो जन ले, चूमि उपर पहोळा  
पण तेटदाज ले अने उपर विस्तार तेशी अर्धी (५००). यो जन ले. मेरुशी उत्तरमां अने.

तीखंन गिरियी दक्षिणां गंधसाइन अने माहवत्ति नामे वे पर्वतो हाथीदांतने  
आकारे रहेता ले, ते वे पर्वतोनी अंडर सीता नदीयो जित्यथयेता पांच दृहो ले, तेती  
पण वत्रे वाजु दश दश होतायी एकंदर सो सुवर्णता पर्वतो आवेला ले तेयी उत्तर कुरु  
देवत घर्णु रमणिक लागे ले. ते सीता नदीना वत्रे तट उग्र यमक नामता सुवर्णता वे  
पर्वतो रहेता ले, ते विचित्रकृष्ट अने चित्रहृष्टनी जेन्द्रला ज प्रसाणनाला ले. देवकुरु ने  
उत्तरकुरुनी पूर्वमां पूर्वविदेह आवेल ले अने पश्चिममां अपरविदेह आविज्ञ ले, ते परा  
इपर केन्द्रांतरनी जेम रहेता ले. ते वत्रे विजागमां परस्पर, संचार रहित अने नदीज  
तया पर्वतोयी विजाग पामेता, चक्रवर्तीने विजय करता योरय सोऽङ्ग विजयो ले.  
तेमां कब्ज, महाकठ, सुकठ, कड्डवान, आचर्त, मंगलवाचर्त, पुकळ अने पुङ्कलवाचती ए  
आरु विजय पूर्व महाविदेहमां उत्तर तरफ ले. वत्स, सुवर्णस, महावत्स, रम्यवान्त, रम्य,  
रम्यक, रमणीय अने मंगलवाचती ए आरु विजय दक्षिण तरफ ले. पञ्च, सुपञ्च, महापञ्च  
पद्मावती, शंख, कुमुद, नलिन अने नलिनवाचती ए आरु विजय पश्चिम महा विदेहमां  
दक्षिण तरफ ले; अने वृष्ट, सुवर्णप्र, महावती, वद्यु, सुवद्यु, मंभिज्ञा अने ग-

धिलावती ए आरु विजयो भगवारुतरफ़ हे.

ज्ञरत्खंकनी मध्यमां दक्षिणांक्ष अने उत्तरार्द्धने जुद्दा पाकनारे वैताङ्कें पर्वत  
आवेलो हे, ते पर्वत पूर्व अने पश्चिमे समुदपर्यंत विस्तारमां हे, ठ योजन अने एक  
कोश पृथ्विमां ऊंझो हे, पचास योजन विस्तारमां अने पचवीश योजन ऊंचो हे. पूर्वी  
शी दश योजन उपर जइए त्यारे तेनी उपर दक्षिण अने उत्तरमां दश दश. योजन  
विस्तारचाळी विद्याधरोनी वे श्रेणीहे हे. तेमां दक्षिण श्रेणीमां विद्याधरोना गाढ़  
सहित पचास नगरो हे अने उत्तर श्रेणीमां साठ नगरो हे. ते विद्याधरोनी श्रेणीनी उप  
दश योजन जइए त्यारे तेटलाज विस्तारचाळी नयंतरोना निवासयी शोचित एवी  
वेते बाजु मळीने वे श्रेणीहे हे. ते नयंतरोनी श्रेणीहे ती उपर पांच योजन जइए लारे तेनी  
उपरना नव कृट आवेला हे. एवीज रीते ऐरवत दोन्हमां पण वैताङ्क रहेलो हे.  
जंबूद्धीपनी फरती किद्यारुप वज्जमय जगती आठ योजन ऊंची हे, ते जगती  
मूलमां चार योजन पहोळी हे, मध्य ज्ञागमां आठ योजन हे अने उपर चार योजन हे.  
तेनी उपर जाळकटक हे ते वेंगाऊ ऊंचो हे. ते विद्याधरोनुं अद्वितीय मनोहर कीका

स्थान ठे. ते जालकटकनी पण उपर देवताऊनी जोग चूमिलप 'पञ्चवरा' नामे एक सुंदर वेदिका ठे, ते जगतिने पूर्वादि दिशाओमां अनुकमे विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित नामे चार ढार ठे.

चूद हिमवान् अने महा हिमवान् पर्वतनी मध्यमां ( हिमर्वत केऽन्नमां ) शब्दा-पाती नामे वृत्तेवताहय पर्वत ठे, शिखरी अने रुक्मी पर्वतनी वचमां विकटागती नामे वृत्तेवताहय पर्वत ठे, महा हिमवान् अने निषध पर्वतनी मध्यमां गंधापाती नामे वृत्तेवताहय पर्वत ठे, अने तीलवत तथा रुक्मी पर्वतनी वचमां माडवशान् नामे वृत्तेवताहय पर्वत ठे. ते सर्व वेताहय पर्वतो पाखाना जेवी आकृतिचाळा ठे अने एक हजार यो-जन ऊऱा ठे. ऊऱुदीपनी फरतो दक्षण समुद ठे, ते विस्तारमां जंजदीपशी वमणो ठे. मध्यमां एक हजार योजन ऊऱो ठें. वेत्र तरफनी जगतीशी अतुकमे उतरता उतरता पंचाणि हजार योजन ऊऱए लां सुंधी ऊऱाइमां अने ऊऱाइमां तेऊऱ जख वधतुं ठे. मध्यमां दशहजार योजनमां सोळहजार योजन ऊऱी ए लकण समुदनी पाणिनी शिखा ठे. तेनी उपर वे गाऊ सुंधी ऊऱी जखती वेळ एक दिवसमां वे चखत ठे. ते लकण स-

मुद्दनी। मध्यमां पूर्वादि दिशाना क्रमथी वडवामुख, केवृप, वृप अनेक इश्वर एव नामना मोटा माटलानी जेवी आकृतीवॉल्डा। चार पाताला कदमशा थे। ते मध्यमां पेटाहो एक दाख योजन पोहोला थे अनेकांख योजन उंका थे। एक हजार योजन जाडी वज्ररत्ननी ते-मनी ठीकरी थे। निचे अनेक उपर दश हजार योजन पहोली थे, तेमां बायु त्रीजे अंश रहेक्ष थे, बाकीना देव ज्ञानमां जळ रहेकु थे अने ते कांगा विनाना मोटा माटलाना जेवा आकारना थे। ते कलशामां काळ, महाकाळ, वेङ्गंव अने प्रजंजन नामना देवता अनुक मे पोतपोताना कीडा आवासमां रहे थे। ते चार पाताल कलशाना आंतरामां सातहजार आठसोने चोराशी नहाना कर्बंशा थे, ते एक हजार योजन छूमिमां उंका तथा पेटाखे पहोला थे। ते मनी दश योजननी ठीकरी जारी थे अने उपर तथा निचे एकसो योजन पोहोला थे। अने चायु के तेना मध्यजागनुं बायु मिश्रजळ उबळे थे। ए समुद्रनी वेदने अंदरथी धारण करनारा बेताळीश हजार नागकुमार देवता हमेशां रक्षकनी पेरे रहेथा थे। बहारथी वेदने धारण करनारा बोतेरहजार देवता थे अने मध्यमां उक्ती शिखा उपरनी से गाउपर्यं न वेष्टने रोकनारा सावहजार देवो थे। ते लक्षण समुद्रमां गोस्तपू,

ऊँठ काजास, ऊँख अने उटकसीम पा नामना आनुकमे सुवर्ण, अंकरत, रौप्य अने सफाउ-  
टिकना चार बेलधर पर्वतो डे. गोहतूप, शिवक, ऊँख अने मनोहृद नामना चार देवता  
उन्होंने तेमां आश्रय डे. ते वैताळीश हजार यो जन समुद्रमां जइए त्यारे चारे दिशाए  
चार आवेदा डे तथा चार विदिशाउंसां कक्षाटक, कार्दमक, कैलाश अने अरुणप्रज्ञ  
नामे चार सर्व रक्षमय एवा सुंदर आनुवेलंभर पर्वतो डे. ते पर्वतो भपर कक्षाटक, विद्यु-  
ज्ञिनहृ, कैलाश अने अरुणप्रज्ञ नामे तेना स्वामि देवो निरंतर वसे डे. ते सर्व पर्वतो एक  
हजार लातसोने एकवीश यो जन ऊँचा डे, एक हजारने वानीश यो जन सूँडमां पहोळा  
डे अने चारसोने चोवीश यो जन शिखर भपर पहोळा डे. ते सर्व पर्वतोनी उपर तेना  
स्वामी देवताउना यो जनिक प्राप्तादो डे. वळी चार हजार यो जन समुद्र तरफ जइए  
त्यारे पूर्व दिशा संबंधी वे विदिशामां ले चंड द्वीप डे, ते विस्तारमां अने पहोळाइमां  
पूर्व प्रसाणे डे. अने तेटलाज प्रसाणचाला ले सूर्य द्वीपे पश्चिम दिशा संबंधी ले विदि-  
शामां डे अने सुस्थित देवताना आश्रयन्वृत गौतमद्वीप ते वेनी वचमां डे. उपरांत ल-  
कण समुद्र संबंधी शिखानी आ वाजु अने चहारनी बाजु चालनारा चंडो अने सू-

योना आश्रयहप द्वीपो रे, तथा तेनी उपर तेमना प्रासादो रहेदा रे, ते लकण समुद्र  
लकण रसवाळो रे.

लकण समुद्रनी फरतो तेनार्थी वसणो पहोळो धातकीखंड नामे बीजो द्वीप रे.  
जंबुदीपमां सेहपवत हेत्रो अने वर्षधर पर्वतो जेटला कहेदा रे तेशी बसणा तेज नामना  
धातकीखंडमां रे, वधारामां उरार अने दक्षिणमां धातकीखंडनी पहोळाइ प्रमाणे वे  
इषुकार पर्वतो आवेदा रे, तेनावडे विजाग पामेदा पूर्वार्ध अने पश्चिमार्दमां जंबुदी-  
पनी जेटली संख्यावाळा हेत्रो अने पर्वतो रे, ते धातकीखंडमां चकना आरा जेवा आ-  
कारवाळा अने निषध पर्वत जेटला उंचा तथा काळोदधि अने लकण समुद्रने फरशीने  
रहेदा वर्षधर पर्वतो तथा इपुकार पर्वत रे अने आराना आंतरानी जेवा दोत्रो रे. धात-  
कीखंड द्वीपनी फरतो काळोदधि नामे समुद्र आवेदो रे, ते आठ लाख योजनना वि-  
स्तारवाळो रे, तेनी फरतो पुष्करवर द्विपार्द्ध तेटलोज प्रमाणवाळो रे. धातकी-  
खंडमां इषुकार पर्वत सहित मेरु विग्रेनी संख्या संबंधी जे नियम कहेलो रे,  
तेज नियम पुष्करार्दमां पण रे, अने पुष्करार्दमां दोत्रादिकना प्रमाणनो नियम

धातकीवंदना केवादिकना विनागश्चि वसणे थे. धातकीखंक अने पुष्करार्द्धमां  
मल्हीने चार नाना मेरु पर्वतो थे. ते जंबुद्धीपना मेरुश्चि पंदरहजार योजन ठेऊ उंचा अने  
उसो योजन ठेऊ विस्तारवाका थे. तेनो प्रथम कांक्ष महामेरु तेटलोज थे. वीजो कांक्ष  
सात हजार योजन ठुंगो अने त्रीजो कांक्ष आठ हजार योजन ठुंगो थे. तेसां लक्षाले  
अने तंदनवन मुख्य मेरुनी प्रमाणेज थे. नंदनवनश्चि साक्षिप्तवाचन हजार योजन  
जाइग ल्याए पांचसो योजन विशाळ पट्टु सौमनस नामे बन थे, एना उ-  
पर अल्याविस हजार योजन जातां पांचुक बन थे, ते मध्येनी चुलिका फरतुं  
चारसोने चोराण्य योजन विस्तारमा थे. तेनो उपर अने नीचे महामेरुना जेट-  
लोज विकंक्त थे अने तेटलीज अवगाहना थे तथा मुख्य मेरुनी जेटलाज प्र-  
माणवाकी तेनी चुलिका थे. एकी रीने मानुषदेवमां अढीद्वीप, वे समुद्र पां-  
क्षीस ढंगो, पांच मेरु, त्रीस वर्षभर पर्वतो, पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु अने एकसो  
ने साह विजयो थे. पुष्करार्द्धीपनी करतो मानुषोत्तर नामे पर्वत थे, ते मनुज्य लोकनी  
वहार शाहैरना किहुनां जेम वर्तुवाकारे रहेलो थे. ते सुवर्णनो थे अने चाकीता पुक-

राहुमां सत्तरसोने एकविस योजन उंचो ले, चारसोने बीस योजन पृथ्वीमां रहेलो ले, एक हजारने बाविस योजन नीचे विस्तारमां ले, सातसोने ब्रेवीस योजन मध्यज्ञागे विस्ता रमां ले अने चारसोने बोविस योजन उपर विस्तारमां ले. ते मानुष्योन्तर पर्वतनी बहार मनुष्योन्तु जन्म मरण थारुं नशी. तेनी बहार गयेला चारणमुनि आदिक पण बहार मरण पामता नशी तेशी घनुं नास मानुषोन्तर ले. एनी बहारनी चूमिपर बादराम्भ, मेघ, विद्युत, नदी, अने काळ विग्रे नशी. ते मानुष्योन्तर पर्वतनी अंदरनी बाजुए (५६) अंतरढीपो अने पांक्रीस देवी ले, तेमांज मनुष्यो उत्पन्न थाय ले; परंतु कोइए सं-हरण करवाशी, विद्याना बळशी, तथा लड्हना ये गशी मेरुपर्वत विग्रेना शिखरो उपर अडी ढीपमां अने बंने समुद्रमां सर्वेन्न मनुष्यो लाले ले. तेमना चरत संबंधी, जंगु-ढीप संबंधी अने लवणसमुद्र संबंधी एम सर्व कोट, ढीप, अने समुद्र संबंधी संझालेदे करीले ऊदा ऊदा निराग कहेवाय ले.

मनुष्योना आर्य आने म्होड्ह एवा ले जोट ले. आयो दोत्र, जाति, कुल, कर्म, शिदप अने जाषाना नेदथी ड प्रकारना ले. कोत्रायो पंदर कर्मचूमिमां उत्पन्न थाय ले, तेमा

आ जरतहेत्रमा साक्षीपचक्षीश देशमां उत्पस्त थयेला आर्य कहेवाय ले. ए आर्यदेश  
पोताना नगरोशी आवी रीते उल्लङ्घाय ले. राजगृही नगरीशी मगधदेश, चंपा नगरीशी  
अंगदेश, तम्भलिसीशी काशीदेश, कांचनपुरीशी कालिंगदेश, सा-  
केत ( अयोध्या ) पुरीशी कोशलदेश, हस्तनापुरीशी कुरुदेश, शौर्यपुरीशी कुशार्तदेश,  
कांपिट्यपुरी पंचालदेश, अहिल्लजापुरीशी जंगलदेश, मिशिलापुरीशी विदेहदेश,  
द्वारावती ( ढारका ) पुरीशी सौराष्ट्र ( सोरव ) देश, कोशांवीपुरीशी वत्सदेश,  
जहिलपुरी मत्यदेश, नांदिपुरीशी संदर्भदेश, पुनरुड्डापुरीशी वरुणदेश, वैराट-  
नगरीशी मत्स्यदेश, शुक्लिमतीपुरीशी चैदीदेश, मृतिकावतीशी दशाण्डदेश, वीतनग-  
पुरीशी सिंधुदेश, मशुरापुरीशी सौंचीरदेश, अपापापुरीशी सूरसेनदेश, चंगीपुरीशी  
मासपुरी वर्तदेश, श्रावस्तीपुरीशी कुणालदेश, कोटीवर्धपुरीशी लाटदेश अने श्रेतंची-  
पुरीशी केतकार्द्देश, एम साक्षीपचक्षीश आर्यदेशो आ नगरोशी उल्लङ्घाय ले. तीर्थकर,  
चक्कार्ति, वासुदेव अने बल्लसङ्कोना ते देशोमांज जन्म थाय ले. दद्वाकुचंश, इतावंश,  
विदेहवंश, कुरुवंश, उपवंश, जोजवंश अने राजन्यवंश, ए विग्रे चंशोमां उत्पन्न अयेला

मनुष्यो जाति आर्ये कहेवाय ले। सप्ता कुलगर, चक्रवर्ती, वासुदेव अने बलजद तथा तेमनी ब्रीजी पांचमी के सातमी पेढ़ीयी चालेला शुद्धनंशमां उत्पन्न थेयेला होय ते कुल आर्य कहेवाय ले। पूजन करवून ते करावबुँ, शास्त्र जणां ने जाणावां, तेथी अने ब्रीजा शुद्ध प्रयोगधी जेऊ आजीचिका चलावे ते कर्मार्थ कहेवाय ले। शोका पाप व्यापार वाळा, वस्त्र वण्णतारा, वस्त्र तृणतारा, कुंजार, नापित अने देवल (पूजारा) विगेरे शिवधार्य कहेवाय ले। जे उंची जाषाना नियमवाळा वण्णांशी पूर्वोक्त पांचे प्रकारना आयोना उद्यवहारने कहे ले, ते जाधार्य कहेवाय ले। म्हेड्होमां शाक, यवत, शबर, बार्बर, काया, मुँक, उद्धुगोरु, पत्कणक, आरपाक, हूण, रोमक, पारसी, खस, खासिक, कांचिलिक, लकुल, जिल्हा, अंध, तुक्कस, पुलिंद, कोँचक, च्रमरत, कुंच, चीन, चंक, मालव, ऊर्विक, कुलझ, किरात, कैकय, हेयमुखा, हाथीमुखा, अजमुखा, अश्वकणी, गजकणी, अने बी जा पण अनायों के जेऊ धर्म पवा अद्वारोने पण जाणता नयी, तेमज धर्म तथा अधर्मने पुश्यक् समजता नयी तेऊ म्हेड्ह कहेवाय ले। चीजा अंतरद्वीपोमां मनुष्यो भे तेऊ पण युगंगलिया होवांयी धर्म अधर्मने जाणता नयी। ४ अंतरद्वीप उपज भे, तेमां

आल्याकील द्वीपो कुद्रु द्विमालय पर्वतने पूर्व अनें पश्चिम नानुने रेने इशानकृष्ण विगोरे  
चार विदिशासां लवण समुद्रसां नीकलेन्नो दाढाउनो उर रहेका रेने. तेसां इशानकृष्णमां  
लंगुद्धिपत्ति जगतिशी ब्रह्मसो योजन लवण समुद्रमां जाइए लां तेट्कोज लांबो अनें प-  
होलो एको प्रथम “एकोरुक” नामे अंतरद्वीप रेने. ए ह्वीपमां ते द्वीपता नामशी उल्खाता  
सवै अंग उपांगमां सुन्दर एचा मनुष्यो रहेने फक्त एकोरुक द्वीपमांज नहि, पण वीजा वधा  
अंतरद्वीपोमां ते द्वीपता नामशी उल्खाता मनुष्यो रहेने रेने एस जाणुँ. अमिक्षण  
विगोरे वाकीनी ब्रह्म विदिशाउमां तेट्कील उंचाइए तेट्काज लांचा अनें पहोला आ-  
नापिक, दांगुक्किक, अनें वैषाणिक ए नामना अनुकमे द्वीपो रहेला रेने. ल्यार पठी जगतिशी  
चारसो योजन लवण समुद्रमां जाइए लां तेट्कील लंचाइ अनें तेट्काज विकंत-  
वाळा इशान विगोरे विदिशाउमां हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अनें शुकालकर्ण ए नामना  
अनुकमे अंतरद्वीपो रेने. ते पठी जगतिशी पांचसो योजन छूर तेट्कील लंचाइ  
अनें विकंतवाळा चार अंतरद्वीपो इशान विगोरे विदिशाउमां आदर्शमुख, मेघमुख,  
हयमुख अनें गजमुख नामना अनुकमे आवेला रेने. पठी उर्सो योजन छूर तेट्कील

लंचाइ अने विस्तारवाळा अश्वमुख, हस्तिमुख, सिंहमुख, अने ठयाघ्रमुख नामना  
अंतरद्वीपो आवेला छे. पठी सातसो योजन छर तेटलीज लंचाइ अने विस्तारवाळा  
अ शकर्ण, सिंहकर्ण, हस्तकर्ण अने कण्ठप्राचरण नामे अंतरद्वीपो आवेला छे. ते पठी  
आठसो योजन छर तेटलीज लंचाइए अने तेटलाज विकंचवाळा उडकामुख, विद्यु-  
जिठड, मेषमुख अने विद्युदंत ए नामना चार द्वीपो इशान विगेरे दिशाउमां अगुकमे  
रहेलाहे. ते पठी जगतिथी लचणोदधिमां नवसो योजन जातां तेटलाज विकंज अने  
लंचाइथी शोजता गूढदंत, घनदंत, श्रेष्ठदंत अने शुद्धदंत नामे चार अंतरद्वीपो  
इशान विगेरे दिशाना क्रमश्ची रहेला छे. एज प्रसाणे शिखरी पर्वत उपर पण अळ्याविस-  
द्वीप छे. एकी रीते सर्वे मालीने उपन अंतरद्वीपो छे.

मानुषोत्तर पर्वतनी पठी बीजुं पुष्करार्द्धनी फरतो ते आखा द्वीपशी  
बमणो पुष्करोदक समुद्र आवेलो छे. ते पठी चारुषीवर नामे द्वीप अने समुद्र आवेला  
छे. ते पठी द्वीरचर नामे द्वीप ने समुद्र छे, ते पठी द्वृतचर नामे द्वीप ने समुद्र छे. ते  
पठी इकुचर नामे द्वीप ने समुद्र छे. ते पठी आठमो नंदीश्वर नामे स्वर्गना जेवो द्वीप

आवेदो ठे. ए वल्युविलक्षणमां एकसौने त्रेसठ करोक तथा चौराशी लाख योजन ठे.  
ए द्वीप विविध जातिना उद्यानचाळो अने देवनाहने उपजोगनी छूमिरूप ठे; तेमज  
प्रजुनी पूजामां आसक्त अयेला देवनाहना आचागसनशी सुंदर ठे. एना मध्य प्रदे-  
शमां पूर्वादि दिशाहेमां अतुक्ते अंजन सरखा वर्णवाळा चार अंजन पर्वतो रहेला ठे.  
ते पर्वतो तलीए दशाहजार योजनशी काँइक अधिक विस्तारमां ठे, अने उपर एकह-  
जार योजन विस्तारचाळा ठे. तेमज कुदमेहना जेटला (४००० योजन) उंचा ठे. तेमा  
पूर्वमां देवरमण नामे, दक्षिणमां निलोयोत नामे, पश्चिममां स्वयंप्रज्ञ नामे अने भज-  
रमां रमणीय नामे अंजनाचद ठे. ते चार पर्वतोली उपर सो योजन लांचा, तेथी अर्द्ध  
विस्तारचाळा अने बोतेर योजन उंचां अहंतु तगवाननां चैलो ठे. ते दरेक चैलते चार चार  
द्वार ठे. ते सोल योजन उंचां ठे, प्रवेशमां आठ योजन अने विस्तारमां पण आठ योजन  
ठे. ते ढारो वेमानिक, असुरकुसार, नागकुमार अने सुवर्णकुमारना आश्रयरूप ठे. अने  
तेचेना नामशीज ते प्रव्यात ठे. ते चार ढारनी मध्यमां सोल योजन दांचाइबाली, तेट-  
लाज विस्तारचाळी अने आठ योजन उंची एक मणिपीडिका ठे. ते पीडिका उपर

सर्वे रक्षामय देवदुर्दक ले. ते पीतिकायी विस्तारमां अने उंचाइमां अधिक ले. दरेक देव-  
 हुंडकनी उपर झुप्पन, वर्द्धमान, चंद्रमान अने वारिषेण ए चार नामवाळी पर्युक्तआसने  
 वेरेकी, पोताता परिवारे सहित, रत्नमय शाश्वत अर्हतत्वी एकसोने आठ आठ सुंदर  
 प्रतिमाऊ ले. दरेक प्रतिमानी साथे परिवारचूत, बे ले नाग, यक्ष, शृत अने कुँकधारी  
 देवोनी प्रतिमाऊ ले. बे बाजु बे चामरधार प्रतिमाऊ ले, अने दरेक प्रतिमाना पृष्ठ जागे  
 एक एक उत्तधार प्रतिमा ले. दरेक प्रतिमानी समीपे धुपघटी माळा, घंटा, अष्टमंग-  
 लिक, ध्वज, उत्र, तोरण, चंगेरी, नाना पुष्प, पात्रो (पटलो) आसनो अने सोलपूर्ण  
 कलश तथा बोजा अलंकारो ले. लानी तलीआनी शूमित्रमां सुन्वण्ठी सुंदर रजताळा  
 वालुका ले. ते देवायतन प्रमाणेज तेली आगल सुंदर मुखमंडपो, पेहार्थमंफपो, अह-  
 चाटिका अने मणिपीतिका ले. लां रमणिक स्तूप प्रतिमा ले, सुंदर चैत्यघृहो ले, इंद्र-  
 ध्वजो ले, अने अगुक्कमे दिव्य बापिकाऊ ले, प्रत्येक अंजनादिकनी चारे दिशाउए  
 दाख दाख योजनना प्रमाणवाळी वापिकाऊ ले. एटले कुल सोळ वापिका ले. तोमना  
 नंदिषेण, अमोधा, गोस्तूपा, सुदर्शना, नंदोत्तरा, नंदा, सुनंदा, नंदिवर्कना, ज़दा,

विशाला, कुमुदा, पुंरिकीणीका, विजया, वैजयंती, जंयंती अपराजिता एवं  
नामो रे. ते प्रलेक वा पिकाउथी पांचसो योजन पड़ी अशोक, सप्तशुद्ध, चंपक अने  
आग्रह ए नामचालों मोटा उच्यानो रहेकां रे. ते पांचसो योजन विस्तारमां रे अने दाख  
योजन लांचां रे. ते दरेक वापिकाउनी मध्यम स्फाटिकमणिना, पालाता आकारता  
अने सुन्दर बेदिका तथा उथानोचाला सुशोनित दधिमुख पर्वतो रे. ते चोसर हजार  
योजन ऊंचा, एक हजार योजन ऊंका अने उपर तथा नीचे दशहजार योजनता विस्ता-  
रचाला रे. वापिकाउना आंतरामां वे वे रतिकर पर्वतो रे, एटले एकंदर बन्नीजा रतिकर  
पर्वतो रे. दधिमुख पर्वतो तथा रतिकर पर्वतो उपर अंजनगीरीनी जेम शा श्रवत अहं-  
तोनां चेल्यो रे. ते द्वीपनी निदिशाउमां चीजा चार रतिकर पर्वतो रे, ते दशहजार यो-  
जन लांचा तथा पहोला अने एकहजार योजन ऊंचा, शोकायमात, सर्व रलमय, दिठ्य  
अने ऊद्धरीना आकारचाला रे. तेमां दक्षिणमां रहेका सौधर्मेदना वे रतिकर पर्वतो  
अने उत्तरमां रहेका इशानेइना वे रतिकर पर्वतोनी आरे दिशाउमां तेमनी आउ आठ  
महादेनी उनी आउ आउ राजधानीरे रे, एटले कुद बन्नीश राजधानीरे रे. ते रतिकरथी

एक दाख योजन छूर अने एक दाख योजनना प्रमाणवाली (दाँची पढ़ोनी) तथा जिनावयोग्यी विज्ञुषित भे. तेना सुजाता, सौमनसा, अर्चिमाली, प्रत्याकरा, पद्मा, शिवा, शुचि, ठंयंजना, जूता, चूतंवंतसिका, गोस्तुपा, सुदर्शना, अमला, असरा, रोहिणी, नवमी, रत्ना, रत्नोच्चया, सर्वरत्ना, रत्नसंचया, वसु, वसुमित्रिका, वसुज्ञागा, वसुधरा, नंदोत्तरा, नंदा, उत्तरकुरु, देवकुरु, कृष्ण, कृष्णराजी, रामा अने रामकिता एवं नाम भे. ते नामो मूर्त्ति दिशाना क्रमश्चि जाणवां. आ नंदी श्वरद्धीपमां रहेखां जिनचैत्योमां सर्वं क्रुद्धिवाला देवताउ परिवारसहित श्रीमत अहृतोनी कट्ट्याणक तिथिर्वेष अष्टान्हिक उत्सव करे भे.

ते नंदी श्वरद्धीपती फरतो नंदी श्वर समुद भे, ते पर्डी आरुणद्धीप भे, अने तेनी फरतो आरुणोदधि नामे समुद भे, ते पर्डी आरुण वरद्धीप अने आरुणवर समुद भे, पर्डी आरुणाचासद्धीप अने आरुणाचास समुद भे, ते पर्डी कुंदलद्धीप अने कुंदलोदधि नामे समुद भे, अने ते पर्डी रुचक नामे द्धीप अने रुचक नामे समुद भे. एवी रीते प्रशस्त तामवाला अने एक प्रकथी बमणा बमणा प्रमाणवाला द्धीपो अने समुदो अनुकमे

रहेला रे. ते सर्वनी अंते स्वयं चूरमण नामे भेद्यो समुद रे.

पूर्वोक्त आठीद्वीपमां टेचकुरु अने उत्तरकुरु जेटला जागचिना पांच महाविदेह, पांच जरत, अने पांच ऐरवत् ए पंदर कर्मचूर्मिर्जे. काळोदधि, पुष्करोदधि अने स्वयं चूरमण ए ऋण समुद्र मीठा पाणीबाला रे. इनण समुद्र खारा पाणीनो रे, तथा वास्तुणोदधिनां पाणी विचित्र प्रकारनी मनोहर मदिरा जेवां रे. क्षीरोदधि खांक मिश्रित धीतो चोयो जाग जेसां रे एवा गायना डुधता जेवा पाणीचाळो रे. घृतवर समुद्र उकाळेला गायना धीना जेवो रे, अने धीजा समुद्रो तज, यवाइची, केसर ने मरीना चूर्ण मिश्रित चोया जागचाला इक्कुरसना जेवा रे. लवणोदधि, काळोदधि अने स्वयं-चूरमण ए ऋण समुद्र मारला, काचवा विगरेशी संकीर्ण रे. ए सिशायना वीजा स-मुद्रो मतस्य अने कूर्मादिशी संकीर्ण नशी (तेमां थोका अने नाना मड्डादि रे). जंघुद्वीपमां जघन्ये तीर्थकरो, चक्रीन, वासुदेवो अने बळदेवो चार चार होय रे; अने उत्कर्पयी चोत्रीस जित अने त्रीस पाणी (चक्रवर्ती के वासुदेव) थाय रे. धात-कीखंड अने पुष्करार्क खंडमां एथी वसणा थाय रे.

ए तिर्यग् शोकनी उपर नवसो योजन न्युन सातराज ग्रमाणवाहो मोटी झटिक्कि-  
चाठो उर्फ़द्वाक ऐ. तेमां सौधम, इशान, सनकुमार, साहेन्द्र, ब्रह्म, लालक, शुक्र,  
सहस्रार, आनत, प्राणा, आरण अने अच्युत ए नामना वार कट्टो (देवद्वाक) ऐ,  
अने नवयेवेयक ऐ. ते ग्रैवेयकना सुदर्शन, सुप्रबल, मनोरम, सर्वजड, सुविशाळ,  
सुमन, सैमनस, ग्रीतिकर अने आदित्य एवां नाम ऐ. ते पठी पांच अनुत्तर वि-  
माने ऐ. तेनां विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध एवां नाम ऐ.  
तेमां प्रथमना चार पूर्व दिशाना क्रमशः चार दिशाए रहा ऐ, अने सर्वार्थसिद्ध  
विमान सर्वनी मध्यमां ऐ. त्यारवाद वार योजन उच्चे सिद्धशिला ऐ. ते पिस्तालिश  
बाह योजन दंबाइमां अने विस्तारमां ऐ, तेनी उपर त्रण गाउ पठी अनंतर चोथा गा-  
उना रठे अंशे लोकाश्र सुधी रिस्तना जीवो ऐ, आ संजूतखा पृष्ठीषी सौधर्म अने इशान  
कट्टप सुधी दोढ़ राजद्वाक ऐ. सनकुमार अने माहेन्द्रद्वाक सुधी अद्वी राजद्वाक ऐ,  
सहस्रार देवद्वाक सुधी पांचमुं राजद्वाक ऐ, अच्युत देवद्वाक सुधी छाँ राजद्वाक ऐ,  
अने लोकांत सुधी सातमुं राजद्वाक ऐ. सौधर्मकट्टप अने इशानकट्टप चंद्रमंकलना

जेवां वर्तुल रे, तेमां दक्षिणार्घ्यमां सौधर्मकद्यप अने उत्तरार्घ्यमां इशानकद्यप रे. सत-  
कुमार अने माहेंद्र ए वन्ने देवलोक पण तेमनी तुल्य आकृतिचाळां रे, तेमां दक्षिणा-  
र्घ्यमां सनलकुमार देवलोक रे अने उत्तरार्घ्यमां माहेंद्र देवलोक रे. लोकपुरुषनी कोणी-  
चाळा चागमां अने लोकना मध्यचागमां ब्रह्म देवलोक रे, तेनो स्वानि ब्रह्मेंद्र रे. ते-  
देवलोकना प्रांतचागमां सारस्वत, आदित्य, अग्नि, अरुण, गर्द्धतोय, तुषित, अठया-  
वाध, मरुत अने रिष्ट, ए नव जातिना लोकांतिक देवतारे रे. तेनी उपर लांतक कदप  
रे त्यां तेज नामनो इंद्र रे. तेनी उपर महाशुक्र देवलोक रे त्यां पण तेज नामनो इंद्र रे.  
तेनी उपर सहस्रार देवलोक रे त्यां पण ते नामनोज इंद्र रे. तेनी उपर सौ-  
धर्म अने इशान देवलोक जेवी आकृतिचाळा आनत अने प्राणत देवलोक रे.  
तेमां प्राणतकद्यपमां रहेनार प्राणत नासे इंद्र ते वन्ने देवलोकनो स्वामी रे. तेनी  
उपर तेवीज आकृतिचाळा आरण अने अच्युत नासे वे देवलोक रे. अच्युत देव-  
लोकमां रहेनार अच्युत नासे इंद्र ते वन्ने देवलोकनो स्वानि रे. ऐवेचकमां अने अगु-  
चरोमां अहर्मिंद्र देवतारे रहेला वे कदपे बनोदधिते आधारे रहेला रे, अने ते पठी ना

त्रण कढपो वायुने आधारे स्थिति करीने रहेलां छे. ते पठीना त्रण देवलोक घनोदधि अने घनवातने आधारे रहेलां छे, अने तेनी उपर सर्व देवलोक आकाशाने आधारे छे. तेमां इंद्र, सामानिक, नायिंद्रिया, पार्षद्य, अंगरक्षक, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्ण, आ-नियोगिक, अने किदिविषिक ए दश प्रकारना देवताऐ रहेला छे. सामानिक चनोरे सर्व देवताउना जे अधिपति ते इंद्र कहेवाय छे. इंद्रनी जेवी कळ फिचाला पण इंद्रपणे वर्जित ए सामानिक देवता कहेवाय छे. जे इंद्रना मंत्री अने पुरोहित जेवा छे ते नायिंश देवता कहेवाय छे. जे इंद्रना मित्र सरखा छे ते पार्षद्य देवता कहेवाय छे. इंद्रना आ-त्मानी रहा करवावाला ते आत्मरक्षक देवता कहेवाय छे. देवलोकनी रहा करवाने अर्थे रहको यस्ते फरनारा ते लोकपाल कहेवाय छे. सेना समान ते अनीक देवता कहेवाय छे. प्रजावर्गनी जेवा ते प्रकीर्ण देवता कहेवाय छे. सेवक सरखा छे ते आ-नियोग्य देवता कहेवाय छे. अने चंकालजातिनी जेवा छे ते किदिवष देवता कहेवाय छे. ज्योतिहक अने ठयंतर देवोमां नायिंश देवो अने लोकपाल नथी.

सौधर्मकदपमां बज्रीस लाख विमान छे, इशान देवलोकमां अच्छाविस लाख छे,

सनकुमारमां चार दाख ठे, महेंद्रमां आठ दाख ठे, ब्रह्मदेवलोकमां चार दाख ठे,  
दांतकदेवलोकमां पचास हजार ठे, शुक्रदेवलोकमां चाल्हीस हजार ठे, सहस्रार  
देवलोकमां ठ हजार ठे, नवमा, दशमा देवलोकमां मळीने चारसो अने आरण तथा  
अच्युत देवलोकमां त्रिणो विमान ठे, आच्य त्रण ग्रैवेयकमां एकसो आरयार विमान  
ठे, मध्यना त्रण ग्रैवेयकमां एकसो सात विमानो ठे अने ठेह्डा त्रण ग्रैवेयकमां एकसो  
विमानो ठे, अनुत्तर विमानो पांचज ठे, एक्वी रीते एकंदर चोराशी दाख सत्ताणु हजार  
ते ब्रेवीस विमानो ठे. अनुत्तर विमानो मांहेता चार निजयादिक विमानोमां फ्रिचरिम  
देवता ठे अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमान सुधीना देवताउ विष्टि, कांति, प्रलाव, लेश्यानी विशुद्धि,  
मांहीने सर्वार्थसिद्धि विमान सुधीना देवताउ विष्टि, कांति, प्रलाव, लेश्यानी विशुद्धि,  
सुख, इंडियोना विषय अने अन्वधिज्ञानमां पूर्व पूर्वशी उत्तर अधिक अधिक ठे  
अने परिमह (परिचारादि) अनिमान, शारीर अने गमनक्रियामां अनुक ने उना उना  
ठे. सर्वशी जघन्य विश्वित्वान्ना देवताउ ने सात स्तोकने अंतरे उद्भूत अने चोयनक  
(एक अद्वोरान्न) ने अंतरे आहार ठे, पल्लोपम विश्वित्वान्ना देवताउ ने दिवसने आंतरे

उद्धास अने पुश्यक दिवसे (वेणी नव दिवसे) आहार ठे, त्यार पडी जे देवतानी जे-  
 टखा सागरोपमनी स्थिति ठे ते देवताने तेटखा पक्के उद्धास अने तेटखा हजार वर्षे  
 आहार ठे. पटले तेज्जीस सागरोपम आयुष्यवाळा सर्वार्थसिद्धता देवताउने तेज्जीस  
 पखवारीप शासोळास अने तेज्जीस हजार वर्षे आहार ठे, घण्ठ करीते देवताउं सद्वेदना  
 वाळाज होय ठे, कदी असद्वेदनावाळा आय ठे तो तेनी स्थिति अंतसुहूर्त जेटली  
 न ठे. सुहूर्त उपरात असद्वेदना शती न शी. देवीउनी उत्पन्नि इशान देवलोक सुधी  
 ठे, अच्युत देवघोक सुधीना देवताउं गमनागमन करे ठे, ऊयोतिक देवता सुधी तापसो  
 उत्पन्न आय ठे, ब्रह्मदेवलोक सुधी चरक अने परिज्ञाजकोनी उत्पन्नि ठे, सहस्रार देव-  
 लोक सुधी तिर्प्यचोनी उत्पन्नि ठे, श्रावकोनी उत्पन्नि अच्युत देवलोक सुधी ठे, जैन लिंग  
 घारण करेलुं डां मिश्याहटि-अजड्यादि, समाचारी यशार्थ पालनाराउनी भेद्धा ग्रे-  
 यक सुधी उत्पन्नि ठे, पूर्ण चौद पूर्णी मुनिनी ब्रह्मलोकशी मार्कोने सर्वार्थसिद्ध विमान  
 सुधी उत्पन्नि ठे तथा सद्वेदतवाळा साधु अने श्रावकोनी जगन्यपणे पण सोधर्म देव-  
 लोकमां उत्पन्नि ठे.

चुवसपति, वयंतर, उयोनिषि अने इशान देवलोक सुधीता देवोने पोताना चुन-  
तमां वसनारी देवीउनी साथे विषय संबंधि अंग सेवा ले, तेउ संक्षिष्ट कर्सवाला अने  
तीव अनुरागवाला होवायी मनुष्योनी जेम कामजोगमां लीत शाय ले अने देवां-  
गनाना सर्व अंग संबंधि प्रीति ने मेळवे ले, त्यार पट्टी ले देवलोकता देवो स्पर्श मात्रयी,  
ले देवलोकता देवो रूप जोवायी, ले देवलोकता देवो शब्द श्रवणयी, अने आनत विगेरे  
चार देवलोकता देवो मात्र मनवे चितव्वायी विषयने धारण करतारा ले. ए प्रमाणे  
विषयरसमां प्रविचारवाला देवताउयी अनंतसुखवाला देवताउ भैवेयकाद्विसां ले के  
जेउ विषय संबंधि वीलकुल प्रविचार रहित ले.

एवी रीते अधोलोक, तिर्यक्लोक, अने उर्धलोकयी जोद पासेला समय लोकना  
मध्यज्ञानसां चौद राजलोक प्रमाण उर्ध अधो दांवी त्रसनादी ले अने पहेलाइमां ते  
विस्तारमां एक राजलोक प्रमाण ले. ए त्रसनाकीनी अंदर शावर अने ब्रस दने ले  
अने एनी वहार मात्र स्थावरज ले. कुल विस्तार नीचे सात राजलोक प्रमाण मध्यमां  
तिर्यक्लोके एक राजलोक प्रमाण, बहु देवलोके पांच राजलोक प्रमाण अने प-

यहते सिक्खसिखा ए पएक राजदोक प्रमाण हे. सारी रीते प्रतिष्ठित श्रेयेवी आकृति-  
वालो आ द्वोक कोइए कर्यो नशी अने कोइए धारण कर्यो नशी, ते खंयंसिक्ख निराधार  
पणे आकाशमां रहेदो हे.

अशुज्ञाधयानना प्रतिषेधतुं कारणचूत पर्वुं आ समग्रलोकतुं अपेक्षा तेना जुदा  
जुदा विजागतुं जे बुद्धिमान चित्तवत करे हे, तेने धर्मध्यान संबंधी कायोपशमादिक  
ज्ञाननी प्राप्ति शाय हे अने पीतझेश्या, पञ्चलेश्या, तथा शुक्लेश्या अतुकमे शुद्ध  
शुद्ध शाय हे. घणा वैराग्यना संगशी तरंगत श्रेयेला धर्मध्यानवने प्राणी तेने पोतेज  
जाणी शके तेवुं (स्वसंवेद्य) अतींदिय मुख उत्पन्न शाय हे. जे योगीहे निसंःग शद्ध  
धर्मध्यान वर्ने आ शारीरने गोके हे, तेत्रै ग्रेवेयकादि स्वर्गोमां उत्तम देवता थाय हे, लां  
तेवुं महिमावाला सौचानगयुक्त, शरदऋतुना चंड जेवी प्रशाचवाला अने पुष्पमाला  
तथा वस्त्रालंकारशी विचूषित एवा शारीरने ग्रास करे हे, विशिष्ट वीर्यने रोकनार, कामा-  
र्तिहप उत्तर विनाना अने अंतरायरहित अतुल्य सुखने चिरकाळ सेवे हे अने मनइड्डित  
मलेदा सर्व अर्थोप, मनोहर, एवा सुखरूप असृतने निर्विद्ध जोगवता पोताना चाल्या

जता जन्मने जाणता पण नअँ; एवा दिव्यज्ञोगने अन्तसाहैं हयांकी चक्री चक्रीले तेउ उत्तम  
शरीर चांडी सुनुच्यलोकमां अचकतरे ठे, महुच्यपणासां पण दिव्य वंशासां उत्पन्न थाई  
अखंकित मनोरथवाळा तेउ नित्य उत्सवार्थी मनते आनंद आपत्तारा विविध प्रकारना  
जोग लोगवे ठे, पठी विवेकनो आश्रय करी सर्व ज्ञोगकी विरास पासी ध्यानत्रके सर्व  
कमनो नाश करीले अङ्गयपद प्रत्ये पासे ठे.

श्री संज्ञवनाथजीनी देखाना।

आ संसारमां वस्तुताए सर्व वस्तु अनित्य ठे, तथापि प्रथम लागती सहजमात्र  
मीगायाना सुखते साटे प्राणीउने लेमां मुर्ढा रह्यां करे ठे. पोतार्थी, वीजाउर्थी अने वधी  
तरफकी जेउने आपत्ति हम्मेशां आठ्यां करे ठे एवा प्राणीउ यसराजना दांतरुप यं-  
त्रमां रहीने पण अहा ! केवा कष्टर्थी लीवे ठे ! अनित्यता, वज्र जेवा देहोने पण सप-  
कावे ठे, तो आ कदलीना गर्न जेवा प्राणीउनी तो क्षी बात करवी ? जो कदि आ-  
सार शरीरने स्थिर करवाने कोइ इहो तो ते उना अने समेता घासना बनावेला चार्की-

आना पुरुषनेज स्थिर करवाने इहें एम समजबुं भरणहुभी वाधनी मुख गुफामा  
बसनारा प्राणीउन्हें रक्षण करवाने माटे मंत्र, तंत्र अने चिकित्सा सर्वे नकामा हे. जेम  
जेम पुरुष बयमां बधतो जाय हे तेम तेम प्रथम तेने जरावरस्था ग्रस्त करती जाय हे  
अने पर्डी तेने माटे यमराज लवा करे हे. अहा! प्राणीजेना जन्मने धक्कार हे! ‘आ  
शरीर यमराजाने वश रहेहुं हे’ एम जो खेरेखरुं जाणवामां आवे तो पर्डी कोइ पण  
प्राणी अज्ञना ग्रासने ग्रहण करी शके नहि तो पापकर्मनी तो वातज शी करवी? जेम  
पाणीमां परपोटा उत्पद्ध थाह थक्कने विलय पासी जाय हे तेम प्राणीउनां शरीर कृण का-  
णमां उत्पन्न थड़ने विलय पामे हे. समझिवालो काळ, धताढ्य के निर्भत, राजा के रांक,  
समजु के मूर्ख, अने सज्जन के डुर्जन, सर्वो सरखी रीते संहार करवाने प्रवर्त्ते हे. ए का-  
छते गुणमां दाक्षिणयता नयी अने दोषोमां द्वेष नयी, पण ते तो मोटा अरएयने दाचा-  
तळनी जेम सर्व प्राणीउनो संहारज कर्या करे हे. कुशाल्ययी मोह पासेला पुरुषोप् कोइ  
पण उपायशी आ काया निरपाय आय एवी शंका पण करवी नहीं. जेव मेरुपर्वतनो दंक  
अने पृथ्वीनुं भत्र करवाने समर्थ होय हे तेहुं पण पोताने वा बीजाने मृत्युयी बचाववाने

समय अना नदी। कोकाशी मांकीते इङ्क सुधि ते यमराजनुं शासन समर्थ रीते प्रवर्ते  
ठे, तेमांथी कोइ रीते काळने वंचना करवानी चात काह्यो माणस तो बोलिए नहीं, कदि-  
कोइए पाताना पूर्वजोमांथी कोइने पण जो जीवतो रहेलो जोयो होय तो ते काळने चं-  
चना करवानी चात न्यायमार्थी उचाटी रीते पण संजने खरी! पण तेबुं तो जणाउं  
नथी, 'बल अने रुपने दूरण करनारी वृद्धावस्थाशी शीशील श्रवाय ठे' ए वातना अनु-  
नवशी चिद्रान पुरुषोने तो योचनवय अनिल ठे एवी खाढी अचीज जोश्य कामीनीउ  
कामडेवनी लीकाशी योचनवयसां जेसनी इडा करती हैती तेज पुरुषोने दुखाव-  
स्थासां तेडुंकी शुंकीने द्यजी ठे, धनवाल पुरुषोए जे धन घणा क्षेशश्री मेलनी उप-  
नाग कथांवगर रक्षण करने एक्कुं करी राख्युं होयठे ते पण कृष्णचारसा चिनाशा  
पासी जाय ठे, जोता जोतासां आदश्य नाश पासी जता एवा धनवानना धनने कीण,  
परपोटा अने विजलीनी उपसा केसा न आपी शकाय? पोतानो वा बीजानो गमे त्यां  
न्यास करो, तेमन विचार के अपकार करो पण आ संसारसां मित्र के वंशुजनोना जे  
समागम ठे ते ठेवदे निनाशा पासनारा ठे. जेउ हमेशां अनिलयतानुं ध्यान करो ठे ते उ

पोतानो पुत्र मृत्यु पासी जाय तोपण तेनो शोक करता नशी, अने जे मूढ नियतानो आ-  
ग्रह राखे छे ते पोतानी एक दिवाल पर्की जाय त्यारे पण रुदन करे छे. शारीर, शोवन, धन  
अने चंधु विगोरेज फक्त अनित्य छे एम नशी पण आ सधलुं सचाराचर जगतज अनित्य-  
पणे रहेलुं छे. आवी रीते आ सर्वने अनित्य जाणीने प्राणीठेप परिग्रहनो ल्याग करी  
नित्य मुखवालुं शाश्वतपद (मोह) मेठववाने माटे प्रयत्न करवो.”

श्री अनिन्दनजीनी देशना.

आ संसार एक विपन्निर खाणलप छे, एमां परुता मनुष्यने पिता, माता, मित्र,  
चंधु के बीजा कोइपण शारणरूप थता नशी, इद अने उपेंद्रादि जेवा पण जे मृत्युना  
सपाटामां आवे छे ते मृत्युने पण दीका करनार एको कयो पुरुष शरणेहु जनोने शरण  
करंवा लायक छे? अहा! आ संसारमां पिता, माता, छहेन, जाइ अने पुत्रो जोइ रहे-  
हे अने रहण वगरना आ जीवने तेनां कमो यमराजना शुहमां दोरीने लाइ जाय हे.  
मूढ दुर्दिवाळी पुरुषो पोताना कमोशी मृत्युने पासता एवा स्वजनने जोइ शोक करे छे,  
पण तेउ ‘पोताना आहसाने पण कसौ तेवीज रीते लाइ जाये’ एम शोक करता नथी.

मोटा जर्यंकर जंगलमां सुगना वचांती जेस झुःखरूपी दावानठनी प्रज्ञवित उवाळा-  
दुशी बिक्काळ एवा आ संसारसां प्राणीने कोइ पण शरणझूत नयी. अद्यांशा आयुर्वेदशी  
संजाचनी औषधिलेशी अने मूल्युंजयादिक मंत्रोचके पण मृत्युशी रक्षण अरुं नयी.  
खफना पांजरना मध्य जागसा रहेला अने चतुरंग सेनाथी विंटायेला मोटा राजाने  
पण यमराजना किंकरो रांकनी पेठे हहशी खेंची जाय ठे. जेम पश्चुड मृत्युशी वचवानो  
उपाय जाणतां नयी तेम विद्धानो पण जाणता नयी ए केवी मूढता कहेवाय? जेत्र खफ  
नाचना साधनशी पृथ्वीने निष्कंटक करे ठेत्रे यमराजनी झुक्टीशी जय पामीने मु-  
खमां आंगळीचे घाले ठे, ए केवी विचित्र वार्ता! पाप रहित मुनीडतां खजनी धारा  
देवां वतो पण सृत्युनो उपाय करी शकतां नयी. अहा! शरण विनाऱुं, राजा विनाऱुं,  
तायक विनाऱुं अने उपाय त्रगराँ आ जगत् यमराजरूपी राक्षसशी गळी जवास ठे!!  
जे धर्मरूप उपाय ठे तेपण मृत्युनी सामे चालतो नयी, पण ते भपाय शुक्त गतिने आप-  
नारो गणाय ठे; तेयी प्रवन्दयारूप उपायने ग्रहण करीने जेमां अद्य शुख ठे एवा मोहने  
माटे प्रयत करो.

श्री सुमतिनाथजीनी देशना.

आ जगतमां काश्चाकाश्चना ह्वाननी योग्यताने पासेला प्राप्तिप पोताना कर्तव्यमां मूढ़ रहेवुं न जोइप. पुत्र, मित्र तथा ल्भी विगेरेती अने पोताना शरीरनी पण जे सत्कृ-या करवामां आवे ठेते सर्वं परकार्य ढे, तेमां कांड पण स्वकार्य नशी. प्राणी एकदोज उत्पन्न थाय टे, एकदोज मृत्यु पासे ढे, अने जावांतरे संचित करेल कर्मने एकदोज अनुजवे ढे. एके चोरीशी उपार्जन करेलुं धन वधा मठ्ठीने खाइ जाय ढे अने ते चोरी करनारने एकदोज नरकमां पोताना कर्मशी ढुःख चोगचवां पर्दे ढे. ढुःखरूप दावा-नवशी जयंकर अने विस्तारचाळा आ ज्ञवरूप अरपयमां कर्मने वश अदेलो प्राणी एक-दोज जटक्या करे ढे. आ जीवने बांधव विगेरे कोइपण सहायकारी थता नशी. जो शरीर सहायकारी ढे पर्म कहीप तो ते शरीर तो डलडुँ सुख ढुःखना अनुशवने आप-नाहे. सुख ढुःखना अनुशवने आपनारु शरीर सहायकारी ढे पर्म जो कहीए तो ते पूर्वजातमांशी साश्रे आवत्तुं नशी अने आगला जन्म साश्रे आववानुं पण नशी तेशी। संकेटमां (हृषकेटमां) झाची मळेली कायाने सहायकारी केस कहेवाय? धर्मने अथर्व संकेटमां

सहायकारी रे एम जो मानीए तो ते पण सल्ल नयी कारण के धर्म आधर्मनी सहायता  
मोहमां चीलकुल नयी, तेथी आ संसारमां शुल्क अशुल्क कर्म करतो प्राणी एकदो ज-  
टके रे अने पोताना शुजाशुल्क कर्मने योग्य शुल्क अशुल्कफळते अनुचरे रे. तेज प्रमाणे  
अनुत्तर एवी मोहक लक्ष्मीने पण एकदोज गहण करे रे; कारण के लां पूर्वोक्त सर्व सं-  
वंधीउनो विरह होवायी वीजा कोइने साचे रहेवानो संजव नयी. माटे संसार संवंधी  
इःख अने मोहक संवंधी सुख तेने प्राणी एकदोज ज्ञोग्ये रे, तेमां कोइ सहायकारी  
नयी. जेवी रीते हाय पग दुटा होय तेवो माणस एकदो तत्काळ समुदना पारने पासी  
राके रे. पण हृदय, हाथ, पग विग्रेयी वांधी लीधेलो माणस तेनो पार पासी शकतो  
नयी, ते प्रमाणे जे धन अने देह विग्रेती उपर आसक्तिवाढो होय रे ते आ जवसमु-  
दनो पार पासी शकतो नयी. परंतु तेनी उपरनी आसक्ति विनानो एकदो खस्त्र प्राणी  
हाय ते आ जवसमुदना पारने तत्काल पामे रे, माटे सांसारिक सर्व संवंधने ठोकी  
दद्दने प्राणीए एकदागणे शा श्वत आनंद सुखवाढा मोहने माटे यल करवो.

## श्री पद्मपत्रनुजीनी देशना।

आ घोर संसार समुद्रना जेवो अपार ले, तेमां चोराशी लाख जीवायोनीने विषे  
प्राणी रखबड्हां करे ले. आ संसारहपी नाटकमां संसारी प्राणीलु श्रोत्रीय, चंकाळ, इवा-  
मी, सेवक, ब्रह्मा, अने कुमीना वेषो धरी धरीने अनेक चेष्टाउ करे ले, संसारी प्राणी क-  
र्मना संबंधयां जाके राखेली छुंपर्कीनी जेस कह योनिमां नथी गयो अने कह योनि  
तेषु गोकी नयी? आ समझ लोकाकाशमां पोत पोताना कर्मयी दरेक प्राणीए नाना  
रूपो धरीने स्पर्श कयो न होय, तेकी बालाय मात्र पृथ्वी पण नशी. अशांत् सर्व प्रदे-  
शानो तेषु स्पर्श करेलो ले. आ जगतमां नारकी, तिर्यच, मनुष्य अने देव ए चार प्रका-  
रना प्राणीले, तेके प्रायः कर्मना संबंधयी बाधित शइने घण्टु दुःख लोगठ्यां करे ले.  
पहेली त्रण नरकोमां मात्र उष्ण वेदना ले, रेह्वी त्रण नरकोमां शीतल वेदना ले, अने  
सध्यनी चोर्थी नरकोमां उष्ण अने शीतल चह्वे प्रकारनी कोत्रवेदना ले, ते अनुसारे ते ते  
देवमां दुःख थायां करे ले. ए उष्ण अने शीतल नरकोमां लोहानो पर्वत पण कढी लाई  
जावासां आवे तो ते त्यांनी छूमिनो स्पर्श कर्या अगाडुज उगळ्ठी जाय ले अश्वा वेरण

शीर्ष अद्य जाय रे. ए प्रमाणेनी द्वन्द्वेदना उपरांत परस्पर नारकी जीवोए उपजावेदी  
वेदना तथा परमाधामीकृत वेदना एम त्रण प्रकारनी वेदनाउए जेमने महा डुःख उ-  
त्पादन करेहुं रे, एवा नारकी विविध दुःखोशी पीजित शइने ते नक्खूमिसां वसे रे.  
घटी चंत्रोमां उत्पन्न अचेला नारकी जीवोने परमाधार्मिक देवो सीसानी सलीयो जेम  
जलरकामांशी लेंचे तेम लघुद्वारशी आकर्षण करे रे. केटदाएक नारकी जीवोने वलो-  
ने जेम रजको पठाके तेम हाथ पग बिगोरेशी पकड्नी ने वज्रकंटक जेवी संकटकारी  
शिलाना एष उपर परमाधामीरे पठाने रे, कोइ ठेकाणे तेडने काष्ठनी जेम दारुण कर-  
वतशी विदारे रे अने कोइ ठेकाणे तेडनी जेम विचित्र यंत्रोशी पीलवासां आविरे रे. वळी  
निल तृपाहुर एवा ते रांककाउने ल्यांशी लाइ जइने तृष्णा शांत कराववा माटे तरवा अने  
सीसाना रसने बहन करनारी वैतरिणी नामनी नदीमां उतारवासां आवि रे. कढी ते  
प्राणीउने गायामां वेसवानी इडा शाय तो तेमने असिपत्र बनमां लइ जाय रे, लां ए  
वनमां रहेला वृक्षोना शख जेवा पञ्चो परुवाशी तेडना तिल जेवा कटका प्रव-  
जाय रे. कोइ ठेकाणे वज्रकंटक जेवा शाढमलीना वृक्षानी साथे अने कोइ ठेकाणे अत्यंत

तपावेदी दोहानी पुतळीउनी साथे आविंगत करावे छे अने ते बखते तेलाए करेखा परखी।  
 उना आविंगनदुं समरण करावे छे. कोइ ठेकाणे पूर्वे करेलुं मांस जळणदुं लोखुपपण्य याद  
 आयीने तेमने तेउना अंगतुंज मांस तोर्दी तोर्दीने खवराववासां आये छे अने पूर्वे क-  
 रेदी मदिरायाननी लोखुपताने समरण करावीने तपेलुं तरडुं पावासां आवे छे, लां आषु  
 खरज, महाश्रुल, अने कुंकीपाक विगेरनी वेदनानो निरंतर अनुशव करावे छे तथा मां-  
 सनी पेरे तेउने शेकवासां आवे छे. ते प्राणीउनां शरीर डिन्ह लिन शइने पाठी मली  
 जाय तेवां छे. तेउनां नेत्रादिक अंगो बगदा अने कंक विगेरे पक्कीर्त पासे खेचावे छे. आ  
 प्रमाणे महा इःखोयी हणायदा अने सुखना एक अंशाशी पण रहित प्राणीउ त्यां रहीने  
 यावत् तेब्री हा सागरोपम जेवा मोटा काळने निर्गमन करे छे.  
 केटलाएक प्राणीउ तिर्यच गतिने प्राप्त यह तेमां पण एकेनिदियपण्य पासे छे अने  
 तेमां पण पृथकीकायरुपने प्राप्त यह इखादिक शखोयी फकाय छे, हाथी, घोका विगे-  
 रेयी चोङाय छे, जळ प्रवाहोयी इवावीत आय छे, दावानठशी बळी जाय छे, खारा,  
 खाटा अने मूत्रादिकना जखशी ठयथा पासे छे. खवण द्वारने पास्या होय छे तो उत्तण

जन्ममां तेने उकाल्डवामां आवें रे, कुंचार प्रमुख तेना देहनी घमा इट विगेरे करीने तेने  
फकावे रे नीतमां गारालृप अइने चण्णाय रे. कोइ क्वार मृतिकाना युट पाकवे के पकवीने  
तेने शराणश्री बसे रे, कोडवार दांकणश्री सेमर्दु विद्वारण श्राय रे, अने पर्वतनी स-  
रिताना प्रवाहोश्री फाली नंद्वाच रे. आपकायपणाने पासेज्ञा जंतुउ सूर्यना किरणोश्री  
तपाच रे, हिमरूपे धनीकृत कराय रे, रजश्री शोषण कराय रे. वणा हार रसना सं-  
र्कश्री परस्पर मृत्यु पासे रे. स्थान्त्रीनी श्रांदर राखीने पचवाय रे अने तृप्याचाला माण-  
सोश्री पीचाय रे. तेचकाचपणाने पासेला जंतुउ जवादिकश्री बुजाचाय ठे वण विगेरेशी  
कुटाच रे अने इधणादिकश्री दरध कराय रे, वायुकायपणाने पासेला जंतुउ पंखा निंगे  
श्री हृणाय रे, कृष्णे हृष्णे शीतोष्ण प्रमुख दृव्यना योगश्री भृत्यु पासे रे, प्राचीनती  
अचान्चिनश्री विराधना श्राय रे, सुखादिकना पवनोश्री वाधा पासे रे अने सर्व प्रमु-  
खश्री पान कराय रे, कंद प्रमुख दशा प्रकारनी वनहपतिकायने पासेला जंतुउ हमेशा  
ठदाय रे, लेदाय रे, अस्तिना योगश्री पचाचाय रे. परस्पर घर्षणोश्री पीचाय रे, अन्य  
प्रयोगचक्र शायण श्राय रे. चाचाना लोखपीउ हार प्रमुखना योगश्री तेने वाळे रे अने

एकत्र पण करे रे. सर्वं आवस्थामां जहाण कराय रे, पवनोशी न्द्रेगाय रे, दावानठोशी चरसम कराय रे, अनेन नदीना प्रवाहशी उखेमाय रे एवी रिते सर्वं वनस्पतिरु सर्वनें जो-  
ज्ञय यद्य पर्के रे अनेसर्वं प्रकारना शङ्खोशी तेऽसर्वदा हृकेशनी परंपरानो अनुशव करे-  
रे. के इङ्कीयपणामां पुरा विगेरे शइने तपाय रे अनेपीवाय रे. कमियो शाय रे तो चर-  
णोशी चूपी शाय रे अनेचकला. विगेरे पक्षीरु तेमतुं जहाण करे रे, शंखादिक जंतुरु-  
खोराय रे, जलौकादिकनो निष्कर्ष शाय रे अनेगंगुपद विगेरे जंतुरुनो औषधादिवके-  
जठरमांशी पात शाय रे, श्रीदियपणामां जु अनेमाकद विगेरे शरीर साये चोळाय रे  
अनेउल्पु जठरशी तपाय रे, कीरुडीपगशी अनेसंसारेनशी पीकाय रे अनेअहवय-  
पुचा कंपचा विगेरेतुं आसनादिकशी मथन याय रे, चतुरिंदियपणामां मधुमारवी अने-  
चरसरादिक जंतुरु मधुचहुक पुरुषोप करेलालाकरु तथा हेखाळादिकना. तारुनोशी विरा-  
धाय रे, कांस अनेमसदा प्रमुख प्राणीरु पंखा विगेरेशी तत्काल तारुन कराय रे, ग-  
रोली विगेरे महिका तथा करोलिंगा विगेरेते गले रे, पंचेन्द्रियपणामां जलचर प्राणीरु  
उत्सुक शइने परस्पर एक वीजाउंज जहाण करे रे अनेडीमर लोको तेजेने पकरे रे. तथा-

चरनीता अर्थां चरनीते माटे तेमने गाडे रहे, सशब्दवरोमां उत्पन्न शयेला प्राणीउमां मांसने ग्रानारा वलवान् सिंह प्रमुख प्राणीउ निर्वल एवा मुगा दिक्कने मारी नांखे रहे. आने मुगवा करनारा पुरुयो शिकार करवामां पोताना, चित्तने आशक्त करीने कीडायी वा मांसनी डृगायी अनेक उपायो रचीने हे निरपराधी प्राणीउने हप्ते रहे. केटलाएक प्राणीउ छुधा, पिपासा, शीत, भाषण अने अति जारहुं वहन करवा विगेरेयी तेमज चाहुक, अंकुश, कोरडाना मारथी असह्य वेदनाने सहन करे रहे. खेचर प्राणीउमां तेतर, शुक, कपोत अने चकला विगेर केटलांएक प्राणीउने मांसमां छुवध शयेला रयेन, सौंचाणा झने गींथ पह्दीउ पकड़ीने आस करे रहे. केटलाएक मांसना लोती पह्दीना शिकारी पुरुषो अनेक जातना उपाय विस्तारी तेउने पकड़े रहे, आने अनेक जातनी चिंडवत्ताशी तेमनी चिनाश करे रहे. तिर्यच पह्दीउने जाल अग्नि अने शख्त विगेरेयी सर्व रीते जय रहा करे रहे. आहा ! पोत पोतना कर्मवंधनुं निर्वंधन केटलुंक वर्णन करीए.

मतुत्यपुण्य प्राप्त यथा गतां पण अनार्थदेशामां उत्पन्न शयेला प्राणीउ पट्ठुं पाप करे रहे, के ले कही शकाय तेउं पण नशी. आर्यदेशमां पण चंडाल अने स्वपचाढि जातिमां

उत्पन्न शाये रे तेकु पण तेवां पाप करे ले, अने तेने अनुसारे महाङ्गःखनो अनुचाव करे ले. केटवाएक प्राणीन् आर्यदेशमां उत्पन्न शया उतां अनार्य चेष्टावाळा होय ले, अने तेने लीये तेकु ठुःख दारिद्र अने उर्जायशी दग्ध शइने निरंतर ठुःख जोगवे ले. केट-लाक मनुष्यो परनी संपत्तिना उत्कर्षशी अने पोतानी संपत्तिना अपकर्षशी तेमज्ज वी-जानी सेवा करवावडे दग्ध चित्तवाळा शवाशी ठुःखे करी जीवे ले. केटवाएक दीन युरुयो रोग, जरा अने मृत्युशी ग्रस्त शइने तथा नीच कर्मचडे कदर्घना पासीने दया उत्पन्न करे तेवी ठुःखदशाने अनुजरे ले. वक्ली मनुष्यपणामां पण घोर नरकमां निवास क-रवा जेवा गर्जेवासना ठुःखने अनुजरे ले. गर्जेवास जेवा ठुःखउं कारण ले तेवा ठुःखउं कारण जरा, रोग, मृत्यु अने दासपणुं पण नशी. तपावीने करेली अग्निजेवा वर्णवाळी सो-दोन्ही रोमे रोमे चेदायेदा पुरुषने जेटलुं ठुःख शाय ले, तेनाशी आहुगणुं ठुःख प्राणीने गर्जेवासमां उत्पन्न शाय ले. वक्ली योनियंत्रमांशी नीकलती वखत प्राणीने. जे ठुःख शाय ले, ते गर्जेवासना ठुःखशी पण अनंतगुणुं ले. जनस्या पठी पण बाल्यवयमां मूत्र निटाशी, योवनवयसां रति विदासोशी अने खुदावस्थामां श्वास तथा खासीना रोगशी

ए प्राणी पीड़ाये रे, तथापि तेने कदमीपण लज्जा आवती नशी। प्राणी प्रथम वाद्यावच-  
रक्षासां विद्यानो लुकर, पठी योवनावहस्थामां कामदेवनो गधेरो अने लेवटे वृद्धावस्थामां  
वरांडो चेद चने रे, पण कदापि ते पुरुष वर्तां पुरुष अतो नशी। शिशुवयमां मातृसुखी, यो-  
वनवयमां खीसुखी अने वृद्धपणे पुत्रसुखी शाय रे, पण ए सूखं प्राणी कोइचार अंतर्मुख  
यनो नशी। धनती आशासां विहृला अयेदो प्राणी सेवा, कृषि, व्यापार अने पशुपाल  
विभोरे उच्चोगशी पोताना जन्मने निःफल गुमावे रे। कोइचार चोरी, कोइचार द्युत अने  
कोइचार जारपणं करवाशी मनुष्योने वारंचार संसारमां परित्रमण करवातुं कारण शया  
करे रे। मोहशी अंध अयेला प्राणीउ सुखी होय रे ल्यारे काम विदासशी अने छुळी  
शय रे ल्यारे दीनता अने रुदन करवाशी पोतानो जन्म गुमावे रे। पण धर्मकार्य क-  
रता नशी। अनंत कर्मना समूहनो कृष्णमात्रमां कृष करवाने समर्थ एवं मनुष्यपणं प्राप्त  
यया वर्तां पण वापी पुरुषो पापकर्मने कर्या करे रे। इन, दर्शन अने चारित्र ए ऋण  
रतोना पात्ररूप मनुष्यपणासां जे पापकर्म करतुं ते सुवर्णपात्रमां महिरा लरवा जेडुं रे।  
आ संसाररूपी समुद्रमां शमिलायुगना योगनी जेस मांड सांड प्राप्त यायेहुं आ मनु-

यपत्तु अहा ! मूर्खेन जेम चिंतामणिरल हारी वाय. तेम प्राणी हारी जाय हें. स्वर्ग अने  
मोहनी प्राप्तिना कारणलुप मनुष्यपत्तु प्राप्त थया ठसां पण माणस नरकप्राप्तिना उपाय  
रूप कर्मनी अंदर उद्यम कर्या करे हे. प॑ केवी दिवागीरीनी वात ! अतुतर विमानना  
देवताउ पण मोटा प्रयत्नी जेनी आशा राखे हे पट्टु मानुष्यव्र प्राप्त थया उतां पण  
तेन पापी पुरुषो पापकर्मां जोडी दे हे. नरकमां पोळक डुःख हें अने नर जन्ममां तो  
प्रलक्षक डुःख हें तेथी तेनो विस्तार अतिशयपणे शा माटे अहां वर्णवचो जोइष ?

शोक, अमर्ष, खेद, इर्या अने दीनता विग्रेधी जेमनी बुळ्ड हणायेही हे एवा  
देवताउमां पण डुःखनुं साम्राज्य प्रवर्ति रहेलु हे. वीजानी मोटी लाङ्मीने जोइने देव-  
ताउ पोताना अडप सुकृतेन संपादन करनारा पूर्व जन्मना जीवितनो चिरकाल शोक करे  
हे. वीजा कोइ चलवान देवतानी तरफशी पोताने अडचण भत्पत्र थतां तेनो प्रतिकार  
करवाने असमर्थ एवा देवताउ तिक्षण एवा अमर्षहप शहेयशी निरंतर कचवाया करे हे.  
मैं पूर्वजन्ममां कोइ पण सुकृत कर्युं जणातुं नस्थी जेथी आ जवामां सेवक देवतापणाने  
पापयो लुं. आची रिते विचारता अने पोताशी अधिक उत्तरोत्तर बीजा देवोनी लादमीने

देखतां निरंतर केटला एक देवताउं खेद कर्या करे ठे. केटला एक देवताउं बीजाउनी चि-  
मान, छ्वीरह अने उपचन संबंधी संपत्ति जोइ जोइने यावज्जीवित इल्यारुप उव-  
लित अग्निना ऊर्मिउच्ची बढ़या करे ठे. केटला एक देवताउं बीजा चलिष्ठ देवता तरफ श्री  
पोताउं सर्वस्व लुंटाइ जतां दीनहृतिए ‘हे प्राणेश ! हे ग्रन्थ ! हे देव ! तमे प्रसन्न  
आउं’ एम गद्ग द्वारे पोकारे ठे, पुण्यश्री स्वर्गदोक्ष प्राप्त श्रया भर्तां पण कासी देव-  
ताउं काम, क्रोध अने जयश्री आतुर श्रया सता क्यारे पण स्वस्पष्टाने पामता नश्री.  
वली देवताउं देवचुवनसांश्री पोताने च्यवचाना चिन्होने आगाड्श्री जोइ जोइने असे  
क्षयां संताइ जद्गए एम बोह्या करे ठे, अने संताइ पण जाय ठे. कटपृष्ठकोना पुहोश्री  
उत्पन्न श्रेष्ठेली मालाउं नदानि पामे नहिं पण च्यवन नर्जिक आने ठे वस्त देवताना  
मुख कम्लोनी साथे ते पण ख्यानि पासी जाय ठे. मोटा बलवान् पुरुषोश्री पण अकंप  
एवा कटपृष्ठको तेउना हृदयनी साथे संधिचंध शीघ्रिल यह जवाश्री कंपायमान थाय ठे.  
उत्पन्न श्रया ल्यारश्री प्राप्त यथेली अने घण्ठी चारी एची दाढ़मी अने दजापण जाए अ-  
पराध कर्यां द्वाय नेस तेउने तत्काल ओडी ठे. निरंतर निर्मल एवी बहुती शोना पण

आकर्षणात् प्रसारेदा। मखिन अने घाटा पायना समुद्रयी होय तेम तत्काला मखिन थाइ जाय ठे। मुत्युकाले जेम कीडीले ने पांखो आवे ठे तेम तेउने ते वरहते आदीनपणु भर्ता दैन्यता आवे ठे, अने निझारहित उत्त निझा आवे ठे। मरवाने इहुता एवा युहयो जेम यहुत करीने पण कुपथ्य सेवननी इहुता करे ठे तेम श्रङ्खानी देवताठे एवे वरहते न्याय तथा धर्मने वाध करीने विषयो उपर राग धरे ठे। नीरोगी उत्त पण जविहयमां आडनारा च्यवनथी उरेली वेदनाने जाणे वश श्रेष्ठा होय, तेम तेउना सर्व अंगोपांगना सांधारु जाँगवा मांडे ठे। अश्रात आलसपर आलस मरजवा लागे ठे। जाणे बीजाउनी संपन्निना उत्कर्षने जोचाने असमर्थ होय तेम तेउनी पढार्थने यहण करवासां द्वितु अपटु अहोय ठे। जविहयमां आववाना गर्वेवासना ठुःखनो जाणे तेउने जय लाग्यो होय, तेम पोताने श्रेष्ठा प्रकंपणी चपल एवा अंगोशी बीजाउने पण बीवराने ठे। पूनोक्त चिन्हो बडे तेउने उपववानो निश्चय श्रवाशी जाणे अन्निना अंगाराउए तेमनु आदिगन करेहु होय तेम विमानमां, नंदनवनमां, वापिकामां के कोइपण स्थानके तेउने शांति बढ़ती नष्टी, ते वरहते तेउ विषाप करे ठे। हा ब्रिजा ! हा विमानो ! हा वापीकालु ! अने हा क-

दप्तुक्तो ! हृतसारय प्रवा माराथी वियोग पासेला तमे हवे करने मने क्या जोवासा  
आवश्यो ? अहो ! अमृतने वर्धानवारी वाणी, अमृतसय कांता, रखना घडेला संजो,  
शोना सहित मणिसय चुमिडु अने रखसयी चेदिकाउ ! तमे कोने आअये जशो ? रखनी  
पर्हंचिका शुक्क अने अणीनंध कमलोचाळी हे पूर्णवापिकाउ ! तमे कोना उपरोगने  
आळु यशो ? हे पारिजात ! हे संतान ! हे हिंचंदन ! अने हे कढपवृक्ष ! शुं तमे आ सा-  
लोकने ठोडी देशो ? अरे ! लीना गर्नेरूप नरकमां शुं मारे परवश थइने निवास करनो प-  
उडो ? अने अशुचि रसाउ शुं मारे वारंवार आसाडन करडुं पडशो ? अहो ! मारे पोताना  
कर्मशी दंभाडने जहररूप अंगार शकटीना पाकथी अरुं छँख सहन करडुं पडशो ? अरे !  
गनिनी जाणे नंडार होय तेची आ देवांगनाडु क्या ? अने असुचिनुंज स्थानक होचाशी  
बीचलम पर्वी मानव खीड़ना चोग क्यां ? आ यमाणे स्वर्गीय वस्तुने संज्ञारी  
विदाप करता ग देवताउ दीपक जेम ढणुचारमां बुझाइ जाय तेम लांयी चयवी जाय  
ग तेरी ! आ संसारने असार जाणी उगत तुल्दिनाला प्राणीत हीक्काहप उपायशी मु-  
क्तिने अथं प्रयत्न करनो योग्य ठे.

श्री । सुपार्बनाथनी देशना ॥

आ लोकमा लो । पुत्र परिवार ऊऱ्य अने देहादिक सर्व पोताना आत्मार्थी ऊऱ्य ठें, तथा पि तेउने अर्थे अनेक प्रकारना पापकर्म करीने मुख्य माणस पोताना आत्माने जनवस्सुदमां डुचावे ठे. क्यां प्राणीने पोताना आत्मार्थी विसदश होवाने लीधे पोताना शारीरनी राशे पण ऊऱ्यापण्यु ठे तो पठी धन बंधु विगोरे सहायकोनुं ऊऱ्यापण्यु कहेबुं ते कांइ चिशेष नर्थी. जे पोताना आत्माने देह, धन, अने बंधुर्थी ऊऱ्यो ऊए ठे, ते पुरपते शोकरूप शंकुवडे पीडा केस शाय ? अहीयां जे ऊऱ्यापणानो चेद ठे ते परस्परना दक्षणना विलक्षणपणाशीज जाणचायोग्य ठे, अने ते पोताना आत्मावने देहादिक चावनी राशे सरखावतां साक्षातपणे जणाय ठे. जे देहादिक पदार्थो ठे ते इंकियोर्थी ग्राह्य ठे अने आत्मा तो फक्त अनुच्छवर्थीज गोचर शाय ठे. तो तेउने अनन्यपण्यु (एकत्र ) केम संजावे ? कदि शंका शाय के आत्मा अने देहादिक पदार्थोने जो ऊऱ्यापण्य ठोय तो देहने ग्रहारादि शाय ल्यारे आत्माने पीडा केम शाय ? तेना समाधानमां कहेवानुं के तारुं कहेबुं साचुं ठे, पण जेमने आत्मा अने शारीरमां चेदबुळ्डि प्राप-

यद्यन्ती तेजेन देह उपर ग्रहारादि, अतां पीडा उत्पन्न भाय ऐ पण जेउप देह अने  
आत्मानो जेद सारी रिते, अनुनवीने प्रतिपादन करेलो ले, तेना पुरुषोनो आत्मा देहने  
ग्रहारादि अतां पीडा पासतो नयी. जेदने जाणनारो इानी। पुहच पिता संवंधी दुःख  
आवी पडे सो पण पीडा पौमंस्तो नवी अने परमां पोतापण्य मानी वेसनार, जेद झानने  
न हि जाणनार, अकु पुरुष एक चाकर संवंधी दुःख आवी पडे तो पण मुंकाय ले. अना-  
विषयपणाशी ग्रहण करेलो पुत्र पण्य लुरो ले, अने आत्मीयपणाशी। ग्रहण करेलो चाकर  
पण पुत्राशी अधिक यदि पडे ले. प्राणी जेटला जेटला संवंधो पोताना आहिष्यपणाशी  
प्रिय माने ले तेटला तेटला शोकना खीलाउ तेना हुवयमां होकाय ले, तेशी आ जग-  
तमां सर्व पदार्थ आत्माशी उदाज ले. ते प्रमाणे जाणीने अन्यत्व बुद्धि प्राप्त थद ले  
जेने एवो माणस कोइ पण वस्तुनो नाश यवाशी तरवमार्गां मोह पासतो नशी. तुं-  
वीका उपर करेलो मृत्तिकानो लेप धोवातो जाय ऐ ते प्रमाणे ममतारूप मृत्तिकाना लेपने  
निवारी दिलाने ग्रहण करतो पुरुष तुंकिकानी जेस ओडा काळां सुरुदात्मा येईने आ  
संसारने तरी जाव ले.

श्री चंद्रपत्रुजीनी देशना।

अनंत हेशरुपी तरंगोये युक्त एवो आ जवसागर कणे काणे सर्व प्राणीहने उच्चे नीचे अनें तिरंबापणे केंक्या करे ले. जेम अशुचिस्थानमां कीडाल्य प्रीति करे ले तेम प्राणीहु आ हणिक शरीर उपर प्रीति करे ले. अने ते शारीर तेमनेज एक उंधनरूप यह पडे ले. रस, रधिर, मांस, चर्बी, अस्थमज्जा, विर्य, आंतरडां अने विषा विगेरे अशुचिना स्थानरूप आ देहमां शुचिपणुं केम संजवे! नव ढारोमांशी ऊरता ऊर्ध्वी रसना नीजरणाथी रगदोळायेदा आ देहमां जे पवित्रतानो संकटरूप करवो तेज मात्र मोटो मोहनो विलास ले. वीर्य अने हधिरथी उत्पन्न अयेदो, मलिन रसथी वधेदो अने गर्भमां ऊराशु (लेर) श्री उंकयेदो आ देह पवित्र केम आय? माताए खाधेदा अहपात्त तथी उत्पन्न अयेदो अने रस नाहीमा थइ ओवेला रसनुं पान करी वृक्षि पामेलो कयो पुरुष शरीरमां पवित्रताने माने? दोष धारु अने मलथी जरेला कुसि अने गंकुपदना स्थानरूप तथा रोगरूप सर्पना गणोवेड खवायेला आ शारीरने कोष शुचि कहे? इवादिष्ट अन्त, पान्न, दीर, इहु अने बीजा वृतादि विग्राय पदार्थो पण लोजन कर्या परी

जैमां विष्णुरुप थाय तें शरीर केम शुचि कहैवाय ? जैमां विदेपत करेलो सुगंधी यद्क  
कर्दम पण तरकाल मवरूप थइ जाय ले, ते शरीरसां केवी रीते शौचपणु मनाय ?  
सुगंधी तांविदवनुं आस्वादन करीते सुङ गवेदतो माषुत सवारे उडी पोताना मुखना डुँग-  
धनी ऊग्रसा करे, ए शरीरनी केम शुचिना गणाय ? सुगंधो धुप, पुष्प, अन्ते पुष्पमा-  
दादिनक जेरुं स्वतः सुगंधी ले, तेरुं पण जेता संगंधी डुगंधताने पासी जाय ए काया  
केम पवित्र गणाय ? मांजेलो, विदेपत करेलो अन्ते सैकडो घडाडेही घोयेलो पण अशुचि  
देव ऋद्वादना घडाती जैम पवित्रपणाने पामतो नवी. मृतिका, जल, अग्नि, पवत  
अन्ते सूर्यनां किरणोना स्वानवडे जेरुं आ देहने शौच कहे ले, तेवा गतानुगतिक लो-  
कोंप्रथरेवर फोतरांज खांडेलां ले, तेवी आवा अशुचि शारोरवडे मात्र मोक्ष फढोतपा-  
दक नपत करवुं. कारण के बुद्धिगान लोकोए खारा समुद्रमांधी रक्तनी जेम असार-  
मांधी सारतो उखार करनो एज उत्तम ले.

ओ मुनिधीनायजीनी देशाना.

आ संसार अर्नन डुखना सपुहनो चंडार ले, जेरुं जरपनिष्ठान जेम सर्प ले,

तेम संतारनु उत्पत्तिस्थान आश्रव ठे. जंतुठने मन, वचन अने कायानी जे [कया से  
योग कहेवाय ठे. ते योग प्राणीने शुचाशुच कर्मने आश्रवे ठे तेथी ते आश्रव  
कहेवाय ठे. मैत्री विग्रे ज्ञावनाथी वासित चित्त शुचकर्म बंधावे ठे. अने कथाय  
तथा विषयोधी आकांत थयेलु चित्त प्राणीने अशुचकर्म बंधावे ठे. शुतक्षानने. आश्रव  
एडु सत्त्वचन शुच कर्मनु उपार्जन करावे ठे, अने तेथी विपरीत होय तो अशुच क-  
र्मना उपार्जननु हेतु चृत थाय ठे. चक्री रिते गोपनेलु एटलो असत्कार्यमाधी पांडु-  
वाळी सत्कार्यमां प्रवचनावेलु शारीर शुचकर्म बंधावे ठे, अने हमेशां आरंजी तथा जीवधा-  
तक शरीरवडे अशुचकर्म बंधाय ठे. कथाय, विषय, प्रसाद, योग, अविरति, मिश्यात्व  
अने आर्त तथा रौद्रध्यान ए अशुच अश्रवने. यद्दण कर-  
वामां हेतु चृत ठे आश्रव कहेवाय ठे. ते कमोऽक्षानावरणादिक लोदधी. आरु प्रकारना  
ठे. झान दशनना संबंधमां झानदर्शनवाळाऊ. प्रले अने झानदर्शन उत्पत्त करवाना हेतु  
उमां जे विद्धि, निन्दून, विशूनता, आश्रातना, द्वात अने महसर करवो ते झानावरणी।  
अने दर्शनावरणीकर्म वांधवाना हेतु चृतरूप. आश्रव ठे. देवपूजा, गुरुसेवा, पात्रदान,

दया, कुमा, सराग, संयन, देशविरति, आकामनिर्जरा, शोच और वालतप ए सहृदय  
(साताविहनी) दर्मं वंधावनारा आश्रमो ठे. पोतां, परते आश्रमा नजेने इःख, शोक,  
दया, ताप, आकंदन आने विवाप के पश्चात्य उरावा करने के करावो ते आसातावेदनी  
कर्म वांचवानां कराणो ठे. बोतरावना, शास्त्रना, संवत्सा, धर्मना अने सर्व देवताङ्गना  
आवर्तिवाद वोलवना, तीव्र निश्चयतना परिषाम करवा, सर्वज्ञ अने सिद्ध देवनो नि-  
रुद्ध करवो, धार्मिक माणसोने इच्छण आपहुं, उन्माणे नामनामो उपदेश करवो, अनश्च  
करवाना आपह राखवो, असंयमीती पूजा करवी, अविचारीत कार्य करवुं अने गुरु  
मिंगेन। अचक्षा करवी—इत्यादि दर्शनसोहनीकर्त धांचवाना आश्रमो ठे. कपायना उद-  
यय। व्रतमाना तीव्र परिषाम व्रता ते चारिमोहनीय वांधवान। आश्रव हे. महकरी  
करनानी टेव, सकाम, उपहास, विशेष हृसवानो हृसवाच, वढु वोखवापाणु अने देन्यपण  
वतावनारी उक्ति ए हास्यमोहनीना आश्रमो ठे. अनेक देशो विग्रे जोवानी उत्कंठा,  
अनेक प्रकारे रमनुं तथा खेदवुं अने वीजाना चितने आकपतुं—वश करवुं ए रतिमोह-  
नीना आश्रमो ठे. असूरा, पाप करवानी प्रहृति, चीजाना आनंदनो नाश करवो ओने

कोइनुँ आकुशाल शर्तुँ जोइ उपहास करवो ए आश्रमोहनीना आश्रमो हे. पोतामां ज-  
 यना परिषाम, बीजाने जय पमारुचो, त्रास उपजाचवो अने निर्दयपणुँ धरावतुँ ए जय  
 मोहनीना आश्रमो हे. पोते शोक उपक्ष करी शोच करवो, बीजाने कराववो अने सदन  
 करवामां अति आसक्कि राखवी, ए शोकमोहनीना आश्रमो हे. चतुर्विध संघना आव-  
 णवाद बोलवा, तेमना तरफ तिरस्कार बताववो अने सदाचारनी निंदा करवी ए जुगु-  
 दसामोहनीना आश्रमो हे. इहर्यो, विषयोमां लोहुपता, मृषाचाद, अतिवक्ता, अने  
 परखीना विलासमां आसक्कि ए ख्वीविद बांधवानां कारणो हे. पोतानी ख्वी मात्रमां सं-  
 तोप, अनीह्यालुस्वज्ञाव, मंदकषाय, अने अवकाचार, शील, ए पुरुष वेदनाआश्रमो हे.  
 ख्वी तथा पुरुष चंबेनी घ्यर्य चुंबनादि अनंगसेवा, उग्रकषाय, तीव्र कामेहा, पांखंक अने  
 ख्वीना ब्रतनो लंग करवो ए नंपुसकचेद बांधवाना आश्रमो हे. साधुठनी निंदा करवी,  
 धर्मिष्ठ लोकोने विष्म करवां मधु मांसादिशी अविरत पुरुषोनी पासे ते अविरतिनी प्रश-  
 सा करवी, देशविरती पुरुषोने वारंगार अंतराय करवो, श्रवा रितपणे ख्वीयादिना गुणो  
 नुँ आख्यान करेतुँ, चारित्रने दुषण आपवुँ अने बीजाउना कषाय अने नोकषायने उदी-

गणा कर्मचारी ग. चारित्रिमोहनीय कर्म वांधवाना सामान्य आश्रयो ठे.

पंचेद्दूरि प्राणीउनो वध, घणो आरंज तथा परीग्रह, अनुग्रह करवानो ल्याग, मांसचो-  
उन, सदा। स्थिर वेरवुँक्कि, रोड़श्यान अनंतानुवंधि कपाय, कुण्ण नील अने कापोत्तेज-  
इया, असल्य लापण, परदन्य हण, वारंवार मिश्वन सेवन, अने इंडियोरुं अवशपण्ण-  
ग. नक्कगतिरुं आयुल्य वांधवाना आश्रयो ठे. उनमार्गे चालवानी देशना, मार्गनो नाश,  
युत रीते वित्तरुं रक्कण, आर्तिध्यान, शहद्यसहितपण्ण, माया, (कपट) आरंज, परियह,  
शियळमां तथा ब्रतमां स्तानिचारपण्ण, नोल तथा कापोत्तेजेश्या अने अप्रत्याहयानी कपाय  
ग. तिथ्यचगतिरुं आयुल्य वांधवाना आश्रयो ठे. अद्य परियह तथा आरंज, स्वाता-  
विक कोमळता अने सरळता कापोत अने तेजोलेश्या, धर्मध्यानमां आतुराग,  
प्रत्यावानी कपाय, मध्यम परिणाम, ढान टेवापण्ण, देव अने गुरुरुं पूजन, पूर्वालाप, प्रि-  
याद्वाप, मुखे समजाववापण्ण, दोकसमुहमां मध्यस्थपण्ण, ए. मतुपगतिरुं आयुल्य वांध-  
वाना आश्रयो ठे. सरागसंयम, देशसंयम, अकास्मनिर्जरा, कद्याण मित्रनो परिचय,  
धर्म श्रवण करवारुं शीळ, पात्रदान, तप, अळा, त्रण रत्नी आराधना, मृत्युकादे पक्ष

आश्रवा पीतेलेहशार्दुं परिणामम्, बाल तप, अग्नि, जल विग्रेरे साधनोवने मृत्युं पासर्वं, गाले  
फांसो खावो, अने अडयक सामायिकपण्यं ए देवगतिर्दुं आशुष्य बांधवाना आश्रवो डे.  
मन, वंचन, कायानी वक्रता, बीजाउने भेतरर्दुं, माया प्रयोग करवो, मिष्यात्व, [पश्चनता],  
चित्तनी चपलता, सुवर्णादिकनो प्रतिर्दंद करवो एटले बनावटी सुवर्णादि बनावर्दु, खोटी  
साढ़ी पुरवी, वर्ण, गंध, रस, अने इपर्णानुं उदी रिने संपादन करर्दुं, कोइनां अंग उपांग  
कापवां कपाववां, यंत्र तथा पंजरनी क्रिया, खोटां साप, खोटां तोल तथा खोटां न्नाजवां  
बनाववां, नायरवां, अन्य निंदा, आहमप्रशंसा, हिंसा, असत्यवचन, चोरी, अबहाचर्य,  
झोटा आरंद, मोटा परियह, कठोर वचनो बोद्धवां तथा कनिष्ठ जाषण करर्दुं, उडवल वेषा-  
दिकशी मद करवो, चाचाळपण्यं, आक्रोश करवो, सौचार्यनो उपघात, कामण करर्दुं, ला-  
गीपणानी विरुद्धनाशी—दांजिकपणाशी उन्मार्गी यति वगेरे आइने बीजाउने कौतक  
उत्पन्न करर्दुं, वेर्या प्रमुखने अलंकार आपवा, दाङानळ सल्लगाववो, देवादिकना मिष-  
शी गंधादिक वस्तुनी चोरी करवी, तीव्र कषाय, चैत्य, उपाश्रम, उद्यान अने प्रतिमा-  
उनो विनाश करवो अने अंगारादिक पंदर कमाद्दाननो किया करनी, ए, सर्व अशुल

नामकर्मना आश्रो ठे. उपर कहेलाएँ विपरीत किया, संसारमधी लीकता, प्रभादनो  
नाश, सद्भावनु अदृष्ट, हांति बिगेरे शुणो, धार्मिक पुरुषोंनु दर्शन, संच्रम अने तेमनो  
सत्कार—ए. शुचनाम याचत् तीकर नामकर्म वांधवाना आश्रो ठे. २ अहंत, ३ सिद्ध,  
३ मुक्त, ४ स्यविर, ५ वहुश्रुत, ६ गतु, ७ श्रुतहान अने उ तपस्वीठे (मुनी) नी जाकि,  
ए आवश्यकादि कियामां, १० चारित्रमां, तथा ११ ब्रह्मचर्य सेवनमां अप्रमाद, १२ विनय,  
१३ ज्ञानात्म्यास, १४ तप, १५ त्याग (दान), १६ वारंवार ध्यान, १७ तीर्थनी प्रजावना, १८  
चतुर्विध संघने समाधि उपजावनी तथा साधुउनी वैयावच करवी, १९ अपूर्व ज्ञाननु  
ग्रहण करवुं, अने २० समकित दर्शननी शुद्धि. आ विस आश्रो (स्थानको) पहेला अने  
ठेहुा तीर्थकरोए इपसोला ठे. अने बीजा तीर्थकरोए एक, वे, तण अश्रवा सर्वे स्थानको  
इपसोला ठे. परनिंदा, अवहाने उपहास, सट्टगुणोनो खोप, उता अठता दोपतुं कथन, पो-  
तानी प्रशंसा, उता अठता गुणनां वस्त्राण, पोताना दोपतुं आडादन अने जाति बिगेरेनो  
मद्द करगो ए तीचगोत्रता आश्रो ठे. तीचगोत्रमां कहेला करतां विपरीत आश्रो  
गर्भीरहृतपत्तुं अने मन, बचन, कायाएँ विनय करवो ए ऊचगोत्रना आश्रो ठे. दान,

दान, वीर्य, लोग तथा उपचारमां मिषथो। वा मिष बगर पटले कारण के बगर कारणे  
जे विष करनुं प अंतराश्रकमना आश्रवो हे। आवी रीतना आश्रवो जन्म पामेलो आ  
अपार संसाररूप सागर दीक्षारूप वहाणवडे चिद्धान पुरुषोप तरी जवाने योग्य हे।

३१ श्रीतलनाथजीनी देशाना.

आ संसारमां सर्व पदार्थादि, चिविध जातनां डुःखनां कारण अने हाणिक रे ते-  
श्री सर्व प्राणीठेप मोहने माटे प्रयत्न करवो जोइप. ते मोहा संवर करवाशी अह शके  
रे। सर्व आश्रवोनो जे निरोध करवो ते संवर कहेवाय हे। ते संवर, ऊऱ्य अने जावशी  
वे प्रकारे हे। जे कर्भ पुढगळना ग्रहणनो छेदन करे ते ऊऱ्यसंवर कहेवाय हे, अने जे-  
मां संसार हेतु कियानो ल्याग थाय ते जावसंवर कहेवाय हे। जे जे उपाय योजवो उ-  
श्रवनो निरोध थाय ते आश्रवना निरोधने माटे विद्वानोप ते ते उपाय योजवो उ-  
चित हे। ते उपाय आ प्रमाणे। कृमाश्री कोधनो, कोमलताश्री माननो, सरदताश्री माया  
नो, अने निःस्पृहताश्री लोजनो निरोध करवो। असंथमवदे उन्मत्त अयेला विष जेवा  
विषयोनो महामति पुरुषे अखंक संयमवके निरोध करवो, त्रण गुप्तिनश्री त्रण योगने

वश करना, अपमादणी प्रसादत्वे साध्य करवो. अने सर्वं सावद्य योगना ल्यागी अविर-  
निने साध्वी (कवजे करवी). संचरने अर्थे उच्चम करनारा पुरेसे सदृशनशी मिश्यत्वनो  
अने चित्तनी उत्तम स्थिरताशी रौद्रध्याननो विजय करवो. जेम सध्य चोकमां आविदा  
वणा द्वारचाला घरनां द्वारो जो उघाफां रहे तो तेमां जरुर रजनो प्रवेश आय रे, अने  
प्रवेश अयेल रज स्नेह (चीककाश) ना योगशी तन्मयपणे वंधाइ जाय रे; पण जो ते घरनां  
द्वार चंध करी दीधां होय तो तेमां रज पेसती नशी, तेम दृढपणे बळ पण शती नशी.  
वल्ली जेम कोइ सरोवरमां चारे वाञ्छ गर्नालां खुद्दां होय रे तो ते सर्वं द्वारोशी जळ पेशी  
जाय रे पण जो ते द्वार हंथेलां होय तो तेमां जरा पण जळ पेशी शकतुं नशी. तेम ज  
कोइ उडाणना सध्य ल्यागमां तिझो होय रे तो तेमांशी जळ पेशी जाय रे पण जो ते  
तिझो चंध करी दीधां होय तो तेमां जरा पण जळ पेशी शकतुं नशी; तेवी रीते योगा-  
दिक आश्रवोद्वारानुं सर्वं प्रकारे रुधन करवाशी संवरशी शोकता एवा जीवमां कर्म इ-  
टयनों प्रवेश यङ् शकतो नशी. आश्रवद्वारनो निरोध संवरवरे आय रे अने ए संवर कृ-  
मा विग्रे नेड़शी अहु प्रकारे कहेलो रे. चक्रता चक्रता गुणस्थानोमां जेनो संवर

याय ते ते नामनो संवर कहेवाय ले. पारंगतोमां मिश्यात्वनो उद्य चंध अयायी जे संवर  
 याय ले ते मिश्यात्वसंवर कहेवाय ले. देवविरति विगेरे गुणवाणामां जे संवर आय ले  
 ते अविरति संवर ले. अप्रमत्त संयत विगेरे गुणवाणामां जे संवर आय ले ते  
 प्रमादसंवर कहेवाय ले. उपकांत मोह ने क्षीणमोह गुणवाणामां कपायनो संवर अचा  
 शी ते कपायसंवर कहेवाय ले. अने अयोगि केवली नामना चौदमा गुणवाणामां योग  
 संवर सपूर्णपणे आय ले. जेम वहाणवटी डिदरहत वहाणवटे समुदना अंतने पाले ले  
 तेम सद्गुरुद्वालो पुरुष उपर प्रमाणे संवरयुक्त अइने आ संसारना अंतने पाले ले.  
 श्री श्रेयांसनाथजीनी देशना.

आ अपार संसार स्वयंल्लूरमण समुदना जेबो ले, तेमां प्राणी कर्मरूपी भर्मित्य  
 आरो अब्लो ने उच्चे नीचे अर्थात उँचै, अधो ने तिर्हा लोकमां जम्या करे ले. पवनशी  
 जेम स्वेदविन्दु अने औषधशी जेम रस करी जाय ले तेम निर्जरावके आठ कर्मो ऊरी  
 जाय ले. संसारना बीजोशी जरेला एवा कर्मोनी निर्जरणा करवाशी तेनुं नाम निर्जरा  
 कहेवाय ले, ते निर्जरा सकामा अने प्रकारनी ले. जेउ यमनियमना धर-

नारा ठे तेमने सकाम निर्जरा याय ठे अने चीजा प्राणीउने अकाम निर्जरा याय ठे।  
कमेनी परिपक्ता फलनी पेउ प्रयत्नी अथवा स्वयंसेव एम वे प्रकारे याय ठे। जेम  
सुचर्ण दोपचालुँ होय तोपण प्रदीप अग्निको शुक्र याय ठे, तेम तपरूप अग्निवर्डि  
सदोप जोच पण शुद्धिने पासे ठे। ते तप वाहु अने अखंतर एम वे प्रकारनो ठे। अनशन,  
उनादरी, बुनिसंकोप, रसलाग, कायहुङ्केश, अने संखोनता ए, ठ प्रकारे वाहुतप कड्याय  
ठे। प्रायश्चित, वैयाकृत्य, स्वाक्ष्याय, विनाय, ड्युहसर्व अने शुज्ज्ञायान ए ठ प्रकारि आखंतर  
तप कड्याय ठे। आ वाहु अने अखंतर तपलभी अग्निने प्रज्ञविलात करीते नियसधारी  
युक्त पोनाना ठुंजर एचा कमाने पए जरानी ढेरे। जेम कोइ सरोवरचुँ ढार उपायोओ सच्च  
तरफ चंध कहुँ होय तो पठी नवा जल प्रचाहशो ते कढी पण पुरातुं नशी तेक्की रोते सं-  
चरशी। आचुत श्वेदो जीव आश्रवरूप ढारोनो रोध करचाशी नवा कर्मेकर्दयो वर्के  
पुरातो नशी। पठी ऐम पूर्व सचित श्वेदुँ सोचरवुं जल मूर्खना प्रचंक किरणोना आवि-  
शिक्ता पापर्व। सुकाइ जाग ठे तेम पूर्व वांधेदा प्राणीहुनां कहर्म पण तपस्वाना तापशी तत्का  
य दृय पासी जाय ठे। निर्जरा करचासां वाहुतप करतां आचन्तरतप थेएष ठे अने तेमां

पुण्यानन्दं एक उत्तर राज्य रहे हुए ऐ मुनिन्द्र कहे हैं। कारण के ध्यान धरनारा वो-  
गीड़ना चिरकालयी उपार्जन करेलां अने घण्ठां प्रवल कर्म पृण तत्काल निर्जरीकृत अद्व-  
जाय हैं। ऐ मुद्दि पासेलो शारीरिक दोष लंबन करवायी सोपाइ जाय है तेवी रोते तप  
करवायी पूर्व संचित कर्म कृय पासी जाय है। अश्वा मेघनो समुह प्रचंक पञ्चना  
आधातयी आम तेम विखराइ जाय है तेम तपस्यायी कर्मनो समुह विनाश पासे है।  
उयारे संचर अने निर्जरा प्रति कृण समर्थपृण भत्कर्ष पासे है त्यारे ते जहर मोहने उत्पन्न  
करे हैं। वंते प्रकारती तपस्यायी थती निर्जरावके कर्मोने जरावनारो शुद्ध बुद्धवालो  
पुरुष स-५ कर्मोशी जेमां मुकावापृण आय है एवा मोहने पासे हैं।  
श्री वासुपुत्र निजननी देशना।

आ॥ संसाररूपी समुद्रमां शमिला शुगना संयोगनी पेरु मांक मांक मनुष्यपृणं  
प्राप्त करी पुरुषोप धर्म परायण थवुं जोइए, ते धर्म सर्व उत्तम जिनेश्वरोप कहेलो है। जे  
धर्मने अवलंबन करनार प्राणि आ संसार सागरमां कुवतो नथी, ते धर्म संयम, सत्यवा-  
णी, शौच (पवित्रता), ब्रह्मचर्य, निष्परिग्रहता, तप, कृमा, मुड़ता, सरदता अने निर्दो-

कना ए दृश्या प्रकारे कहेवाय रे. कहुपवृक्ष बगोरे पदाशों पण धर्मना प्रजावयी एवी इच्छित  
वर्मने आपे ठे के जे वद्दु अधर्मीउनी हुएप पण आवती नमी. हमेशा पासे रहेनार  
आने अति वातसल्यने धारण करतार एक धर्मरूपी बंधु आपार उःखसागरसां पडता  
प्राणीउने चनावे ठे, समुद्र पृथ्वीने बोली नांखतो नमी अने वरसाव धृथ्वीने आ शा-  
सन आपे ठे ते केवल धर्मनो प्रचाव रे. अग्नि आडी गीते बाल्हतो नमी आने पचन उधर  
आगमां चातो नमी ते पण धर्मनोज अविवेय सहिताठे. आकंचन ज्ञाने आधार वगरनी  
दूरी जे सर्वते आधार आपी रहेली ठे नेमां धर्म स्तिवाग दीनुं कांइपण कारण नमी.  
धर्मनाज शासनतमी चिवता भपकारने माटे सूर्य. चंद्र, आ जगतमां उदयने पासे ठे. ए  
विश्ववस्तुल धर्म बंधुवगरनानो बंधु ठे, नित्रगहित पुलोनो जित्र ठे, अने अनाश्र पुल-  
पानो नाथ ठे. धर्म पानालमां रहेल नक्कमां पडता प्राणीउनी रक्ता करे ठे अने ठेवटे  
अनुपम सर्वज्ञपाणाना वे तवने पण धर्मज्ञ आपे ठे.

आ दृश्य प्रकारनो धर्म मिथ्याद्वित्तुए तात्वीकपणे चीलकुल जोयो—जाल्यो नमी,  
आने कट्टी कोइ नेकाणि कोइप कहो हशे तो फक्त ते मात्र वाणीतुंज तुल्य ठे. प्रायः सर्वनी

वाणीमां तत्त्वार्थ होय ते अने कोइकना मनमां तत्त्वार्थ होय ते पण जिनमतने सपर्य कर-  
नार पुरुषोनी तो वाणीमां, मनमां अने कियामां सर्वमां तत्त्वार्थ होय ते. वेदशास्त्रने  
पराधीन बुद्धियाढा अने कंठमां सून (जनोइ) पहेरनारा ब्राह्मणो तत्त्वार्थी धर्मरहनो लेश  
पण जाणता नअी. गोमेध, तरमेध अने आ श्वमेधादिक यड्कोने करनारा प्राणीधातकया-  
दिक ब्राह्मणोने शी रीते धर्म प्राप्त आय? जेमां श्रद्धा आय नहि तेची अठती परहपर  
निरोधी एची कढिपत वस्तुने कहेनारा पुराणकर्त्ताउमां पण क्यांशी धर्म होय? खोटी  
खोटी व्यवस्थावरके, परदङ्घने ग्रहण करवाने इहुता एचा स्मार्तादिक पुरुषोमां शाश्र-  
माटीने पाणीवको केची शीते शौच (शुद्धि) पणुं होय? अहुतुकालने व्यतिकम थतां ल्ही  
सेवन न करे तो गर्चहल्लातुं पाप लागे एवुं कहेनारा अने बहुचर्यनो नाश करनारा  
पुरुषोमां शी रीते धर्म संजावे? यजसान पासेशी सर्वस्व लेवाने इहुता अने द्वयने माटे  
प्राणतो पण ल्याग करता एचा ब्रह्मणोमां आकिंचन (निष्परिग्रह) पणुं क्यांशी होय?  
अदपमान अपराध थतां कणचारमां शाप आपनारा एचा ल्हौकीक ऋषिद्वामां द्वासानो  
देश पण जोवामां आवतो नअी. जाति विगेरेना मद्धी अनें दुराचरणथी जेमनां चिन्त

नान्या करे ते पद्मा चोथा आग्रह सां रहेनागा (संन्यासी) ग्राहणोसां को महता (निरजिमान  
पण) दयां जोवासां आवे ठे ? अंदर दंन राखनारा अने वाहेर वगलाजक बनी रहेनारा  
एवा पावृत्तनाळा दिजोसां सरकताना॒ एक लेश पण नशी. ह्ली, एहू, अने पुत्रा-  
कुकना परिप्रहनाळा अने दोना तो एक कुप्रहरूप ब्राह्मणोनी केवी रीते तुलि-  
याय ? अथवा तेमां निलो वता धर्म केस संचावे ? माटे राग द्वेष अने नोहुशी विजित  
तया केनलङ्घानशी शोनतारा अहृत चगवंतोनी लोनता उडक्क्ष धर्म उपरशीज निर्दो-  
षता तिळ्ड थाव ठे. राग ठेष अने सोहशीज माणसमां असत्यवादीपणुं आवे ठे तो ते  
दोष अहृत तगवंतां लेश पण होता नयी तो यी रीते तेमनामां असत्यवादीपणुं  
आवी शाके ? जेउनां चिरा रागादिक दोषोथी कल्पित धयेलां होय ठे तेउना मुल-  
मांसी कद्रीपण सत्यवाणी नीकलती नयी, जेउ याग, होम विग्रे इष कर्म करे ठे, वा-  
पि रूप अने तलाव निगरेसां नहावाशी पुण्य माले ठे, पशुनो घात करीने खर्गखोकर्तुं  
सुख शोधे ठे, वाहनोते नोजन आपचाशी पितृउन्ने तृप्त करवाने इहे ठे, पृतयोनि वि-  
गोर करीने प्रायश्चित करे ठे, पांच प्रकारनी आपन्तिउ आवतां खीड्ने पुनर्दम्भ करावे ठे.

जो ल्हीमां पुत्र थवानो संचाव होय तो तेनासां क्षेत्रज पुत्रनी उत्पन्नि करवी ए प्रसाणे कहे  
ठे, दोषित ल्हीले रज (आंतराय) आवे त्थारे शुद्ध धाय ठे ए प्रसाणे माने ठे, कल्याणनी तु-  
प्रदए यहइमां चक्करने मारी तेना शिख (दिंग) थी आज्जी विका करे ठे, सौनामणि अने रास  
तंतु यहइमां महिराचुं पान करे ठे, विद्या खानारी गायोनो शपर्स करने पवित्र थवाचुं  
माने ठे, जखादिकसां मात्र खान करवायी पापनी कुक्किथ आय एस बोले ठे, वड, पीपला अने  
आंवली विगोरे वृद्धोनी पूजा करे ठे, आजिसां होमेला हृष्टयशी देवने हृष्ट करेला माने ठे,  
पृथ्वी उपर गाय ढोवायी रिटनी शांति आय एस वदे ठे, ख्वीलुने मात्र चिडंबना करे  
तेवा धर्मवतनो उपदेश करे ठे, सोटी जटा, चहसवडे अने कोणी नने धारण  
करे ठे, आकडा, धंतूरा, अने खादूरना पुषोथी देवने पूजे ठे, भीत, वृत्त्य करतां चार-  
वार अपशाहदो बोले ठे, मुख वगाडीने गीतनाद आचरे ठे, असच्य जाषापूर्वक देव,  
मुनि अने लोकोने दृग्ये ठे, वतनो चंग करने द्याती दासपणु करवाने इडे ठे, अनंत-  
काय एवा कंदादि लथा फल मूल अने दृंगुलुं लहाण करे ठे, ग्री अने युत्तरहित  
जइने वतमां वसे ठे, जद्यु-अन्नहय, पेय-अपेय अन्न गङ्गा-अग्न्यां समानपणे वर्ते

ते, योगी पावा नामे प्रसिद्ध थाय रे अने केटखाक कौदाचार्यना क्रिय थाय रे. एउने अने ग. सिवाय चीजा पण जेउता चितमां जैन शासननो इपर्याथयो नथी एवाउने धर्म चुं? तेउं फल पण चुं? अने तेमना धर्ममां प्रसाण पण चुं?

श्री जिनेन्द्र जापीत धर्ममां आराधनथी आ लोकमां अने परखोकमां जे सुखकारी फल थाय तेतो तेउं आनुषंगिक (अचांतर) फल रे, पण तेउं मुख्य फल तो मोहकज ठे. जेम कुषि करवानो मुख्य हेउ धान्य मेलचानो रे, तेमां पराल विग्रे जे आय ते आनुषंगिक फल रे. तेम धर्म करवाउं मुख्य फल मोहकज ठे. तेमां जे सांसारिक फल थाय ठे तेतो आनुषंगिक फल रे.”

श्री विमलनाथजीनी देशना.

अकाम निर्जराहूप पुण्यथी प्राणीने स्थावरपणाथी ऋतपणु के तिर्यच पंचेन्द्री-पणु मांड मांड प्राप्त थाय रे. तेमां पण उयरे कर्मनी दाघवता थाय त्यार परी मनुष्य जन्म, आर्थदेश, उत्तमकुळ, सर्व इंद्रियोरुं पाटव अने दीर्घ आयुष्य कथंचित् मेलचाय रे. ते करतां पण विशेष पुण्य होय तो धर्मकथक गुरुनी जोगवाह अने शास्त्रानुं श्रवण

तथा तेसां शक्ता पट्टवां वातां प्राप्त आय रे. पण तेसां तदन निश्चयरूप बोधिरत् ग्रास थवुं वर्ण्यं डुर्लभ रे. जिनप्रवचनमां जेवुं बोधिरत् अख्यंत डुर्लभ रे तेवुं राजापण्यं, चक्रवर्तीपण्यं के दृढपण्यं मेळववुं डुर्लभ नशी. सर्वे जीवोपे पूर्वे अनंतवार सर्वे जावो प्राप्त करेला हवो पण उयां सुधी आ संसारमां ते जीवेवुं परिक्रमण जोवासां आवे ठे यां सुधी तेलेप कदी पण बोधिरहनी प्राप्ति करेली जणाती नशी. सर्वे प्राणीइने आ संसारमां परिक्रमण करतां आनंत पुद्गगल परावर्तन यद्य गयां ठे परंतु उयारे ठेह्डो अर्कु पुद्गगल परावर्तन संसार अनवेष हवे त्यारे सर्वे कमांती स्थिति एक कोटाकोटी सागरोपमशी ठेठी य आप्रवृत्ति करण्वडे करीने कोइ प्राणी गंधज्ञेद शवाशी उत्तम बोधने पासे ठे. केटदाएक जीवों यथाध्यवृत्तकरण करवाशी ते गंधिना सीमाडा उपर प्राप्त शया 'होय तोपण त्यांधी सीदाइने पाठा वडे ठे अने पाबा संसारमां जासे ठे. कुशाळाद्युं श्रवण, मिथ्याहटिनो समागम, नठारी वासना, अने प्रमाद करवानी टेव-ए समकित प्राप्तनी सासे अनारा शत्रुउे ठे. जो के चारिघनी प्राप्ति पण डुर्लभ कहेली ठे पण जो बोधिनी प्राप्त अद्वैय तो ते सफल ठे अन्यथा निष्फल ठे. अजठय प्राणीउे पण चारित्र ग्रहण करीने

नवमा येवेयक सुर्थी उत्पज्जन आय ठे, पण वोधि विना तेऊ मोहपदने पासी शकता नव्ही. चक्रवर्ती पण यो धिरलती प्राप्ति विना रांक जेवो ठे, अने वोधिरलते प्राप्त करनारो रांक होय तो पण तेनाथी अधिक ठे. जेऊने वोधिरलती प्राप्ति शट् होय ठे तेऊ कदी पण आ संसारसाँ राग करता नव्ही, पण समतारहित शट्ने मुक्तपणे मुक्ति माग्नेज जाले ठे.

श्री अनंतनाथजीनी देखाना.

अहो जठर्यजीचो ! तत्कने नहि जाणनारा ग्राषीले, मार्गदी आजाएया वटेमारुनी जेस. आ ठुस्तर संसाररूप आएएयमां छटक्या करे ठे. जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, वंथ अने मोहा ए सात तत्वो विद्वानो कहै ठे. तेलां प्रश्नपत्र तत्व जे जीव, ते मुक्त अने संसारी दृश्य वे शकारे ठे. तेऊ सर्व अनादिनिधन अने झानदर्शन दाढ़ायवाढ़ा ठे. तेसां जे मुक्त जीव ठे ले एक स्वजावी, जन्मादिद्धूषाथी वार्जित अनेंतदर्शन, अनंतझान, अनें अनंतवीर्य तथा अनंत आनंदशी द्याप्त हे. संसारी जीव स्थान अने नक्षत्र एवा द्ये शकारना ठे. ते बंनेना पर्याप्त अने अप-

यादित राजा वे ब्रेड थे। तेसां पर्याप्तपणाता कारणलुप पर्याप्तिर्थे का थे। तेना आहार, शरीर, कंडिग, शासो शास, खापा अनें मन एवं नाश हे। ते पर्याप्ति एकेदियने चार, विकल्पेदिने पांच अनें पञ्चजिले ठं प्रसादे अनुकले थे। पृष्ठविकाय, अपकाय, तेजो-काय, वायुलाय अनें वत्तस्पतिकाय ए पांच एकेदिय स्थानवर जीव कहेवाय थे, तेसां प्रथमना चार सूक्ष्मा अनें वादर एवा वे प्रकारे हे। पांचशा जे वनस्पतिकाय, ते इत्येक अनें साधारण एवा दे प्रकारे हे, तेसां ग्रटेक वादरज ठं अने साधारण सूक्ष्मने वादर वे प्रकारे हे।

त्रस जीवो वेंदिय, तेंदिय, चतुरिदिय, अने पंचेदिय एम चार प्रकारे हे, तेसां पंचेदिय संही अने आसंही एवा वे प्रकारना हे। जे जिहा, उपदेश अने आदापने जाए अने सनप्राणने अवत्तिं ले संही कहेवाय हे अने तेषी विपरीत—सन वनाना ते आसंही कहेवाय हे। सपर्वना, रसना, नासिका, नेत्र अने श्रवण ए पांच दियों कहेवाय हे। सपर्व, रस, गंध, रुप अने वाढद ए पांच तेना आसुकमे विषय हे। कुमि, शंख, गंदूपद, जदो, कोडीलु अने ढीप विविध जीवो ढांडिय थे। जु, सा-

नि-  
सुहम

कड़, मंकोडा औने लील विगोरे जीविय जीव ठे, अने पतंग, महिंका, ब्रह्मर अने डांस  
विगोरे चतुर्दिक्षिय जीवो ठे. पंचंक्षिय जीवोंतां जल, स्थल अने आकाशचारी एस त्रण  
प्रकारना नियन्त्रजीवो, नारकी, तातुल्य अने देवताने गणेशा ठे. मनोवस्तु, जाग्रावस्तु  
अने कायवल ए त्रण वल, पांच इंद्रियो अने श्वासो श्वास तथा आयु ए दशा प्राण कहे-  
वाय ठे. कायवल, आयुल, भट्टाल अने स्पर्शांक्षिय ए चार प्राण सर्व जीवोंमां ठे. विक-  
लंदिमां ज्ञाया अने एकेक इंद्रिय वधवायी ठे, सात, ते आउ प्राण ठे. असंझीने एक  
इंद्रिय वधवायी नव प्राण होय हे अने शूण्यंतंझीने मनससहित दशा प्राण होय ठे. दे-  
वता अने नारकी उपगतिवये उत्पत्त याय ठे. मनुष्यो गन्धमांयी उत्पत्त याय ठे अने  
निर्यन्ते जरायु अने इंडानांयी उत्पत्त याय ठे. वाकीला संमूहिम पंचेंद्री, विकलेंद्री तथा  
एकेदो संमूहिम रिते भवतज्ज्ञ याय ठे. सर्व संमूहिम जीवो अने नारकीना पापी जीवो  
मात्र नपुंसक बेदीजा होय ठे. देवता—ली अने पुरुष वे वेदवाला होय ठे अने बाकीना  
गर्वज तिथंच अने संगुव्य-ली, पुरुष अने नपुंसक वेदी होय ठे.

गोदना जीको ले ते अठवयहारी ले ओने वाकीना सर्वे ठयवहारी ले।  
 ३ संचिना, १ अचिना, ३ संचिताचित्ता, ४ संचिता चित्ता, ५ असंचित, ६ संचिता संचित, ७ पुरुषी, अप्, आमि अने चाकुकायनी—प्रलेकनी सात सात लाख योनि, प्रलेक वनस्पतिनी अने अनंतकायनी अनुकमे दश ने चौद गळी चोरीश लाख योनि, विकल्पिनी उ लाख योनि, सद्गुरुजनी चौद लाख योनि अने नारकी, देव तथा तिर्थचंच-दियनी चार लाख योनि एम सर्व मळीने चोराशी लाख योनिते सर्व जीवनी एक-एक इय सूक्ष्मने वादर पंचेइय सज्जी अने असज्जी तथा चेंडिय तेंडिय अने चौरेइय ए सात पर्यात अने सात आपर्यात मळीने जीवोना मूळ चौद लेदो जिनेश्वरे कहेदा ले अने तेनी मार्गणा पण १ गति, २ इंडिय, ३ काय, ४ योग, ५ वेद, ६ झान, ७ कषाय, ८ संथम, ९ आहार, १० हृषि, ११ लेश्या, १२ लाभ, १३ सम्यक्तव अने १४ संझी एम चौद कहेली ले। तेमज सर्व जीवोना गुणदशान पण १ मिथ्याहृषि, २ सास्वादन

दर ले, ते केवलझानीए झानबडे जोयेली ले।

गोदना जीको ले ते अठवयहारी ले ओने वाकीना सर्वे ठयवहारी ले।  
 ३ संचिना, १ अचिना, ३ संचिता चित्ता, ४ संचित, ५ असंचित, ६ संचिता संचित, ७ पुरुषी, अप्, आमि अने चाकुकायनी—प्रलेकनी सात सात लाख योनि, प्रलेक वनस्पतिनी अने अनंतकायनी अनुकमे दश ने चौद गळी चोरीश लाख योनि, विकल्पिनी उ लाख योनि, सद्गुरुजनी चौद लाख योनि अने नारकी, देव तथा तिर्थचंच-दियनी चार लाख योनि एम सर्व मळीने चोराशी लाख योनिते सर्व जीवनी एक-

सम्यग्गृहिति ३ सम्यग्गृहिति मिथ्याहृषि मिश्र, ४ अविरत सम्यग्गृहिति ५ विरताविरत  
(देशविरति) ६ प्रमत्त ७ अप्रमत्त ८ निवृत्तिवादर ९ अनिवृत्तिवादर १० सुदृशसंपराय  
११ उपशांत मोह १२ कीणमोह १३ सयोगी अनेऽप्य अयोगी एम चौट कहेलां रे.  
१४ मिथ्यादर्थनां उदय तरे प्राणी मिथ्याहृषि होय रे, १५ परंतु जायकपणा दिकनी  
अपेक्षाए ते मिथ्याहृषि गुणस्थान कहेवाय रे, १६ मिथ्यावना अनुदयजावमां वर्तता  
ने अनंतातुर्बंधीतो उदय यथे सते 'सास्वादन' सद्यग्गृहिति गुणस्थानक होय रे, तेनो  
उल्लृष्ट आवलीनो काळ डे. १७ समकिताने मिथ्यावना संयोगश्री अंतरमुहूर्तनी  
स्थितिकालुं मिथ्यादर्थन नामे गुणस्थानक आष रे. १८ अप्रलालयनी कथायोना उदयशी  
परंतु अनंतातुर्बंधी कथायोना क्षय, उदयसम के क्षयोपशमश्री 'अविरत सम्यग्गृहिति'  
नामे गुणस्थानक आष रे. १९ ग्रहयालयनी कथायोना उदयशी विरताविरत (देशवि-  
रति) नामे गुणस्थानक आष रे. २० संब्रह ( सर्वविरति ) ने आपत कर्या उतां तेमां  
ने प्रमाद करे रे ते प्रसत्तसंवस नामे गुणस्थानके ले अने जे प्रमाद करता नष्ठी ते अ-  
प्रमत्तसंवत नामना सातमा गुणस्थानके रे. आ बंते गुणस्थानक परस्पर परस्परिष क-

रिने अंतरमुहूर्चनी स्थितिजाना रे. ८ जे गुणस्थाननी ब्राह्मि अचाची कमोंनो स्थिति यात विगोरे अपूर्व रीते आय ते 'अपूर्वकरण' नामे आठमुँ गुणस्थानक रे, तेगां प्राप्त अयेव मुनि उपशमधेणी अथवा कृपकशेषीपर आरुड आय रे. तेमज ५ गुणस्थानमां ब्रवेश यवेला मुनिनेता परस्पर वादर कषायोना परिणाम निवृत्ति पासे छे तेथी तेर्वं 'निवृत्तिचादर' एवं पण नाम छे. ६ जे गुणस्थान एक समयमां साथे चडेला मुनिनेता परस्पर वादरकषायोना निवर्तेला परिणामनो फेरफार थलो नथी. सर्वना एक सरलाज प्रणाम डयां वर्ते छे ते 'अनिवृत्तिचादर' नामे नवमुँ गुणस्थानक रे. तेनी प्राप्तिवाळा मुनि उपशमधेणी के कृपकशेषीपर आरुड होय रे. १० पूर्वे नवमे गुणस्थान दोचत नामनो कषाय सुदृप किहीरुप करेल रे तेने वेदता 'सूक्ष्मसंपराय' नामे दशमुँ गुणस्थानक आय रे. तेसां प्राप्त अयेव मुनि पण उपशमधेणी के कृपकशेषीपर आरुड होय रे. ११ मोहनो उपशम अचाची 'उपशांतमोह' गुणस्थानक प्राप्त आय रे. १२ वातिकर्मनो द्वय १२ मोहनो द्वय करताची 'क्षीणमोह' गुणस्थानक प्राप्त आय रे. १३ वातिकर्मनो द्वय अचाची केवलझाननी उपत्ति आय रे ते 'सयोगिकेवळी' नामे तेरमुँ गुणस्थानक ठे.

अने १४ मन, वचन, कायना योगनों कृप्य थवाची 'अयोगीकेष्ठी' तामे चौदमुं गुण-  
स्थानक प्राप्त थाय रे. आ प्रमाणे जीव तत्त्वानु स्वरूप जाणु.

है अजीव तत्त्वानु स्वरूप कहे रे.—यमास्तिकाय, अ यमास्तिकाय, आकाशास्ति-  
काय, काळ अने पुडगळा स्तिकाय ए पाच अजीवकृप्यने जीवकृप्यस हित करवायी  
पट्टदब्य थाय रे. ते पट्टदब्योमां काळ विना पांच कृप्यों प्रदेश समूहरूप रे, जीव  
विना वाकीना इव्य अचेतन अने अकर्ता रे, काळ विना वाकीना इव्य अस्तिकाय रे  
अने पुडगळ विना वाकीना इव्य अरुपी रे. गण इव्य उत्पाद, लयन अने ध्रौढ्य स-  
रूपी रे. पुटगळो स्पर्श, रस, गंध अने वर्णरूपे रे, तेना अणु अने संकंध एवा बे प्रकार  
रे. अणु अवकृ रे अने संकंध वकृ रे. जे वकृ संकंध रे ते गंध, शब्द, सूक्ष्म, सू-  
क्ष्म, स्पर्श, अंशकार, आतप, भवोत, नेद, अने गायरूपे परिणमे रे अने ते इना-  
वरणादिकर्म पांच प्रकारना शरीर, मन, ज्ञाना दिवेष्टा, अने श्वासोश्वासना  
दायक रे; तेमज सुख, डःख, जीवित अने मृत्युरूप उपग्रहना करनारा रे. आ लोकमा  
धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रण तो प्रत्येक एकेकज इव्य

ते अने ते सर्वदा अमूर्ति निलिक्य अने स्थिर हे. धर्मस्तिकाय अने स्थिर हे. धर्मस्तिकाय अने सकल लोकव्यापी हे. तेसां पो-  
एक जीवना प्रदेश मेट्डा असंख्यात प्रदेशवाला अने सकल लोकव्यापी हे. तेसां कियासां स-  
तानी मेले हालना चालनाने प्रवर्तेला जीवोने तथा पुढगळोने सर्वभग्न कियासां स-  
त्वयादिकनी गहिने जलनी जेम धर्मस्तिकाय सहायकारी होय हे अने जीव तथा  
पुढगळो पोतानी मेले स्थिर हे तो वटपाणुने भाषानी जेम अधर्मस्तिकाय स-  
हायकारी होय हे. बढ़ी सर्व व्यापी, निज स्वरूपाधारि रहेला, परस्व वस्तुने आधार आप-  
नार लोकालोक ठापी अनंतप्रदेही, आकाशस्तिकाय हे. लोकाकाशना प्रदेशासां  
अनिक्षणे रहेला जे काळना अपुलु (समय) हे हे, जाओनु परावर्तन करे हे तेथी मु-  
ख्यकाळ हे कहेवाय हे अने ज्योतिःशालासां समयादिकथी जेउं मान करवासां आवृ-  
त्ते तेते काळबेताउं व्यवहारिक काळ हे हे. आ जगतसां सर्वे पदार्थो नवीन अने जी-  
र्हलपथी जे परावर्त्तन पास्या करे हे ते काळनुज नेहित हे. काळकिडाली बिटंचनायी  
सर्वमानना पदार्थो चूतकाळनी स्थितिने पासे हे अने छविध्यना वर्तमान स्थितिने  
पासे हे. आ प्रमाणे अजीवतत्वनु रक्खप जाणु.

मन, वचन, अने कायानी जे चर्चा ते आश्रव रे. तेमां शुल्क वर्तना ते पुण्यचंधनो हेतु रे अने अशुल्क वर्तना ते पापचंधनो हेतु रे. ए त्रीजुं आश्रवतत्व समजबुं. सर्व आश्रोनों रोध करवानुं ले कारण ते संवर कहेचाय ले अने संकारना हेतुस्रूत जे कर्म तोनी जे जरणा ( विनाश ) तेने निर्जरा कहे रे. आ प्रदाणे चोइं अने नांचबुं संवर अने निर्जरातत्व रे.

सकपायीपणायी जीन, कर्म योग्य पुड्डगालोने जे गङ्गय वरे रे ते वंध दङ्हे गङ्गाय रे, ते वंध जीवते परतंत्रतानुं कारण याय रे. पङ्क्ति, स्थिति, अनुकाळ अने इदेश—ए चार तेना चेद रे. तेमां जे पङ्क्ति ते स्वज्ञाव कहेचाय रे. ते ह्यानावरणादि जेदोषी आठ प्रकारनी रे. ह्यानावरणी, दर्ढनावरणी, वेदनीय, सौहनीय, आशुल्य, नास, गोत्र अने अंतराय. ए आठ मुळ पङ्क्तिर्जुं कहेचाय रे. जघन्यने उक्तषु जेदे कर्मना काठनो जे नियम ते स्थिति कहेचाय रे. कर्मनो जे विपाक ( परिणाम ) ते अनुज्ञाग रे अने तेना अंशनी जे करुपना ते प्रदेश रे. मिथ्यादृष्टि, अविरती, प्रसाद, कथाय, अने योग ए पांच चंधना हेतु रे. ए प्रमाणे वंधतत्वबुं द्वरुप जाणबुं.

उपर कहेदा वंधना हेतुनो आचान शतां धातीकर्मनो कृथ थाय हे, तेथी जीवने केवलज्ञान उपजे हे अने पठी चार अधातीकर्मनो कृथ थावायी मोक्ष थाय हे. चार निकायता देवताउतां तथा राजाउतां जे सुख ऋण उवनमां हे ते सुख मोक्षुखनी संपत्तिना अनंतमा जागे पण नयी. इति मोक्षतत्त्व.

आ प्रकारे नवतस्योनो जाणनारो मनुष्य समुद्रमां तरीआनी जेम कदी पण आ संसारसमुद्रमां छुकी जतो नयी.

श्री धर्मनाथजीनी देशना.

धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष य चतुर्वर्गमां मोक्षनर्ग अग्रणी हे, तेनो योग कराननार कारण, इनान, दर्शन, अने चारित्र ए ऋण रह्ल हे. तत्त्वने अनुसरनारी मति—तेहान, सम्यक्प्रकारनी श्रद्धा—ते दर्शन अने सावदयोगनो ल्याग ते चारित्र कहेवाय हे. प्राणीनो आत्माज झान, दर्शन अने चारित्रहप हे, अथवा तदात्मकपणेज तेशारीरमां रहेदो हे. मोहना ल्यागथकी जे पोताना आत्मावेडे आत्माने विषे आत्माने जाणे हे तेज तेनां झान, दर्शन अने चारित्र हे. आत्माने अङ्गानपणायी उत्पन्न थेयेल

ठःख आत्मझानवडेज हणाय रहे. जे आत्मझानथी रहित रहे तप करवावडे पण अ-  
झान जनित ठःखने पण रेदी शकतो नथी. आ आत्मा चैतन्य ( झान ) रूप रहे, पण  
कर्मना योगथी शरीरधारी आय रहे; अने उपरे ध्यानरूपी अग्रिमी कर्म मात्र दग्ध थइ-  
जाय रहे ल्यारे ते निरंजन सिद्धात्मा बने रहे. कपाय अने इंडियोथी जितायेलो आ आ-  
त्माज संसार रहे अने कपाय अने इंडियोने जितनारो आत्माज मोहु रहे ए प्रमाणे बि-  
द्वानो कहे रहे. ते कपायो क्रोध, मात, माया अने लोल एम चार प्रकारे रहे अने ते प्रत्ये-  
कना संज्वलन विगेरे चार चार जेद, रहे, तेमां संज्वलन एक पक्ष सुधी, प्रत्याख्यान  
चार मास सुधी, अप्रत्याख्यान वर्ष सुधी अने अनंतानुवंधी आखा जन्म सुधी स्थिति  
करे रहे. ते अनुकमे वितरागपणु, मुनिपणु, श्रावकपणु, अने सम्यग्हटुपणु हहणे रहे अने  
देवपणु, मनुष्यपणु, तीर्थचपणु अने नारकीपणु आपे रहे.

तेमां कांध नामे कषाय उपताप करनार, वैरत्नु कारण, डुर्गतिने आपनार अने  
समतासुखने अटकावनार ज्ञोगङ्गरूप रहे, ते उत्पत्त शतांज अग्रिमी पेरे प्रथम पोताना  
आश्रयने तो बालेज रहे पर्फी बीजाने बालेज रहे किंवा नथी पण बालतो. आरु वर्षे उनपूर्वे

कोटी वर्षों पर्यात् चारित्र अन्ते तप करेलुँ होय तो तेने पण कोधरुपी अग्नि कृष्णवारमां दहन करी नांखे रे. पूर्वना पुण्य संज्ञारशी संचय करेलुँ समतारुप पय कोधरुप चित्रना संपर्कर्थी तत्काळ असेठ्य थइ जाय रे. चित्रगुणने धारण करनारी, चारित्ररुप चित्रनी रचना (चित्रशाळी) ने कोधरुप धूमाडो प्रसरीने अत्यंत मलीन करी नांखे रे, वैराग्यरुपी शमीपत्रना पडीआमां जे समतानो रस मेलङ्गो होय ते शाकपत्रना पडी-आमांशी आना कोधवडे ते रस केस न हळी जाय ! वृक्षि पामेलो कोध हुँ शुँ आकार्य तथी करतो? आगामीकाले द्वैपायनना कोधरुप अग्निमां मोटी ढारका नगरी समिध रुप थइ जारे. कोध करनारने कोध करवाशी कार्यसिद्ध थती जोवामां आवे रे ते कोध साथे संबंध धरावती नथी. अर्थात् ते कोधना फलरुप नथी पण जन्मांतरे मेलवेला तेना सारा कर्मनुँ फल रे. जे प्राणीडु आ लोकना अने परदोकना तथा स्वार्थना अने परार्थना नाशने करनारा कोधने पोताना शरीरमां धारण करे रे नेम, वारंत्वार धिक्कार रे. कोधांध पुरुषो पिताने, माताने, गुरुने, सुहृद (मित्र) ने, सहोदरन अने लीने तेमज पोताना आत्मने पण निर्देय थइने हणी नांखे रे. आवा कोधरुप अग्निने लत्वर बुजावावाने

माटे उत्तम सुर्योग संयशस्त्रहप आराजने विषे नीकहृष एक दूसानोज आश्रय करवो।  
अपकार करनार पुरुपनी उपर ब्येदो क्रोध वीडी रीते रोकी शकातो नथी, पण सत्त्वता  
महालक्ष्यवडे रोकी शकाच ठे. अश्वा आची जावना राखे, तो तेनावडे रोकी शकाय ठे के  
जे पोते पापने अंगीकार करी आपणने वाधा करवानी इडा करे ठे ते पोताना क-  
संभी हणाइ गयो ठे तो तेनी उपर कयो मूर्खजन पण कोप करे. जो तारो एवो आशय  
होय के ‘जे मारा अपकारी ठे तेनी उपर तो हुं कोप करीश’ तो तने निरंतर डुःख  
आपवामां खरेखरा कारणश्रूत तारा कर्मनी उपर शा माटे कोप करतो नथी? श्वान  
देहां नांखनारने नहि करडवा जतां ढेफांने वचकां जरे ठे, पण केशरीसिंह बाणने कांइ  
करतो नथी पण वाण नांखनारनेज मारे ठे. माटे क्रोध करनार विचार करवो के जे क्रुर  
हमोए भ्रेदो शानु मारी उपर कोप करे ठे ते कमोनी उपेक्षा करीने हुं वीजापर कोध  
करं ठुं, तेयी खरेखर हुं श्वाननी रीतिनोज आश्रय करं छुं. जविष्यकाठमां उत्पन्न श-  
तारा अभी याहानी इ जगताद् पोताने उपसर्वादि करनारा पायीउनी उपर हमा करशे, के-  
सके वगर प्रयासे द्वयनेव शात थयेली दूसाने वहन करवाने कोण न इहे? जे नण

लाकर्न यद्यनांश) पण रक्षण करेणाम समर्थ ऐ तेवा पुरुषो पण कुमा करे छे, तो कद-  
कीना जेचो आठग सद्बव्याळो तुं कुमा केम नयी करतो? वल्ली तें पूर्व जन्मे पर्वुं पुण्य  
केम न कर्युं के, जेयी कोइ तने पीडेज तहिं; माटे हवे पोताना प्रमादनाज शोक करीने  
झसाने अंगीकार कर, कोयांधमुनि अने प्रचंड चांडाळ ते बेनी वच्चे कांडपण अंतर नयी,  
माटे कोयनो लागा करीने उडवळ दुर्दिने अहण करो. महर्षि कोधी हैता अने कुरगरु  
आकोधी हैता तो देवताठए, महर्षि मुनिने ठोडीने कुरगडुनी रुद्धि करी. कदी जो  
कोइ आपणने मर्मफीडक वचन कहे तो आपणे विचारवुं के जो ए सत्य होय तो तेमां  
कोप करवा जोर्हुं शुं छे? अने जो आसत्य होय तो ते उन्मत्त अइने बोले छे तो तेनो वि-  
चार शो? जो कोइ आपणने मारदाने आवे तो मनमां जिसमध्य पामीने हस्तुं के मारो  
वय यचो एतो मारा कर्मने साध्य छे, आ मूर्ख पुरुष तो फोगटनो नाचे छे. जो कोइ खरे-  
खर मारी नांखवाने आवे तो विचारवुं के सारा आयुष्यनो दध्यज प्रात अयो जणाय छे,  
तो आ दुष्ट निर्खय अइने पाप वाँधे छे अने मरेखानेज मारे छे, जो सर्व पुरुषार्थने चोर-  
नारा कोधनी उपर तते कोध उत्पन्न थतो नयी तो पछो आटप आपराध करनार बीजानी

उपर कोप करनारा एवा तने धिक्कार ठे, तेथी सारी बुँद्धक्काळा पुरुषे सर्वे इंडियोने गवानि करनार अने चारे तरफ प्रसरता एवा कोपरुपी सपने कमारुपी जागुली । विद्या-वेडे जीती लेवो.

विनय, श्रुत, शील, तथा विवर्ग ( धर्म, अर्थ अने मोह ) नो घात करनार मान, प्राणीना विवेकरुपी लोचननो लोप करीने तेने अंध करी नाले ठे. जाति, लाज, कुळ, ऐश्वर्य, चाळ, रूप, तप, अने श्रुतनो मद करनार पुरुष ते ते वस्तुतुं हीनपण्ण प्राप्त करे ठे. उत्तम, मध्यम अने अधम एवा जातिना अनेक लेदने जोइने कयो विद्धान जातिमद करवा तसपर असे ? हीन के उत्तम जाति कर्मशी प्राप्त शाय ठे, तो एवी अशा श्रुत जातिने मेळवीने कोने मद शाय ? अंतराश कर्मनो द्वय थवाग्री लाज शाय ठे ते सिवाय यतो नशी, तेथी वस्तुत्त्वने जाणनारो पुरुष कदिपण लाजमद करतो नशी. बीजानी प्रसवता अने शक्ति वगोर मोटो लाज प्राप्त शाय तोयण महात्माई कदिपण लाज मद करता नशी. कुळवान नहीं ठरां पण बुँद्ध, लाङ्गो अने शीलवडे शोजता एवा अनेक पुरुषोने जोइने महा कुलिन पुरुषोए पण कुळमद करवो नहीं. सारा कुळमां उत्पन्न

थया। उतां कुशीळ होय तो तेने कुलनी शुं? अने पोते सुशीळ रे तो तेने कुलनी शुं  
 अपेदा! मातुं विचारीते विचक्षण पुहपो कुलमद करता नयी। वज्रधारी इंद्रने घेर  
 निकुञ्जना ऐश्वर्यनी संपत्ति सां तल्लीने नगर, गास अने धन विग्रेना ऐश्वर्यमां शो  
 लद करवो? संपत्ति कुलाटा ल्लीनो धेठे गुण। पुरुषनी पासेशी पण वखते चाली जाय रे  
 अने दोषवाननो पण आभय करे देले तेथी विवेकी पुरुषोने ऐश्वर्यनी प्राप्तिश्री तेनो  
 मद यातोज नयी। सोटो दल्लवान होय तेने पण रोगादिक दण्डवारमां निर्बल करी नाखे  
 रे तेथी तेवा ऋनिल वलनी प्राप्तिश्री पुरुषोए मद करवो शुरु नयी। जे वल्लवान होय  
 हो पण जरानी पासे, सुटुनी पासे अने कर्लफळ्हो ल्लोगवावामां निर्बलज रे, एमां काँइ  
 तेनुं वळ चालतुं नयी; नाटे तेउएं वळमद करवो ते ठवर्य रे। आ सात धातुमय देहमां  
 हातीनुक्कि धर्म रहेलो ठे अने जरा ताढा। रोगनो पराश्रव यण रहेलो ठे तेथी आशा श्रत  
 एवा रुपना मदने कोण वहन करे? जविल्यकाळमां अनारा सनकुमारचक्रीनुं रुप  
 अने तेनो दृश्य सांजडीने कयो विद्वान पुरुष स्वप्नामां पण रुपनो मद करे? श्री क्रष्ण-  
 ादेवे करेली अने श्री वीरप्रश्न करेली तपस्या सांचलीने घोताना स्वदप तपमां कोने

मद् आय तेम रे ? जे तप करवायी तत्काळ कर्मनो संचय तुटी जाय रे, ते तपनो मद् करवायी उलटो कर्मनो संचय वँये रे, पूर्व महा पुरुषोए जे शालो पोतानो दुःखी रचेवां रे तेजने मात्र लीलावडे सुंधीने 'हुं सर्वज्ञ दुं' एवो जे मद धेरे रे ते पोताना अंगनेज खाय रे, श्री गणधरेज्जोनी निमाण अने धारण करवानी शक्ति सांनळीने कयो कर्ण अने हृदयवाळो पुरुष शास्त्रमदनो आश्रय करे ! दोषरूप शाखाने विस्तारता अने गुणरूपी मूलने नीचे लाङ जता मानहपी वृक्षने मृदुतारूप नदीना पूर्खी ऊंचेडी नां-खुं, उद्धतपणानो निषेध ए मृदुतानुं आश्रवा मार्दवतुं स्वरूप रे अने उद्धतपणुं ए मानुं निरपाधिक स्वरूप रे.

जे जे वखते जाति विगोरेतुं उद्धतपणुं अंतरमां स्पर्श करवा लागे ते ते वखते तेना प्रतिकारने माटे मृदुतानो आश्रय करवो. सर्व ठेकाणे मृदुता राखवी तेमा पण पूर्ख वर्गमां विशेषे राखवी, कारण के पूज्यनी पूजावडे पापथी मुक्त थवाय रे. वाहुवली मानवडे लतानी जेस पापथी बंधाणा हता अने मृदुतावडे तत्काळ तेनाथी मुक्त यद्दने केवळकान पाम्या हता. चक्रवर्ती पण चारित्र लाद्दने संगरहित श्रद्ध शत्रुघ्नना घरमा पण

जिक्षा मायग्रा जाय रे, अहा ! ते मानना उडेटने माटे केवी कठण मुडता ! चकवर्ती जेवा महाराजा पण तलकाळ दीका लीधेला एक रंक साधुने पण मान गोडी नमे रे अने चिरकाळ तेनी सेवा करे रे. आ प्रमाणे सर्व माननो विषय जाणी, बुद्धिमान पुरुषे तेनो निरास करवाने हमेशा मुडताने धारण करवी.

हवे मायानु इवरूप कहे रे—असल्यनी माता, शिळरूप वृद्धने कापचानी फरशी अने अविद्यानी जन्मचूमि जे माया ते डुर्गतिनुं कारण रे. कुटिलपणामां चतुर अने मायावडे वगलानी जेवी वृत्तिवाळा पापी पुरुषे जगतने वंचता पोतासा आत्मानेज वंचे रे, राजाले खोटा परुण्णना योगथी ठळ अने विश्वासघातवडे अर्थ लोकने माटे सर्व जगतने भेतरे रे, बाह्यणे तिलक, मुद्रा, मंत्र अने दीनत्व वतानी अंतरमां चून्य अने बद्दार सारवाळा प्रइ लोकोने ठगे रे, मायाना ज्ञाजन वणिक लोको खोटां तोलां अने मान सापथी तथा दाणचोरी विग्रेयी जोळा लोकोने वंचे रे, पाखंडीरे अने नास्तीको, जटा, मौंची, शिला, चस्म, बढकल, अने अग्नि विग्रे धारण करीने श्रद्धावाळा मुख-जनने ठगे रे, वेश्यार्ज आरागी उतां हावलाच, लीला, गति अने कटाद्वाढे कामी जनोदुं घट

मनरंजन करती सर्व जगतने रगे रे, यूतकारो तथा उःखे रेट जरवामां तत्पर लोको  
खोटा सोगनश्ची अने खोटां नाणांशी धनवानते वंचे रे. स्वीपुष्प, पितापुत्र, सहोदर,  
सुहृदजन, स्वामीसेवक अने दीजा सर्वे एक वीजाने मायावडे उगतारा रे. बंदि लोको  
अने चोर लोको अर्थमां लुठध अने निर्देश बनी अहनिंश जागृत रही प्रमादी जनने  
रहे. कारीगर, अंतज अने कोइपण जातरुं काम करीने आजीचीका चलावनारा  
पुरपो मायाश्री खोटा सोगनो खाइने साधुजनते वंचे रे. वयंतरादिकनो तवारी योनिसां  
रहेदा क्रूर पुरुषो दणा प्रकारना भळ करीने प्राये प्रमादी मनुष्योने तथा पशुठने  
पाडे रे. मतस्यादिक जलचरो भळ करीने पोतानां बचाऊंतुं जळकण करे रे अने ते-  
उने पण धीवरलोको मायावडे जाळमां वांधे रे अने हणे रे. विविध प्रकारना उपायो  
करीने वंचनमां प्रविष्ण एवा शिकारीउं पण कपटर्यीज सशळचारी प्राणीउने वांधे रे अने  
मारे रे. मांसना ग्रासने इड्डनारा पापी प्राणीउं लावक विगरे अनेक जातना लिचारा  
आकाशचारी प्राणीउने अनेक प्रकारनी मायावडे वांधी ले रे.

आ प्रमाणे सर्व लोकमां परवंचना करवामां तत्पर एवा प्राणीउं पोताना आत्मा-

नेज चंची स्वधर्म अने सद्गतिनो नाश करे ऐ तेथी तिर्यक जातिसां उतपत्त आवाहुं उ-  
कुष्ट वीज, मोहपुरीना द्वारनी चंगळ अने विकासरूप वृक्षाने दावानल सरखी माया  
विद्वानोप हाग करवा योग्य ठे. मंहिताय तिश्चकर पूर्वजवमां सूदम माया करवै अने  
मायाशाह्याने काढ्यो नहीं तेथी ते झीजावने प्राप्त करवै माटे जगतनो झोह करनारी  
ए मायाहृषी सर्पिणीने जगतने आनंदलुं कारण एवी सरखताहृष औषधिवसे जीती  
लेवी. सरखता—ए अव्याय विलारचाळो मुक्तिपुरीनो मार्ग कहेद्यो ठे अप्ते तप, दान वि-  
गोरे छाकणवाळो जे मार्ग ठे तेतो अवशेष मार्ग ठे. जेउं सरखताने सेवनारा ठे तेउ खो-  
कमां पण प्रीतिना पात्र आय ठे अने सर्पनी जेम कुटिल पुरुषथी सर्व उद्देग पासे ठे.  
जेउनी मनोहृति सरख ठे तेउ चववासमां रहेद्या ठे, तथापि ते महातमाउने पोताशीज  
आनुजवाय तेउं अहुत्रिम मुक्तिसुख मळे ठे. जेउना मनमां कौटिल्यताहृषी शंकु (खीलो)  
ह्येश कर्या करे ठे अने जेउ वीजाने हानि करवामां तत्पर ठे तेवा वंचक पुरुषोने क्यांथी  
सुख होय ? सर्व विद्याउमां विद्वता मेलठंया उतां अने सर्व प्रकारनी कलाउं प्राप्त कर्या  
उतां धन्य पुरुषोनेज बांदूकनी जेवी सरखता प्रगटे ठे. बाळको अङ्ग गतां पण तेमनी

सरवता सहैं प्रीति उपजावे रे, तो जेरनां चिन्त सबू शास्त्राना आर्यसां आसक्त थयेहां  
देवेतनी। चरवता ग्रीति उपजावे तेनां चुं कहेबुं? लखता स्वाज्ञानिक भे अने कुटि-  
लगा कुटिल भे तो स्वाज्ञानिक धर्मने ठोड़ी कुटिल धर्मनो कोण शाश्वत करे? प्रायः  
प्रायः दो छोड़, कियुनतां, दकोलिति अने परंचक्षातां लखपर भे तो तेसां रहा उत्तां पण  
गती पेहे निर्विकारी रहेगर कोहर धन्द एक्षय होय रे. सर्व गणधरो जो  
पान्ना पाने पान्ना भे ताचापि विकास प्रेसाने तोडे थोर्य होय तेन तीर्थक-  
र्मनी। चरवताकी लांगले भे. जे लारापि शावो-वता कोरे रे तो सर्व कुटिलने ख-  
र्मनी असे जे कुटिलपरे आगोचना करे रे तो घोड़ां उड़नति होय तो तेने उखटां चवारि-  
लुड़ा ता, चवात, अने कायाकी समस्त प्रक्षारे कुटिल भे तेननो सोहृष्टो नथो, पण  
दुन नन, चवात अने कायाकी सर्वत्र सारल भे तेनो सोहृष्ट शाव रे.  
आ प्रमाणे कुटिल पुरुषोनी अति उप एयी कर्तनी पण कुटिलताने विचारीने  
सारी कुटिलाङ्गा पुरुषे मोहनती इवायी सरलतानैज आश्रय करनो।  
सर्व दोपोनी खाण, युणनो यास करवासां राहस, डयसनहूपी बताउं मूळ अने

देज वंची स्वधर्म आने तदुगतिनो नाश करे दे तेथी तिर्यक जातिसं उत्पन्न अवानु उ-  
कुष्ट वीज, मोहपुरीना फ्लारनी चंगल आने विश्वासरूप वृक्ने दाचानल सरखी माया  
विद्वानोप ल्याग करवा घोग्य ठे. मंहिनाश तिर्यकर पूर्वजावमां सूहम माया करदो अने  
मायाशाल्यने काढऱे नहीं तेथी ते खीजावने प्राप्त करसो माटे जगतनो योह करतारी  
ए मायाहृषी सर्पिणीते जगतने आनंदनुं कारण एवी सरखतारूप औषधिवर्मे जीती  
लेवी. सरखता-ए आवार्य विस्तारवाळो मुक्तिगुरीनो मार्ग कहेलो ठे आने तप, दान वि-  
गोरे लकड़वाळो जे मार्ग ठे तेतो आवशेष मार्ग ठे. जेले सरखताने सेवनारा ठे तेचु लो-  
कमां पण प्रीतिना पात्र आय ठे अने सर्पनी जेम कुटिल्य पुरुष्यी सर्वे उद्देश पासे ठे.  
जेउनी मनोवृत्ति सरख ठे तेउ जववासमां रहेखा ठे, तथापि ते महात्माउने दोताशीज  
अनुजवाय तेउं अकृत्रिम मुक्तिसुख मल्ले ठे. जेउना मनमां कौटिल्यतारुपी शंकु (खीदो)  
हुक्का कर्या करे ठे अने जेउ वीजाने दानि करवामां तत्पर ठे तेवा वंचक पुरुषोने क्यांथी  
सुख होय ? सर्व विद्यालमां विद्वता नेव्हठया उतां आने सर्व प्रकारनी कढाउ ग्रास कर्या  
उतां धन्य पुरुषोनेज वाँझिकनी जेवी सरखता प्रगटे ठे. बालको अह उतां पण तेमनी

सरयता मर्क्षिते प्रीति उपजावि ले, तो जेडनां चित्त सर्वं शास्त्रान्ता आर्यमां आसक्त अथेदां  
ते नेतनी तरतता ग्रीति उपजावि तेतां शुं कहेबुं? लालता स्वाज्ञाविक ले अने कुटि-  
का कुटित हे तो स्वाज्ञाविक धर्मने ठोड़ी छुक्किन धर्मनो कोण आश्रय करे? प्रायः  
ले को टठ, विशुनता, दक्षोक्ति अने परन्तु नृतातां तपयर ले तो तेमां रुदा भगां पण  
निर्विकारी घेठे निर्विकारी रहे गर कोइदू धारय पुरुषग होय ले. सर्वं गणधरो जो  
कुटिकुटना पारने पाज्ञ्या हे तयापि विदा जेगने तो धोग्य होय तेम तीर्थक-  
ुटिकुटनी लांगउे. जो लागापि आगो रता कोरे ले ते तर्फ छुक्कसने ख-  
ले अने जो कुटिगप्पे आगोचना कोरे ले योड़ां उडकर्ति होय तो तेमे उडाटां वचारे  
ले. अने वचन, अने कायाक्षी समर्पता प्रकारे कुटिला ले तेमनो योक्तु शतो नशी, पण  
नेत्र लग, वचन अने कायाक्षी सर्वत्र सरल ले रोनो मोहु आव ले.  
आ प्रमाणे कुटिल पुलोनी अति भय एवो कर्मनी पण कुटिलताने विचारीने  
तारी दुक्किकाळा पुरुने मोहनी इडाशी सरलतानेज आअय करवो.

सर्वं अर्थने वाध करतार लोज रे. निर्भन सोने, सोवालो सहडब्बने, सहखा घिपति ल-  
क्षने, सहपति कोटीते, कोटीपति राजापणनि, राजा चक्रवर्तीपणने, चक्रवर्ती देवप-  
णने, श्रद्धपति आर्यने, श्रद्धपणने, श्रद्धपति राजापणनि, राजा चक्रवर्ती नथी, तेथी  
णने श्राने देव इङ्गतवने इहे रे. इङ्गपणुं प्रास यतां पण इडा निवृत्ति पासती नथी, तेथी  
मुलमां लघुपणे रहेलो ए लोज कुंगारना चक्रपर रहेला शारावदा (रामपात्रा) नी जेम  
वाहया करे रे. सर्वं पापमां जेम हिंसा, सर्वं कर्ममां जेम मिश्यात्व अने सर्वं रोगमां जेम  
राउयद्दमा (दद्यरोग) तेम सर्वं पापमां लोच मोटो ठे श्राहा ! आ पृथ्वीउपर लोकातुं एक ठन्न  
साम्राज्य ठे के जेशी वृक्षो पण पोतानी नी चे इन्द्रय होय ठे तो तेने पोताना चरणशी  
इटले शाखा तथा मूळीआं विगोरेशी ढांकी दे ठे. इठगता लोकाती बेंडिंगी, त्रीइंडि,  
चतुर्भिंडिय प्राणीउ पण मूळीवडे पोताना पूर्व दाटेला अशवा मूळेचा निधानपर आ-  
वीने वेसे रे. सर्वं अने श्रहगोधा (घरोडी) जेवा पंचेंडिय प्राणीउ पण धनना लोकाती  
पोते अशवा परे दाटेला के मुकेचा निधानस्थाननी चूमिपर आवीने लीन थइ जाय  
ले. पिशाच, मुक्कल, भ्रेत, चून अने यह विगोरे प्राणीउ लोकाती पोताना आशवा पारका

वाळा टेवतार्हं पण ह्यांथी चयवीते तेज रेकाणे पुढ़वीकाय विगेरेमां उत्पह धाय ठे. मु-  
निजनो पण कोभादिकनो विजय करी उपशांतमोह नामना अगीआरमा गुणवाणाने  
प्रात थया उतां एक सोजना अंश मात्रशो पतित थइ जाय ठे. लेशमात्र खन सोजशी  
सहोदर लाङ्डृष्ट पण एक मांसता लचने। इडाए वे कुतराउ लडे तेस परस्पर युद्ध करे ठे.  
सामयजन, अधिकारी। अने राजाउ गान विगेरेना एक सीमाडानी बावतमां सोज करी  
सोहदजावने ठोडी दरने परस्पर वै वांधे ठे, लोजीजनो पोताने हास्य, शोक, छेष  
अने हपेतुं कारण न होय तोपण. इवामीनी पासे नटनी जेम कुत्रिमपणे बतावी आपे  
ठे. सोजलुपी खाडो जेम पूरवा मांडीए तेस तेम ते वधतोज जाय ठे ए मोटुं आ-  
श्वर्य ठे. कदि जळवडे समुद्र पुरी शकाय, पण बैलोक्यनुं राज्य मळे तोपण सोज पूरी  
शकातो नयी. नोजन, वख, विषय अने ऊढ़यनो संचय अनंतीवार एकठो करी करीने  
जोगढ़या ठरावं पण लोजनो एक ढांश पण पुरातो नयी. जो सोजनो ल्याग कयों तो पड़ी  
निषफ्ल तप करवानी जरुर नयी. अने जो लोजनो ल्याग कयों नहीं तोपण नि-  
षफ्ल तप करवानी जरुर नयी. सर्वे शास्त्रना सर्वेस्वने विचारी विचारीने पट्टुंज

इयानमां राखावाहां ठे के मोटी बुद्धिनाला पुर्ये एक लोजना त्यागाने माटेज प्रथला कर-  
एनो. सद्दिव्युक्तिकाला पुर्ये लोजना प्रसरता एवा उद्देल सागरसे संतोषना सेतुधंधवडे रो-  
कनो. जेम मनुष्यसां चक्रवर्ती ठे अने देवतामां इङ्क ठे, तेम सर्वे गुणोमां संतोष ए-  
म्बर छुप ठे. संतोषी मुनि आने असंतोषी चक्रवर्ती तेमनी ड्यारे तुलना करीए त्यारे-  
सुन छु:खनो भुकर्द समान आय ठे, एटले जेटले दरजे संतोषी मुनि सुखी ठे तेट-  
लोज असंतोषी चक्रवर्ती डुःखी ठे; तेशी चक्रवर्ती राजाहु पोताने स्वाधीन पहुं राज्य  
ठोडीने पण संतोषरूप आमृतनी तुण्णाशी तत्काळ निःसंगपणाने ल्खीकारे ठे. ज्यारे ध-  
ननी इडा निवृत्त करीए ठीए त्यारे संपति पडबेज आचीने रहे ठे कारण के का-  
नने आगळथी ढांकीए ठीए त्यारे अंदर शान्दराईतज वधे ठे. जेम लेज ढांकायामी कार्य-  
चराचर विश्व ढंकाए जाय ठे, तेम एक संतोष धारण करवायी अर्हे, तरहु तरहु-  
आय ठे. इङ्कियोनुं दमन अने कायाने पीडा करवानुं शुं प्रयोजन ठे? नाहर हमेषा एक-  
वाशी सोइवाहमी सामुं लुने ठे. जेट्टु मुक्ति जेहुं सुख जोगवे ठे तेच जीकाला उरां पण  
मुक ठे. मुक्तिने माथे काँइ चाँगडु होहुं नशी. राम द्वेषी संयुक्त अने विषयी उत्पन्न

गयें दुख शा कान्हां रे ? केमके संतोषी उत्पन्न यें दुखज मोहप्राप्ति योग्य कर्म  
महान् चुक्तावाकुं ननी। बीजाने रुत करनारा एवा शावोनां सुजापित शा कान्हानां रे ?  
भगवन् लेउनी इँद्रियो महीन रे लेउए संतोषना हवाहुं दुखज शोधुं जोइप, ठारे नागो !  
ओ तुं कारणने अनुसरकारांज कायो होय दहुं नागतो होय तो संवज्ञा आनंदकी गो-  
लाना आपार आनंदनी प्रहीतिकर, जे तीव्रतप कम्पने निमूङ करनारु कहेवाय ठें दण जो-  
संतोषरहित होय तो निष्कळ रे। शुखार्थी पुरुषोने छुपि, सेवा, पशुनाल्हुति अनेवा-  
पार करवानी यी जरुर रे ? कारण के संतोषनुं दान करवायी चुं तेनो आत्मा निवृत्ति ए-  
लाने नथी पासतो ? तुणनी शश्या उपर सुनारा पण संतोषीलाने जे सुख शाय ढे ते सुख  
सनी शश्यापर सुनारा पण संतोष वगरना पुरुषोने अरुं नयी। आसंतोषी धनवान् पुरुषो  
समर्थ पुरुषोनी पासे दुष्टसमान लागे ठे अने संतोषी पुरुषोनी पासे समर्थ पुरुषो पण दृण-  
लायान लागे रे, चक्रवर्तीनी अने इँडाडिकली संपत्ति प्रयासजन्य अने नश्वर ढे, परंतु सं-  
तोषी यें दुख आशसरहित थाने निया रे; माटे सारी बुद्धिवाल्ला पुरुषे सर्व दोक्का-  
त्यानन्दरूप टोचने द्वर करवाने शारे अद्वैतसुखलाना घट्टरूप लंतोषनो आश्रय करनो।

आ प्रभाणे कपायने जितनार प्राणी आ जवमां पण शिवसुखने लजातारो आय ठे  
अने परदोकमां अचहय शाश्वत शिवमुखने प्राप्त करे ठे.

श्री शांतिनाथजीनी देवाना।

आहे! आ चार गतिवाळो संसार दावानलनी जेम अनेक उःखोनी परंपरांनु मूळ कारण ठे. मोटां मंदिरने आधारचूल जेम स्तंज होय, तेम ते संसारने कोध, मान, माया, अने लोक ए चार कषाय चार स्तंजरूप ठे. ते कषाय हीष श्रतां संसार पोतानी मेळे हीण यड्ड जाय ठे. जेम 'मूळीआ' सूक्ताइ जातां वृद्ध एनी मेळेज सुकाइ जाय ठे, पण इंडियोनो जय कयांवगर ते कषायने जीतवा कोइ समर्थ अरु नयी. केमके प्रजवित अग्नि त्रिना सुवर्णांनु जाड्य हणांनु नयी. चपढ अने उ-नमार्ग चालनारा ए इंडियरूप आदांलआ श्वो प्राणीने खेंचीने तत्काळ नरकरूप अरण्यमां लाई जाय ठे. इंडियोनी जीताएलो प्राणी कघायोयी पण पराजव पासे ठे. 'वीर पुरुषेष जेनी वचमांनी इंटो खेंची लीधी होय, तेवो किह्वा पर्वी कोनाशी खंडित न शाय?' नहि जीताएवी प्राणीडुनी इंडियो तेने कुळघात, पात, बंध. अने व-

पने माटेज थाय रे. स्वार्थ परवशा एवी इंडियोथी क्यो पुरहय नथी हेरान धतो ? कदी  
ते शास्त्रार्थने जाणनारो होय तथा पि इंडियोने वश शत्रायी माणस बालकनी पेरे बेष्टा  
करे ठे. आ करतां वथारे ते इंडियोतुं सज्जावालुं स्थानक कम्युं बताईप के जेनावडे जरत  
राजाए. पण वाहुचल जेवा चंधु उपर चक्र मुझुं ! वाहुचलिनो जय अने जरतनो परा-  
जय ए. जय पराजयने निये पण सर्व इंडियोनुं चेष्टितज रे. चरम जवमां रहेता पुरुषो  
पण जेनावडे शह्वाशाळि शुक्ल करे रे, तेवा इंडियोना डरत महिमायी साजवा जेबुं ठे.  
कदी प्रचंड चरित्रवाळी इंडियोथी पशुउं अने सामान्य मनुष्यो दंडाय, पण जे मोहने  
शांत करनारा अने पूर्ववेता होय रे, तेहु पण दंडाय ते अति अद्भूत वार्ता ठे. इंडि-  
योए जीती लीभेदा ढेव, दानव, मनुष्य अने तपस्वी एण निदितकर्म करे रे, ते केवी खे-  
दनी वात ठे ! इंडियोने वश श्रेष्ठा प्राणीउ अखाद्यवस्तु खाय रे, अपेय वस्तु पीए ठे अने  
अगस्य साथे गमन करे रे. निर्दय इंडियोथी हणाइ गयेला प्राणीउ कुलशिलधी रहित  
थइ वेश्याउनां पण नीचकाम अने दासत्व करे रे. मोहांध मनवाळा पुरुषोनी परदंडय  
अने परखीमां जे प्रवृत्ति थाय ठे ते जामत इंडियोनोज विकास ठे. जे इंडियोना वश

पणानि लीघे हाथ, पण आने इंडियोनो ठेद, तेमज मरण पण आय ठे, ते इंडियोनी चातज शी करवी? जेल्ह पोले इंडियोकी जिताइ गेला ठे आने वीजाने विनवांडु याहण करावे ठे, तेवा पुरुपोने जोड निवेकीपुरुपो हाश्रवडे मुख ढांकीने हसे ठे. श्री वित्तराग गचु विता इंडधी मार्डीने एक कीडा सुधी सर्व जंहुड इंडियोकी जीताइ गेलाज ठे. हाश्रीना हपर्दीयी उपजता सुखाने आस्वादन करवानी इहाश्री सुंठने शसारतो हस्ता तत्काळ आदान (खीदो) चंधना हुंशासां आची पडे ठे. आगाध जळमां विचरनार मीन गळगतमांसने गळतां ठींमरना हायदां दीनपणे आवी जाय ठे. मत्त मातंगना गंडस्थल उपर गंधने दोने चासतो चमरो कर्णतालवना आचातवडे तत्काळ मृत्यु पासी जाय ठे. उवर्षता ठेद जेवी दीप शिखाना दर्शनशी मोहित थेलो पतंग सहसा दीपमां पडीने मरण पासे ठे. मनोहर गीतने सांजळवासां भासुक एवा हरिण कान सुधी धनुष्यने लंचीने रहेला शीकारीना वेध्य थऱ पडे ठे. एवी रीते एक एक विषय सेववारी पंचतत्त्व पाय ठे तो एक सापे पांचे विषयो सेववाश्री केम पंचतत्त्व न पमाय? ते माटे महामति पुरपे मनःशुद्धिवडे इंडियोनो जय करवो, केमके तेना विता यम नियमथी कायाने

कुंश पमाड्वा ते वृथा ले. जे इंडियोता आमने जीततो नशी ते उळ्बे प्रतिक्रोध पासी  
याके ठे, साटे सर्व दुःखमांशी मुक्त प्रवाने इंडियोनो जय करवो. इंडियोनी सर्वथा ग-  
गृति करवी नहिं तेथी कांइ तेनो विजय श्रतो नशी, पण तेनाचडे उपजाता राग देवची  
मुक्त यांच, जेशी तेनी प्रवृत्ति पण तेना जयरूप आय ठे. पठी ते इंडियोता विषय तेनी  
पासे रत्ना होय तोपण इंडियोशी स्पर्शी करवाने अशक्य आय ठे; माटे वुल्क्रमान पुल्से  
नेना जे राग द्विद उपजे ठे तेने तजी देवा. सदा संन्यसी योगीडनी इंडियो हृष्णायेवीन  
द्वोय ठे, अने तेशी तेऱना निहित अर्थ हृष्णयेवा होता नशी; अने अहितकारी वस्तुव  
दृष्टायेवा होय ठे. जीतेली इंडियो मोळने माटे आय ठे, अने लहिं जीतेली संतारने  
माटे याव ठे; माटे तेसां जे तफावत ठे तेने सप्तर्णीने जे योग्य लागे ते काढुं. १ निगोळेता  
कोतक दृष्टामां अने पापाण विगेरेना कठोर स्पर्शमां जे प्रीति अने आर्थिति आव ठे ते  
हिंडगा ठे, पांच खारी तेनो ल्याग करवाचडे स्पर्शी इंडियनो जय करवे. ज्ञानय पटाखांना  
ननानिट गतामां अने कठुरसमां प्रीति अने अप्रीनि वंत्रेने तजीने डीड्हावेंजव्येने नीनी  
यांना. तुंगंथ यांने ऊँध प्राणेंडिमां ग्रास थातां तेने वस्तु गारिमालप विनारिने घाल

इंडियनो जय करवो, मल्लोदूर के नगरां रूप जोङने तेनावडे उपजता हृष्ट अने तुगुटसानो  
त्याग करी चकुंहंडियने जीती लेकी। बीणादिकना श्राव्य—मधुरस्वरमां अने गधेडा  
विगेनां उःश्राव्य स्वरमां रति अने तुगुटसाने जीतचाशी शोङंडियनो जय आय ठे,  
कोइपण सारो के नगरो एवो विषय नशी के जे इंडियोए अनेक वखत जोगड्यो न  
होय, तो शा माटे हवे द्वस्थपणाने न सेवतुं? कोइवार शुच विषयो अशुच शह जाय  
ठे अने अशुच विषयो शुच शह जाय ठे, तो इंडियोशी कोनापां राग धरवो के को-  
नासां विराग धरवो? कदी कोइ कारणी ते विषय रचिकर के अरुचिकर शाय पण  
तत्त्वशी जोतां कदी पण पदाशीमां शुच के अशुचपण्ह होतुं नयी, तेशी जे प्राणी म-  
ननी शुद्धिशी इंडियोने जीती कपायने होण करे ठे, ते योडा काळमां अहीण सुख-  
वाळा सोऽसां जाय ठे।

शी कंथुनाथजीनी देशाना।

मोटा ठःखतुं कारण एचो आ संसाररूप सागर चोराशी खाल योनिरूप जखन-  
मरीउमां पडवावडे अति चर्यंकूर ठे, ते जवसागरने तरचामां समर्थ एवी नाविका वि-

वेकी जनोने इंद्रियरूप उम्मिठना जय साथे मनःशुद्धि करवी, ते डे. विज्ञानोए मनः  
शुद्धि निर्बाणमार्गने बतानारी अने कड़ीपण नहि बुझे तेवी एक द्विपिका कहेली डे.  
मनःशुद्धि होय तो जे अउता गुणो डे ते सत् शाय डे, अने उता युण कदिपण अउता  
यता नअथी; माटे प्राङ् पुरुषोए सदा मनःशुद्धि करवी. जे मनःशुद्धि कर्याचिना मुक्तिने  
साटे तपहया करे डे, ते नाच गोडी महासागरने वे चुजाए तरवाने इहे डे. तपस्वीउठनी  
मनःशुद्धि चरगती सर्व किया अंधने दर्पणनी जेन निळकङ्ग आय डे. मुक्तिसां जवानी  
इआये तप करता प्राणीउठने चक्रवात (चंटोलीचा) नी लेस चपल चित कोइ बीजी त-  
रफ़ न नांद्वी दे डे, आर्यात मुक्तिसां नहि जवा देतां अन्यगतिसां लाड जाय डे. निं-  
कुरा यड निःशंकपणे फरतो मनहृषी निशाचर आ त्रण लोकने संसारना उडा खाडासा  
पाडी नांवे डे. मननो रोध कर्मा चगर जे नाणस योगपर श्रद्धा राखे डे ते पगवडे गाम्मां  
जवाने इडनार धु साणजनी जेत उपहास्यने पामे डे. मननो निरोध करवायी सर्व क-  
र्मां पण निरोध आय डे, अने मनने नहि संखतारानां सर्व कर्मो प्रसरी जाय डे. आ मन-  
रूपी कपि विश्वसां परिव्रमण करवामां छंपट डे, तेथी तेते मुक्तिनो इत्तावाढा प्राणी-

तुंग यत्की कवजे राखनो. सिक्किने इत्तनारा प्राणीप् अनश्चय सननी शुक्लि करची, ते  
सिनाय तो, अह अने यम, नियमचउ कायाने दंड आप्हो, ते कशा कासनो नथी. म-  
तारी शुक्लि, राग देषतो जय करवो, जेवी आत्मा ज्ञाव मजिनता ठोडीने शवश्वरुपमा०  
स्थिर यावू ८.

धो० आरता धुले० देशना०

धु०, आ०, राग अने लोक-ए चार पुरुषाद्यने एकत्रुलनो सागर घो० सोक  
पुरुषाचे लुल्य ठे, तो० साधनांड ध्यान छे, ते रादा करने आईन ठे. ते भरने योगीले  
आत्मावीन करे ठे, पण रागादि अशुद्ध पाता दकानीने ते जनने पराधीन करी द्वे ठे. ए  
मनने सारी शिते रक्षण करीने राख्यु होय तोपण साहजात्र निष पामीने पिचाचनी  
जेम रागादि तेने वारंवार बळे ठे. रागादिरुप लिमिर्यी झाननो लाच करनारु आह्यान  
अंधने अंधनी जेम खेंचीने प्राणीने नरकला लाडामां पाडी द्वे ठे. अव्यादिकमां जे इति  
अने प्रीति-ते राग अने तेमां जे अरति अने अप्रीति ते द्वेष एम विद्वाना० कहे ठे. ए  
राग अने द्वेष सर्व प्राणीजेना दृढ वंधनरुप ठे, अने सर्व ठुःश्वरुप वृद्धोना० मूल अंकुर

ठे. जो ए. राग द्वेष जगतमां न होता है सुखमां कोण विस्मय पासत? उःखमां कोण  
ऋणा आत? अनें मोक्षते कोण न पासत? राग विना द्वेष अनें द्वेव विना राग रहेतोज  
नर्धी, नेतुं ब्रह्मसांची धक्कनो ल्याग करतां चंतेनो ल्याग आय ठे. कामादि सर्व दोनो रा-  
गनो परिवार ठे, अनें मिथ्यानिसान ब्रह्मव द्वेपनो परिवार ठे, ते राग द्वेपनो विता,  
र्वीज, तायक के परमे शर जोह ठे, अनें ते तेमनार्ह। अनित ठे; तेवो सर्व दोबोना पि-  
तामहू गना ते मोहद्यी वाणी संजाळ रालीने रहेहुं योगद ठे. संक्षारमां आ ऋण (राग,  
द्वेष, त मोह) दोपन ठे, ते सिचाय वीजो कोइ दोप नशी. ते ऋण दोपथीज आ संतार  
वारिभिनां सर्व प्राणीउ लभ्या करे ठे. जीव स्वत्रावे स्फाटिकमणि जेवो निर्मल ठे  
एन ते ऋण दोपती उपाधिशी तदुपपषे जणाय ठे. आहा! आ आखुं विश्व राजा वग-  
रहुं ठे के जेवी तेमां रहेका प्राण। उंहुं ह्वान सर्वस्व अनेस्वरूप ते लुंटाराठे जोतामां  
बुंदी ले ठे. जे प्राणीउ निगोदमां ठे अनें लेच नजदीकमां मुक्ति जवावाला ठेते सर्वनी  
उपर तेमनी निर्दय सेना आवीते पडे ठे. उं तेमने मुक्ति सावे वैर ठेके मुमुक्षु सावे  
वैर ठे. रु जेवो ते चंतेनो यतो योग ते आउकावे ठे?

उत्तम सुनि वेने लोकमां अपकार करनारा ए व्रण दोषयी जेवा चय पामे ढे तेवा  
वृथाघ, सर्प, जल आने अनियी जय पासता नशी, आवो आ महा संकटचालो मार्ग  
महा योगी उप आश्रित करेको ठे के जेनी बजे बाटु राग द्वेषहृष उथाप्र आने सिंह उत्ता  
गे, निर्वाणपदनी इड्हा करनारा प्रमादरहित शुरुपोए समजावेने अंगीकार करीने ए  
राग द्वेष शानुनो जय कर्नवो.

अश्री महिलानाथजीनी देखाना।

आ संसार श्वतः अपार उतां पूर्णिमाना द्विवत्सवडे समुदनी जेम रागादिकथी  
विशेष वृद्धि पासे ठे, जे प्राणी उमंद आनंदने उत्पन्न करनार समताहृष जलमां लान  
करे ठे तेहेता राग द्वेषहृष मल तत्काळ धोचाइ जाय ठे, कोटी जन्म सुधी तीव्र तपने  
आचरणवडे प्राणी जे कर्मने हप्पी शक्तो नशी ते कर्मने समताचा आकंचनथी अंध  
क्षणमां इपी नांचि ने, कर्म असे जीन जे साथ मर्नी गयेजा ठे तेने झानवडे आत्मा-  
श्रय करनार ताधुपुरुष सामादिकहृष शाङ्काकारी उत्ता करी देखे, योगी उहो सामा-  
दिकता करणवडे रागादिक अंधकारनो लाश करो पोतामां परमारम सवल्पने जोवे छे,

मद्याय माटे निल वैर धरनारा प्रणीते पण समताचाळा साकुलना प्रदातव्यी दरहरा  
लोह भोडे उ, इष्ट अनिष्टपणे रहेला चेतन अते अचेतन पक्षांवडे जेवुं लगा जोडे पास  
न वो ने पुकरमांज समता कहेवाय रे, वाहु उपर गोशीर्प चंद्रन तो लो। करे अयवा न  
नव्या। नगो उहु नरे तो पण जेती मतोबृनि लेदाय नहि—समान वर्ते नेवारे छुप्य  
समना ठे पास नमजङ्गु. सुनि करनार तथा प्रीति राखनार अने कोयांध तथा गाँठा  
आपनार उपर जेवुं चिन समान वर्ते ठे ते पुरुषज समतानुं अवगाहन करे ठे. जेसा करि  
द्वाय, जप के दान करवूं पडे नहि तेम ठां मावि समताशीज परस निवृत्ति (मोक्ष) प्राप्त  
याय. अहा ! ते केवी अमृला खाई ?! प्रयत्नी लेचेला अने क्षेशदायक रागाडिकर्ती उपा-  
सना या माटे करवी ? प्रयत्न वगर मेलची शकाय तेवुं अने मनोहर सुखकारे। समता-  
पांज वारण करवूं. परोक्ष होवाने लीने स्वर्ग अने मोक्ष तो शुभ ठेपण समतानुं सुन  
नो समंवेध होवायी प्रत्यक्ष ठेतो कोइ ठांकी शकतुं नयी. कविता कढ़वायी कह-  
गवा आमृतपर गा माटे मोक्षित नाहुं ? जेतो रस पोताता अनुलवमां आये ठेगवा सम-  
तारप अमृतनारु निरंतर पात करुं. खाय, लेण, तुल्य, अने पेय—ए चारे प्रकारना रसशी

विमुख एवा सुनिते पण हमेशां स्वेद्धाए समतारूप अमृतरसने वारंवार पीधा करे ले.  
 जोना कंठसां तर्प नांखे के मंदार पुष्पनी माला पहेशावे, तथापि जेने ग्रीति के अप्रीति  
 अती नय्यी ते खेरेखरो समतानो पति ले. जे गुड नय्यी, अचार्य नय्यी अने बीजी कोइ  
 रीते जेनी प्राति मुकेल नय्यी एवी एक समताज अङ्कने के दुर्दिवानने आ संसाररूप  
 पीडानुं औषध ले. अति शांत एवा योगीडमां पण एक कूरकम्ब रहेलुं ले के जे समता-  
 रूप शास्त्री रागादिकना कुलने हणी नाखे ले. समतानो परम प्रज्ञाव अथव तो एज ले  
 के जेयी एक आँड़े कृष्णमां यापी जनों पण शा श्वतपदने पासी जाय ले. जेना होवाथी  
 इन, दशन अने चारित्र ए त्रणं रल सफळ थाय ले, अने जे न होवाथी ते त्रण रल नि-  
 फळ थाय ले एवा महा पराकमी समतागुणयी सदा कढ़याण ले. उयारे उपसर्गो आवी  
 पड़ा होय अअचा मुट्ठु प्राप्त अपेल होय ल्यारे तत्काळ करवा योर्य अने श्रेष्ठ उपाय  
 समताना जेवो बीजो कोइ नय्यी. राग द्वेषनो जय करवाने इहुता एवा पुरुषे मोक्षरूप  
 वृद्धनुं एक बीज अने अति अद्भूत सुखने श्रापनां समतापृष्ठ सदा धौरण करवुं ”

ओं सुनिन्दितस्यामीनी देवाना।

दार सदुदसां॥१॥ इति जेस आ असार संसार सांशी भतम सारहृष्ट धर्मने ग्र-  
हण कर्नो, ते धर्म संसार, सल्लक्षण, पवित्रता, बहुवर्द्ध, तिपक्षंचनपणु, तप, कृपा,  
हुडना, सरलता, अनेतुक्त ए दृस शकोर ठे. पोताना हेहमां पण ड्डारहित, पोता-  
नाचमां पण समताए, वज्जित, नजरकार करनार अने आपकार करनार प्राणी उपर निरं-  
तर समद्विराग्वत्तार, निले उग्रसर्व तज्जा परिलक्ष्मोने सहन करवाने समर्थ, नित्य मे-  
यादिक लावनायुक्त हुदवचाळो, कृपाचान, विनायी, इंदियोने दमनार, गुरु शास-  
नमां औद्योग्य अन जाति विशेष गुणेशी संदृढ नवो प्राणी नतिधर्मने माटे योग्यता-  
वाळो ठे. नग किन युद्ध पांच अण्डात, त्रण युग्मवत अने चार शिद्धावत एम वार ब्रकोरे  
युद्धयता पर्म ठे.

२ ल्यायदी इठयोदासीत करनार, ३ शिट्टाचारनी शिंशारनी ४ सरचा कुळ-  
मीविवान अने चौजा रोकवाङ्गानी साथे निचाहसंबंध जोडनार, ५ पापशी ठ्हीनार, ६  
प्रभिन्न देशाचार यानरात, ७ नेट्र॑पण आन्नाचार, नहिं चोविनार, तेसां पण राजा.

देह दिद्धना तो विशेषे करी अवधुन्नाद् नहि बोलनार, ४ अति प्रकाश के अंति गुप्त नहि  
तेवा, सारा पाडोशवाला, आते आमेक निकलवाना मार्ग वगरना घरमां निवास करी  
रहेनार, ८ सदाचारी पुरुषोनी साथे संग राखनार, ए माता पितानी पूजा करनार, २०  
उपदचवाला स्थाननो ल्याग करनार, २१ निंदितकार्यमां नहि प्रवर्तनार, २५ आवकना  
प्रसाणमां खर्च करनार, २३ ऊँयनी स्थिति प्रसाणे वेष राखनार, २४ आठ प्रकाशना बुद्धिना  
गुणे तुक्क, २५ हमेशां धर्म सांचलनार; २६ अजीर्णमां जोजननो त्याग करनार, २७ पा-  
चनशक्ति प्रसाणे वखतसर जोजन करनार, २८ एक बीजाने बाध न करे तेवी रीते त्रण  
वर्ग (धर्म, आर्थ, काम) ने साधनार, २९ अतिथिनो, साधुनो अने दीन पुरुषनो यथायो-  
ग्य सत्कार करनार, ३० कहै पण दुरायह नहि करनार, ३१ शुण उपर पक्षपात राख-  
नार, ३२ देशकालने अहृचित आचरण तज्जी देनार, ३३ स्वपरना बछावलने जाएनार,  
३४ सदाचारी अने झानवृद्धनी पूजा करनार, ३५ प्रायवर्गतुं पोषण करनार, पृद दीर्घ  
दर्शी, ३७ विशेष जाएनार, ३८ कृतज्ञ, ३९ लोकप्रय, ३० लज्जावाल, ३१ दयालु, ३१  
सौम्य ३२ परोपकार करनामां तत्तर, ३५ अंतरंग छ शत्रुंना वर्गनो परिहार करनार,

अ। इंद्रियोने वर्ण गाहतार गांवा पुरुष गड़स्थर्मने योग्य हैं। (अशांत आ मार्गात्मा-रीना ३५) युणेन धारण करनार प्राणी शृङ्खीधर्म—समकित मूल चारे व्रत ग्रहण करवायो-रय हैं। आ तंसारमां मनुष्यजन्मनी साकहवयतामे इच्छनारो पुरुष जो यतिधर्म लेवाने आ-शक्त होय तो तेणे सदा आवकधर्म आचरवो।

अंकी नमिनाथजीनी देखना।

आ नंसार असार हे, धन नदीना तरंग जेवुं चंचल हे, अने शरीर बिजलीना विद्यास जेवुं नायवंत हे, तेझी चतुरजने ते त्र्योमां सर्वथा अनास्था राखी शुद्धि वट्, सोदमार्गरूप यतिधर्मने निवे प्रवत करनो। जो तेल करवाने अशक्त होय तो तेनी आ-कांक्षा गर्दा समकितयुक्त चार प्रकारना आनक धर्मने माटे तत्पर यतुं शावके ब्रह्माद्-गोई मन, वचन, कायाएँ करी धर्म संवंधी चेटावडेज अद्वैरात्री निर्गमन करवा। आ-वके आहा सुदूरोमां उर्फी परसेएमंत्रतुं स्मरण करीने विचारणुं के मारो शो धर्म हे? उ-कवा कुलनो हुं? आने मारे ऊं बन हे? पठो पवित्र यद् पुण्य तेवेय आने स्तोत्रवेदे यज्ञ-नियमां देवता करी। वयाशक्ति पचक्काण करीने पठो मोटा देशसे जांतुं त्वां निय-

वेदे प्रवेश करी प्रचुने व्रण प्रादृक्षिणा करवी, अने पुरपा दिक्कवडे ग्रहुने पूजीने उत्तम स्तो-  
त्रावडे स्तुति करवी, पठी गुफनी पासे जद् वंदना पूर्वक विशु क्लात्माचाळा प्राणीष पच-  
क्षाणने प्रकाशित करवुं (पच्चरक्षण लेवु). गुरुनां दर्शन थतांज उता अंडु, तेमना आ-  
गमनने वल्हते सासुं जडुं, मस्तकपर आंजली जोडवी, पोसे आसन नांखी देवुं अने गुरु  
आसनपर वेसे एटवो नक्किपूर्वक पर्युपासना करवी; तेमज उधारे गुरु जाय त्यारे पाठळ  
जडुं. आ प्रमाणे करवाई गुरु महाराजनी प्रतिमति आय डे. पठी गुरु पासेशी पाता  
फरीने पोताने घेर जडुं, अने पठी सङ्कुटिपूर्वक धर्मना अविरोधपणे आर्थ चिंतन (व्या-  
पार उद्योग) करवुं. पठी नध्यानहकाळ फरी जिनपूजा करीने जोजन करवुं.  
त्यारवाद् शाळेताडनी साये शाल्वांडुं रहस्य विचारवुं. पठी संध्या वश्वते फरी-  
वार देवाचर्चन करी, आवश्यक कर्म (प्रतिक्रमण) आचरवुं अने पठी उत्तम प्र-  
कारे स्वाध्यायध्यान करवुं. गञ्जे योगदस्मये देवगुरुना स्मरणी पवित्र शद् अ-  
द्यप निदा करवी, अने प्रायः अद्वहृपणाने वर्जडुं वचमां जो निदानो छेद थाय (निदा  
उडी जाय) तो खीना अंग निषे चिंतन करवुं, अने महात्मा सुनिडेए जे तेनाशी नि-

उन्नि करी ते तेनो विचार करवो. श्रीकुं शरोर, मंयीर्ते, विषा, सूत्र, मस्त, शैतन, मजा अने  
अद्वितीयी तरपुर हे, तेमज सनायुश्री सीबेली चम्पनी को अळ्डीहूप हे. जो लीना शरीरनुं  
अंदरना आने वडारना जागनु विपचयपणे करवासा आवे, अशाति अंदरना जागने वडार  
लाववासां आवे तो दरेक कासी पुरुषे गीध अने शियाळयकी तेना शरीरनुं रहण कर्हुं पडे.  
जो कात्यादेव ल्लीहूप राख्यां आ जगतने जीतवाने इहतो होय तो ते मूढ बुद्धिवाळो हैं  
तका रांगानुं शास्त्र या। माटे होतो नथी? अहो संकटपमांशी उत्पन्न थनारा कामडेव  
आ विश्वाने विडवित कर्यु ते, पण ले डुःखनुं मूळ संकटपज ढे: पर्व चितवन कर्वुं जे  
जे वाखककारी दोप होय, तेनो प्रतिकार चितवने, अने तेवा दोपशी मुक्त एवा मुनि-  
उन विंप इर्प पासवो. सर्व जीवोने विषे रहेली महाङुःखकारक लाचस्थितिने विषे विष-  
चार करो स्वतावश्री न सुखदायक एवा मोक्षमार्गनो शोध करवो. जेमां जिते श्वर देव,  
द्याधर्म अने मुनिन्दु गुरु हे एवा श्रावकपणानी कभी अमूढ (पंडीत) जन शुलादा न  
करे? वली! उत्तम प्राणीए ते समये आवा मनोरथ करवा के “हुं जिनधर्मरहित चक-  
वतीं अवाने पण इहतो नथी, परंतु जैनधर्मवासित किंकर के दरिंदी शवाने इहुं ठुं.

वक्ती सर्वं संग गोड़ी दइ, जीर्णं वख पहेरी, मखीन शरीर राखी अने माधुकरीदुनि  
लंगीकार करी हुं मुनिचयनि क्यारे आचरीः? डुःशील जनोनो संसर्ग ठोड़ी, गुरुना  
चरण रेजनो स्पर्श करी, योगनो अरुयास करतो सतो हुं आ संसार तेहवाने क्यारे स-  
सर्थ यहश? अर्ध रात्रे नगरनी बहार कायोत्सर्ग करीने संतरवत् थेयेला मारा शरीर  
साथे दुपनो क्यारे पोताना संधने घस्या कररो? बनमां पश्चासन करी अने मृगना च-  
जाने उत्संगमां राखीने रहेला एवा मारा मुखने बुद्ध मुगो क्यारे आचीने सुंधरो? यहु  
आने मित्रता, तुण अने ल्कीमां, मुवर्ण अने पाषाणमां, मणि अने मुतिकामां, तेमज  
मोहृ अने संसारमां मारी समानबुद्धि क्यारे अशे? आ प्रसाणे मुक्तियुहनी निसरणी  
रूप गुणशेषी उपर चडवाने माटे परम आनंदरूप लताना मूलचूल मनोरथो हमेशा  
कर्या करना.” आची श्रीते अहोरात्रिनी क्यां प्रसादर हितपणे आचरतो अने यथाशृष्टीते  
कहेला बुतोने विष्णुति रहेतो श्रावक गृहस्थपणमां विशुद्ध शाय ठे.  
श्री अरिष्टनेमिनाथजीनी। देशना।

सर्वं ग्रामीठें लड़की विद्यतना विदास जेवी चपल ठे, संयोग भेवटे वियोग-

नेम पुरुष चतुर होय ते रत्नां छुरायिता उद्यगी ल्लो तेताशी डुर रहे—इत्ती  
नाथ। तम मन्दिरायान करेवायी बुद्धि नपु याय रे. मन्दिराना पातशी जेसनां चित पर-

नेन प्राप्त करावनारा अनेन चक्रामां प्राप्त येवता अर्थ जेवा ठे. यैदन सेवनी गाया जेउ  
नानंवेत ठे, आने प्राणीउरुं शारीर जलना परयोट। जेउ ऐ; तक्का आ आसार संसारमा  
कोउं कांड पण सार नरी। मात्र हान, दर्शन अनेन चारिचरुं पाळ्हुं पाज नार ठे. तेमां त-  
दय उपर जे अठो, ते मस्यगुदशेन कहेवाय ठे, यथार्थतत्वनो चोय ते इन कहेवाय  
उ अनेन चावेय चागनी विरिति ते मुकिनुं कारण चारिच कहेवाय ठे. ते चारिच मुनि-  
नेन सवान्नसयाणे अनेन बुद्धदयोने देशश्री होय ठे. शानक दावजीवित देशनास्त्रमा  
तहार, नर्म साधुठुनो। उपानक अनेन संसारना स्वरूपनो जाणन्नार होय ठे. शावक ?  
लैद्यग, २ सांस, ३ मालण, ४ मत्तु, ५—७ पांच प्रकारना उद्देशरादि बुद्धना। फळ, १०  
अनंवकाय (कंडमूळ) ? अज्ञात (अजाण्या) कळ, १२ राज्ञियोजन, १३ काचां गोरस  
(डुध, दही, तामनी) साथे मलेलुं छिद्दल, १४ पुष्पित लान, च दिवस ठयतीत शेवेल  
ठड्डी। अनेन कोई गयेलुं अक्ष—ग सर्व अत्तद्यपनो ल्लाग करवो।

शश श्रयेवां रे एवा पापे पुरुषो माताने प्रिया साने रे अने प्रियाने माता माने रे. तेवे चिन्त चक्षित श्वासी पोताने के परने अथवा पोताना के पारका पदा र्हने जाणता नमी. २०६ पोते रांक ठतां श्वासी थइ वेसे रे अने पोताना स्वासीने किंकर समान गाने रे. शावनी जेम चौटासां आलोटता सचपहनीला युहसां श्वास विवरनी गुंकारी शूने रे, गच्छा- नना रसमा मग्न थयेद्वो माणस नम थइने चौटासां सुने रे अने लीलावडे पोतानो युल अनिप्राय पण प्रकाश करी दे रे. जेम विचित्र चित्रनी रचना काजळ चूंसवारी नष्ट थइ जाय रे, तेम मदिराना पानरी कांति, कीर्ति, मति, अने लक्ष्मी चाल्या जाय रे. म- दिरापानी चूत वळायुं होय तेम नाचे रे, शोकस द्वित होय तेम पोकारे रे, अने दाह- उवर आठयो होय तेम पृथक्कीपर आळोटे रे. मदिरा हलाहल विषनी जेम अंगने शि- घिल करे रे, इंदियोने ग्लानि आपे रे, अने सहान् मुड्डा पसाडे रे. अग्निना एक तण- णाथी तृणनी मोटी गंजी बढ़ी जाय रे तेम सद्यानरी विवेक, संयम, झान, सत्य, शोच, दया अने कृमा ए सर्व विलीन थइ जाय रे. मदिराना रसमां घणा जंहुरु उद्भ- चावे रे, तेशी हिंसाना पापयी जीरु एवा पुरुषे कदापि मदिरापान करवुं नहीं. मदिरा-

पानी आएँ होय तेने न आएँ कहे रे, लौंगुं होय ते न लींगुं कहे रे, कुरु होय तेने नहीं करेंगुं कहे रे अने राज्य विग्रेने मिश्या अपवाद आपी स्वेहाए थके रे. मूड बु-  
किनाङों मधुपानी वथ नंदनादिकनों जय ठोडी दइते थेर वाहेर के मार्ग—ज्यां मले लां परदवयने सुंचवी क्षेर ले रे. सवयपान करवायी थयेला उनमादवाळो पुलष चालिका, यु-  
वति, बुद्धा, ब्राह्मणी के चांडालो—सर्व जातिनी परखीने पण उन्मत्त थइने: जोगवे रे.  
मधुपानी पुक्ष रटतो, गातो, लोटतो, दोडतो, कोप करतो, तुष्ट थतो, रोतो, हसतो,  
स्तन्ध रहेतो, नमतो, जमतो, अने लजो रहेतो, एम आनेक किया करतो नटतो जेम  
जटक्या करे रे. हमेशां जंतुउना समुहनो ग्रास करतां ठतां यमराज जेम तुष्ट थतो नथी  
तेम मधुपानी वारंवार मधुपान करतां ठतां पण धरातो नथी. सर्व दोषोतुं कारण मथ  
रे, अने सर्व प्रकारनी आपत्तिनुं कारण पण मथ रे, तेथी अपश्यने रोगीनी जेम मनु-  
ल्ये तेनो ल्याग करतो.

जे प्राणीउना प्राणनो अपहार करी मांसने इछे रे, ते धर्महृप बुझता दया नामना  
मृष्णने उन्मूलन करे रे. जे मनुष्य हमेशां मांसनुं जोजन करतो ठतो दया पाऊनाते

इहे ठे, ते पञ्चलित अग्रिमां वैसडीनुं आरोपण करवाने इहे ठे. मांस जक्षण करवासा  
बुध माणसनी बुद्धि उर्ध्वद्वाळी डाकणनी. जेस प्रत्येक ग्राणीने हणवासां प्रवर्त्ते ठे.  
जेठ दिव्य चोजन रतां पण मांसतुं जोजन करे ठे, तेठ अमृतरसने गोडीने हयाहल  
विपने खाय ठे. जे नरकरुप अग्रिमां दंधणा जेवा पोताता मांसने चीजाना मांसथी  
पोषवाने इहे ठे, तेना जेझो चीजो कोइ निर्देश नयी. बुक्क आने गोपितयी भतप्ल थ-  
येहुं, अने विष्टारसथी वधेहुं पहुं दोहोवडे उरी गयेहुं मांस के जे नरकना। फलरुप ठे  
तेन कोण बुद्धिमान जक्षण करे ! अंतमुहुर्ते पढी जेमां अनेक अति सहृदा जंतुहु उत्पन्न  
आय ठे, पहुं मांखण विवेकी पुरुषोए कदिपण खाहुं नहीं. एक जीवनी हिंसामां केटहुं  
वधुं पाप ठे, तो पढी अनेक जंतुमय मांखणने कोण सेवे ?

जे अनेक जंतु सहुहनी हिंसारीज भतप्ल थयेहुं ठे अने जे लालनी जेम जुगुसा  
करवायोग्य ठे, पवा मध्यने कोण चाले ? एक एक पुष्पमांथी रस लाइने मक्कारुप  
वसन करेला मध्यने धार्मिक पुस्त्रो कदिपण खाता नयी.  
बुंचरडो, बड, पौपर, काक, उडुंवर, अने पौपळाना फल घणा जंतुठार्थी आकुछ

न्याकुल दोय ते, तेथी ते पांचे दृष्टानां कलं कदोपण खावां नहीं, यीजुं जहय मळयुं न होव असे कुभारी शरीर क्षाम (डुक्कल) घट गायुं होय तोपण पुण्यासा प्राणी उंवरडा-टिक पांन वृक्षानां कलं खाता नर्न।

सर्व जानिनां आर्द कंद, सर्व जातनी कुंपळो, सर्व जातिना घोर, सर्वण शुद्धती तवना, कुमारी (कुंचार), निरिक्षिणीका, शतावरी, विरुड्ह, गडुची, कोमल आंचली, प-दयंक, आमुनवेल, भूकरजातिना बाळ, अने ते शिवाय दीजा सूत्रमां कहेला अनंतकाय पदारों के जे मिश्याहटिउंकी आहात ठे, ते प्रथलशी वर्जना.

गडीन निरंकुश यडने संचरता ऐत पिशाच विगेरे आझने उघिई करे ठे, तेथी गनिने वयाते कोइ पण प्रकारउं आह जमतुं नहीं. घोर अंधकारधी जेनां नेवो हंधाई जाव ठे, एवा अनेक जंतुउं आनन्दां पडतां उतां जोवासां आवता न शी, तेवा रात्रिना स-मनसां कोणा नोजन करे? आ प्रमाणे जोजनमां विवेकवु ढिवाळो होवाची दर्द अज-दोन तजनारो आवक अनुकमे लंसारभी मुक्त थड जाप ठे.”

## श्री पार्वतायनी देशना।

आहो जळय प्राणी! जरा, रोग अने मुख्यी जरेला आ संतारलुप मोटा आर-  
एयमां धर्म विना वीजो कोइ ब्राता नयी, माटे हमेशां तेज सेववा योग्य ले. ते धर्म-  
सर्वविरति अने देशविरति, एम वे प्रकारनो ले. तेमां अनगारी सायुज्यतो पहेलो सर्ववि-  
रति धर्म ले, ते संयज्ञादि दश प्रकारनो ले. अने अगारी—ग्रहस्थनो वीजो देशविरति  
धर्म ले, ते पांच अणुवत, न्यण गुणवत अने चार शिक्षावत एम घार प्रकारनो ले. जो ते  
वत अतिचाराळां होय ले तो सुकृतने आपत्तं नयी तेथी ते पक एक व्रतना पांच  
पांच अतिचार ले, ते त्यजवा योग्य ले. पहेलुं व्रत जे आहिसा, तेमां कोधवडे बंध उवि-  
लेद, अधिकचारनुं आरोपण, प्रहार, अने अन्नादिकनों रोध—ए पांच अतिचार ले.  
वीजुं व्रत सत्यवचन, तेना मिळयाउपदेश, सहसा अज्ञाहयान, गुह्य ज्ञापण, विश्वा-  
सीए कवेला रहस्यनो जेद अने कृटलेख—ए पांच अतिचार ले. श्रीजुं व्रत आसतेय,  
(चोरी न करनी) तेना चोरने अनुज्ञा आपनी, चोरेल वस्तुनुं ग्रहण करां, शङ्कु राज्यनुं  
लंघन करां, प्रतिरूप वस्तुनो लोळसंतेळ करवो, अने मान माप तोल खोदां राखवा,

ए पांच अनिचार हे. नोशुं वत ब्रह्मचर्य-सेना अपरियहिता गमन, इत्वर परियहिता  
गमन, परविचाहृ करण, तीव्र कामचोगानुंराग, अनेआनंगकीडा-ए पांच अतिचार.  
ऐं पांचमुं वत अपरियहृ (परियहृनुं प्रमाण). तेसां धन धान्य प्रमाणातिकम, तांचा पि-  
तङ्ग विगरे भातुनुं प्रमाणातिकम, द्वीपद चतुषपद, प्रमाणातिकम, द्वेत्र वस्तु प्रमाणा-  
तिकम अनेस्त्रय सुवर्ण प्रमाणातिकम-ए पांच अतिचार हे. ते अतिचार अनाजना-  
ताना सोटा माप करवाशी, ताम्मादिकनां जाजनो नानां मोटां करवाशी, द्वीपद चतु-  
षपदना गर्च धारणशी अयेव वृक्षशी, घर के दोत्र वजेनी लोंगां के बाड काढी नांखीते पक्त्र  
करी देवाशी, अनेस्त्रय सुवर्ण कोइने आपी देवाशी लागे हे. पण ते वत ग्रहण करना-  
रने दगडवा योग्य नशी. स्मृति न रहेनी, उपर नीचे अनेतिरठा लागे जवाना करेला  
प्रमाणनुं उद्यंधन करतुं अने दोत्रनी वृक्षि हानी करनी-ए पांच ठडा दिग्विरति वतना  
अनिचार हे. तचित्त नक्षण, सचित्तना संचयवाला पदाश्रव्यु नक्षण, तुड औषधीतुं  
तक्षण तथा अपद्वच अने ठुपक्षव वस्तुनो आइर-ए पांच अतिचार जोगोपतोग प्र-  
माण नामना सातमा वतना हे. ए अतिचार जोजन आश्री ल्याग करवाना ठे अने

यो जा पेट्ठर कर्मी द्यजनवाना थे, तेसां स्वर कर्मनो द्याग करवो। ए. स्वर कर्म पंदरे प्रकार-  
रना कर्मादानरूप थे, ते आ प्रमाणे—अंगारजीविका, वनजीविका, शकटजीविका, चा-  
टकजीविका, स्फोटजीविका, दंतवाणिजय, लाखवाणिजय, रसवाणिजय, केशवाणिजय,  
विषवाणिजय, यंत्र पीड़ा, निलाउना, असतीपोषण, दवदान अने सरः योव—ए पत्तर  
प्रकारना कर्मादान कहेवाय थे। अंगारानी चढ़ी करवी, कुंचार, छुहार तथा सुन्वर्णकार-  
पणु करतुं अने चुनो तथा इंटो पकववी। ए कासो करीने जे आजीविका करवी ते अंगार  
जीविका कहेवाय थे, डेढेला ने बगर टेढेला वनना पञ्च, पुल्प अने फलने लावीने वे-  
चवा, अने आनाज दळ्हुं, खांडुं—ए काम करीने जे आजीविका करवी ते वनजीविका  
कहेवाय थे। शकट ते गाड़ी अने तेना ऐ, घरी विग्रे अंगने घडवा, खेडवा अने वे-  
चवा, एस्थी जे आजीविका करवी ते शकटजीविका कहेवाय थे। गाड़ी बळद, पाड़ा,  
बंट, खर खच्चर अने घोडाउने जाउं आपी नार वहन करावीने तेनावडे जे आजीविका  
करवी, ते जाटकजीविका कहेवाय थे। सरोवर तथा कुचा विग्रे खोदवा अने शिला पा-  
षणने घडवा, एम पृष्ठी संवंधी जे काँइ आरंज करवा अने ते बडे आजीविका करवी

ते स्फोटनी विका कहेवाय रे. पशुउत्ता दूत, केश, नश, अस्थि, लचा, अने रुचाड़ा विग्रे तेना उत्पन्नि व्यानेशी ग्रहण करीने ते नस अंगोनो जे भवापार करनो, ते दंतवाणिड्य कहेवाय रे. लाख, सनकीळ, गळी धावडी अने उंकण्ठार वीनेर वस्तुतो जे उत्तापा, नरवो ते पापदा ग्रहरूप दाखवाणिड्य कहेवाय रे. सांखण, चर्वी, मध अने मटिरनो ठवापार करनो ते रसवाणिड्य कहेवाय रे. अने बे पागवाढा मनुष्यादि अने चार दगबाला पशु आदिनो जे ठवापार करनो ते केशवाणिड्य कहेवाय रे. कोइ पशु जाननुं केर, कोइ पण जाननुं याख, हल, यंत्र, लोह अने हरिताळि विगेर जीवितनो नाश करनारी वस्तुतनो जे ठवापार करनो ते ‘विषवाणिड्य’ कहेवाय रे. तिल, शेरडी, सर्पव अने परंड विगेर उल्ल यंत्रादिक यंत्रोक्ती जे पायाना ताक्षा पञ्चमांशी ते झ-झत्तर काढीने तेनो जे ठवापार करनो ते यंत्रपीडा कहेवाय रे. पशुउत्ता नाक चीधवा, डाम देउने आंकवा, सुकड़ेद (वासी करवा) एषु छागने गाऊवा अने कान विगेर अंग चाप्ता, ते निवाहिनकर्म कहेवाय रे. ऊव्यने साटे सेना, पोपट, माजार, कुकडा शाले मोर निगेर पहानी पालवा पोपवा अने दासीउनुं पोयण करयुं, ते ‘आततीपोदण’ कहेवाय रे.

नयसननथी अथवा पुण्यवृद्धिथी एम वे प्रकारे दाचानलठुं आपरुं ते लवदान कहेवाय ठे।  
 अने सरोवर, नदी तथा दहो विगेरेना जळने शोधी लेवाना भपाय करवा, ते सरःशोप  
 कहेवाय ठे। आ प्रमाणे पंदर कर्मादान समजनां अने तेनो ल्याग करवो। संशुक्त अधि-  
 करणता, उपत्योग अतिरिकता, अति बाचाखता, कौकुची अने कंदपचेष्टा—ए पांच अ-  
 नर्थदंड विरमण नामना आउमा ब्रतना अतिचार ठे। मन, वचन अने कायाशी छुप  
 प्रणिधान, अनादर, अने स्मृतिरुं अनुपस्थापन ए पांच सामाधिकवतना अतिचार ठे।  
 मेल्य प्रयोग, आनयन प्रयोग, पुद्गलनो प्रक्षेप, लालदातुपात अने रुपालुपात—ए पांच  
 देशावकाशिक ब्रतना अतिचार ठे। संशारादिक बरावर जोया विना के प्रमाड्या विना  
 मुकरुं ने लेबुं—प्रमाद, अनादर अने स्मृतिरुं अनुपस्थापन—ए पांच पौषधब्रतना अति-  
 चार ठे। सचितनी उपर मुकी देबुं, तेनावडे हांकरुं, काळठुं ऊहंघन करी आमंत्रण क-  
 रवा जबुं, मतसर गरावरो अने ठयपदेश करवो—ए पांच चोशा अतिथि संविजाग नामना  
 शिक्षाब्रतना अतिचार ठे। आ प्रमाणेना अतिचारोए रहित एवा ब्रतने पालनारो आवक  
 पण शुद्धात्मा अद् अनुकमे जववंधनथी मुक्त अद् जाय ठे।

## श्री महावीरजिन देशना.

“ अहो ! आ संसार समुद्रता जेवा दारणे थे, अने तेवुं कारण बृक्षता वीजती जेस कर्मज ठे. पोतानाज करेला कर्मशी विवेकर हित झेयेदो प्राणी कुचो खोदनारनी जेस अधोगतिने पाने ठे अने गुरु फुलय चाळो पुरुष पोताना कर्मशी मेहेल बांधनारनी जेस उर्द्धगतिने पासे ठे. कर्मना चंथनुं कारण एवी प्राणीनी हिंसा कर्दीपण करवी नहीं. दमेशां पोताना प्राणनी जेस वीजाना प्राणनी रक्षामां तत्पर रहेवुं. आत्म पीडानी जेस परजीवनी पीडाने परहरवाने झुट्टता प्राणीए असत्य नहीं वोखतां सत्यज वोलवुं. माणसना चक्षःप्राण लेवा जेवुं अदस घन्य कदिपण लेवुं नहीं, कारण के तेतुं घन्य हरवार्थी तेतो चक्ष करेलोज कहेचाय ठे. बगा जीवोटुं उपमद्दत करनारं मैशुत कदिपण सेवतुं नहीं, प्राङ् पुरुषे परवक्ष (मोक्ष) ने आपनारं बहुचर्यज धारण करवुं, परमह धारण करनो नहीं. प्रणा परियहने लीधे अधिकजारथी वलदनी जेस प्राणी विद्युर अइने अभेगनिमां पडे ठे. आ प्राणातिपात्र विग्रेना वे जेद रे तेमांथी सुझने जो ठोडी शकाय नहीं तो पवी सूक्ष्मता लागमां अनुरागी थहने चादरनो ल्याग तो जरुर करयो.”

पापनां फल तथा हितोपदेशा उपर देशाना।

हे मुनि ! तुं जन्मना अने जराना छःख जो, तने जेम सुख प्रिय भे तेम सर्व जी-  
वोने सुख प्रिय भे. एन विचार करी जाणतो था, माटे तद्वदशी उत्तम विद्वाने मोक्षने  
जाणतां थकां पापकर्त्त नहीं करतुं.

मुनिए गृहस्थो साधे क्लेह के लटपट करवानी टेव लहीं करवी. कारण के गृहस्थ  
आरंजदी आजीविका करे डे. तथा हुजु आ अने परदोक बजेनां सुखने चाहा करे रे.  
अने जेउ कासजोगमां आसक्त शह कर्मने बधारे डे तेउ ते कर्मांशी चराता थकां वार-  
वार संतारमां जटकया करयो.

वळी कामासक्त पुलय हास्यविनोदमां जीवोने सारीने पण रमत गमत माने डे.  
माटे एबा थाळ जीवो साधे सोबत नहीं करवी कारण के तेम कर्यांशी अंते आपणी  
खरावी वधवानी.

माटे खरा विद्वाल पुरषो मोक्षने जाणी करीने तथा नरकादिक दुःखोने देखताँ  
थकां पाप नशी करता.

माटे हैं भीरपुनि तुं मूळकर्म तथा आयकमने जीव्यो उदा पाड़, कारण के कर्मोंने तोड़वायीज सर्व पोनाना पवित्र आत्मरूपना जोनार आय है.

अने एदा मुनिचुन मरणना लक्ष्य थी मुक्त शाय है. एवा मुनिई संसारना उःखोयी वीहीना वक्का दोकमां रहेदा मोहस्यठने जोइने रागद्वेपरहितपणे वर्तीता अका शांत, मननिचंत, इतनचंत अने यत्कनंग अद्दने काळक्कने कर्मदाय करता अका वर्ते हैं.

जो “पापकर्म वहु करेदां हे” एस जणाय हो, सल्यमां हिमसतवान शालू एस तरपर रहेदा बुद्धिनान पुलयो सर्वे डुष्ट कमोनो नाश करे हैं.

आ संसारी जीव अलेक कामोमां चितते दोडावे हैं. ते चालणी के दरीआ जेवा होने जरपूर करवा मध्ये हैं, तोयी ते वीजाहेने सारवा, हेरान करवा, कवजे राखवा, देशने ढुवावा, देशने हेरान करवा, अने देशने कवजे करवा हैराय हैं. तेस करनि पण केटवाएक अंते संयममां उजमाल्ह थया. माटे है मुनिई तमारे दीक्षा लाइ परी जोगनी वांगा राखी वीजुं मृपावादरहुप पाप नही लेव्यु. अने विषयोने निःलार गणवा.

अइने प्राणी उनी हिंसा कदापि करवी नहीं।

परिग्रहने अहित करता जाणी आजेज तेने गांडँयुं तथा (विषय वांगारूप) प्रचा-  
दने पण अहित करता जाणीः इदियो वश करी वर्त्तयुं आ मनुष्यजनवां ऊचे आवेदा।

वस्तुने धरीने पापकर्मयी द्वर रहेयुं।  
पराकर्मी मुनिए, क्रोध अने तेनुं कारण, जे गर्व तेने जांजी नांखयुं आने लोपयी  
महोटा डुःखयी जरेली नरकगतिए जवाय ले एम जोयुं, माटे तेवा मोक्ष जवा तत्पर  
आपला मुनिए हिंसायी द्वर रही शोकसंताप न करवा।

हे मुनि जन्म अते सरण सर्वने ले, एम जाणी संयममां बह्या कर.  
माटे मुनिए जाते हिंसा न करवी, बीजावती न करावती तथा तेना करनारने  
रुद्धं न हि मान्युं।

## ॥ चतुर्विशति जिन सहुति देशना संग्रहना अद्यरा शाठदोना अर्थ ॥

पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.	पा. ? झुं.
त्रैकोटयनीं-यण लो- कुनां।	द्वाप-वल्ल सिंधुने-समुद्रने	मेला पुनः-फरीयो	कनक-निर्मलीनां ची आरुहयायडे-चहे	करते-सुहेने आकर्षण-खेच्छुं	करते-सुहेने आकर्षण-खेच्छुं	कंडुयन-खजवाळ्हुं	कंडुयन-खजवाळ्हुं
अंदरुन कर्तुं-उ-गो- भाव्यं ले	सहोदरा-बहनो	महात्म्यनो-मोटाइनो	आरुहय-पाडो	मार्जन-चाट्हुं	मार्जन-चाट्हुं	मार्जन-चाट्हुं	मार्जन-चाट्हुं
निधाननीं-धेयार्दी	समीनिने-सम नक्के- घाने	अवार्धे-सीमा, हड्ड	लोकाग्र-मोक्ष	आध्राण-मुंयेते	आध्राण-मुंयेते	आध्राण-मुंयेते	आध्राण-मुंयेते
प्रभारी-पदात्मयर्थी	भंडानि-कुने राख्युं	निधारण-दूर कर्तुं	निधारण-व्यार का-	तरलन-जुवान	याजार-निलाडो	तरलन-जुवान	तरलन-जुवान
पारदार-द्याग	गोपन्युं	निधास-रहेडाण	उद्देषित-रुद्धयापार्थी	रुपो	मूराक-उद्दर	मूराक-उद्दर	मूराक-उद्दर
परिनाग-समइनपणे	चेष्टा और्धी-चयापा- र्थी	लेश-जरा, अंश	लेश-जरा, अंश	लेश-जरा, अंश	आलिंगन-मेड्युं	आलिंगन-मेड्युं	आलिंगन-मेड्युं
नोकार-पृथि	तोड्हुं	अशय-नाश न पामे	उपद्रव-हरकत, अड- त्तुदा	तेवी	भुजंग-नाग, साप	भुजंग-नाग, साप	भुजंग-नाग, साप
फारी-गुसाहार, रें-	देहेआ	विभूति ओने	दहसी-लडाइ		नकुल-नोलीओ	नकुल-नोलीओ	निर-नेरविनाना
पार्थ	रत्नाकर-समुद्र	पश्चाकसने-तरोतरते	हसी-हाथी				

<p><b>दार्शन-गरीब</b> शेफाकी—शाढ़नुं नाम पा. ४ मुं.</p> <p><b>चिकित्सा—परीक्षा,</b> पारख सहस्र—सरखा</p>	<p>‘ओव्यमय—असंड १— हें ते त्रिपदी—त्रण पद— निरकुश—अंकुश वि- नामी</p> <p>संपत्ति—प्राप्ति, मेल- वर्दुं ते शब्दाकुशासन—शब्द-</p>	<p>करनोरी कर्पने उपेक्षा—वेतमा, वेद- उल्घन—ओळाँडुं, पार पामीजन्हुं लय—लीन</p> <p>संपकीर्थी—स्पर्शीयी, अडकवायी वाटो—दीवेटो</p> <p>शास्त्र व्यापीरहेला—प्रसरी</p>	<p>करनोरी कर्पने चिरकाळ—लांचा च- रकारी आधिकृत—मुख्यकरी स्थापि वेसाडेलुं, न- की करेलुं</p> <p>उल्घासित—प्रकृष्टित दोहद—दोहलो संशारी—अडकवायी विदारण—नाश</p> <p>आश्रो १— हेला इस्तोदोने—मोटा हा- रेहेला</p> <p>संज्ञासूत्र—नामरूप सूत्र उत्पाद—उत्पन थांते व्यय—नाश यचो ते</p>	<p>नहि अवतार लेनारा लावित—भिजाएली अहनिश—रात दहाडो तरंग—लहर श्रेय—फलयाण सद्भूतार्थ—खरा, सत्य स्तोता—स्तुति करनार दीर्घ—लांचा पा. ६ मुं.</p> <p>पर्य—प्रत्यय रूपस्थ—केवली अव- स्थानुं ध्यान मार्ग—हृषी निवारे—रोके आतप—ताप शून्य—रहित विश्वोद्धरण—विश्वो उद्धार करवामां अपुनजन्मा—फरीथी छेदना—कापवुं</p>
<p><b>दार्शन-गरीब</b> शेफाकी—शाढ़नुं नाम पा. ४ मुं.</p> <p><b>चिकित्सा—परीक्षा,</b> पारख सहस्र—सरखा</p>	<p>‘ओव्यमय—असंड १— हें ते त्रिपदी—त्रण पद— निरकुश—अंकुश वि- नामी</p> <p>संपत्ति—प्राप्ति, मेल- वर्दुं ते शब्दाकुशासन—शब्द-</p>	<p>करनोरी कर्पने उपेक्षा—वेतमा, वेद- उल्घन—ओळाँडुं, पार पामीजन्हुं लय—लीन</p> <p>संपकीर्थी—स्पर्शीयी, अडकवायी वाटो—दीवेटो</p> <p>शास्त्र व्यापीरहेला—प्रसरी</p>	<p>करनोरी कर्पने चिरकाळ—लांचा च- रकारी आधिकृत—मुख्यकरी स्थापि वेसाडेलुं, न- की करेलुं</p> <p>उल्घासित—प्रकृष्टित दोहद—दोहलो संशारी—अडकवायी विदारण—नाश</p> <p>आश्रो १— हेला इस्तोदोने—मोटा हा- रेहेला</p> <p>संज्ञासूत्र—नामरूप सूत्र उत्पाद—उत्पन थांते व्यय—नाश यचो ते</p>	<p>नहि अवतार लेनारा लावित—भिजाएली अहनिश—रात दहाडो तरंग—लहर श्रेय—फलयाण सद्भूतार्थ—खरा, सत्य स्तोता—स्तुति करनार दीर्घ—लांचा पा. ६ मुं.</p> <p>पर्य—प्रत्यय रूपस्थ—केवली अव- स्थानुं ध्यान मार्ग—हृषी निवारे—रोके आतप—ताप शून्य—रहित विश्वोद्धरण—विश्वो उद्धार करवामां अपुनजन्मा—फरीथी छेदना—कापवुं</p>

ओऽग्रहते--कौण प्रसाकृते--योरुं ते भाक्षेप--उपसो विनेशन--नोपदं मंदारनी--स्वनामुक्तिः अपराधाने--भपराप- णाने	शेष--गोदुं विनिदण--नवाड जेवुं अविभत्य--विगाड वि- नादुः मुंड नदि तेवुं शुभ्र--सानं निःचासनी--नीचाशा सनी	अभिबुल्यपणे--सन्तु- स्व रहेवापणे पर्पिओ--मोजां, लहोरो विहारधृषि--विहारक- रवानी जगा लय--नाशा मूरक--उंडरो	ब्रह्मल--पद्मगार, उ- मनोरथने--मनी इ- ल्लाओने उपताप...उपद्रव, सं- ताप	पिंडाकारे--गोक्राकारे साम्राज्यतो--कैमवनो संचय--एकडुं थवुं उन्मुक्तन--मुळ काढवुं समधिहार--वधारो, वारंवार
सप्तो--गोरां सोग करी--रेणी तन्मां--गाराटीं पर्मीता--परमेता पिगीतामानी--भी- नाग एणानो करीर--कंटिः,	दिल्ला--मुंडर दिल्ला--पाठल पा- क्षिति--शाकत नर्मां--गाराटीं पर्मीता--परमेता पिगीतामानी--भी- नाग एणानो करीर--कंटिः,	शेष--नीचा उपद्रवो--दुःखो इतिओ--उपद्रवे जेवा निहार--कंडील नंदुं, आठे करवुं नर्मांचुगोचर--चाम- दानी आंखे गोड ग- काय तेवा	शुद्ध--नीचा सत्वर--जल्दीथी जंगम--चालता (एक ठेकाणेथी चीजे ठेका- नो, दुःखनो उल्लेश--नोश पड़द--उंडरो	आपोद--प्रसऋता उपेशा--भूली जावुं योगात्माने--योगवा- का आत्माने, योगीने कल्पांत काळ--की वस्तुनो नाश धाय तेसो काळ
प्रसाकृते--योरुं ते भाक्षेप--उपसो विनेशन--नोपदं मंदारनी--स्वनामुक्तिः अपराधाने--भपराप- णाने	शेष--गोरुं विनिदण--नवाड जेवुं अविभत्य--विगाड वि- नादुः मुंड नदि तेवुं शुभ्र--सानं निःचासनी--नीचाशा सनी	अनुमरेजे--पाठल पा- क्षिति--शाकत नर्मां--गाराटीं पर्मीता--परमेता पिगीतामानी--भी- नाग एणानो करीर--कंटिः,	दुर्भिक्ष--दुकाळ इतिओ--उपद्रवे जेवा के अतिविद्यि आदि. अधिवानो--अकल्याण- नो, दुःखनो उल्लेश--नोश पड़द--उंडरो	उपेशा--भूली जावुं योगात्माने--योगवा- का आत्माने, योगीने कल्पांत काळ--की वस्तुनो नाश धाय तेसो काळ

पा. ८ मु.	इन्द्रधनं--एकसो ओड य जानायाको व्यज तर्जनी--यहानाथी पिपथी--यहुटाना जो	ताकेक--तर्कवितर्क करनारा दिव्य पुण्यो- देवताइ हेनी ओंगकी	लभ्य धएला-पामेला उदासपणे--वैराग्य- पणे	तेवा विश्वा-दुनिआना प्रतिपालन-रक्षण फूलो	अपुत्रोंजी--अमृत- ना भोगत करनारा जीर्ण-चुनां लय-लीनपणुं, मय	निषेठ--मेळविनाना कुटील-यांका अटंगत--घणा अभव--भवरहित	वीरवतनाला--नाडा हुर अहेश--शीघ्र, महादेव अगढ़-रोगराहित	निषेठ--मेळविनाना अहेश--शीघ्र, महादेव अराजस--रजोगुण
		विश्ववृत्तिवाला--उ- लटा चालनार प्रतिकृद्धताने .अबका दानबो	समृद्धिओंमे--उत्तम कुटिओंवेदे सहायकारी--मदद-	विलक्षण--विचित्र स्फुटरीते--प्राटपणे, पणाने	पा. ९ मुं. प्रवंशसा--वरवाण मलापकर्षण--मेल जायना	प्राथना--विनानि अझंग--तेल चौकड़ुं स्तनभूय--चीकणुं	व्रह्मरूप--ब्रह्मनाजेवा संकल्प--विचार इव्यादि--पैसाविगेरे	प्रक्षालन--स्नान, संतुष्ट--तृत
	अंथकार--अंधारं सन्मुख--सामुं कैरा- चाल्ड रोप--ख्वाटी अवस्थित-स्थिर	योली चमत्कार--ताजुबी, अ- जायनी	दौःशीद्य-खरावचाल महात्म्यथी--प्रभावथी कृतार्थ--सफल	निष्कलंक--कलंक- कोडि	प्रवंशसा--वरवाण निष्कलंक--कलंक- कोडि	संकल्प--विचार संग--सोचत	प्रक्षालन--स्नान, संतुष्ट--तृत	प्रमताए--यारापणा- वेद, रागवेदे
		व्यजी- रोप--ख्वाटी अवस्थित-स्थिर	कोटी-क्रोड	स्वाद्यी--चाखवाथी संतुष्ट--तृत	घोरुं			

पर्विन्दा--गृहीत निन्दा--लक्षण किं हर--चाकर गोपेला--संनिधिला निर्धि--धंडदाद	आमकत--रीढ़ी डगुँथुनी--इरखनन आँह, ती गोपेला--संनिधिला निर्धि--धंडदाद	मंजुर प्रास याय--मेलबे विराग--चैरान्य चलावतुं तेवा	पा. ३१ ई. ध्याता--ध्यान करनार ध्यान--चित्तनी प- काग्रता ध्येय--ध्यात करवा योग्य पदार्थ रण विषुटी--ए जण वस्तु एकात्माने--एक प- णाने
प्रभाद--मेंरवानी प्रभाद--मेंरवानी पा. २० ई. सनाय--यगीचार्क फ़ाग--कर्णीयो परमाणु--रक्षकण श्रीदेविकाङ्कुर्यो--य-	उंड औ भियाद्विश्वनन--न गरा- नेखोहुं भान नार वासनाने--इन्हेत्र नि विलास--युत उपात्तना--सेवा देवाधिदेव--देव ता	अलौकिक -असाचा- लापणार्थी शहयने--सालने उच्छृंखल-उड्डाऊळो सम्यक--वरावर प्रतिपादन--नक्की क- रीने	विषुटी--ए जण वस्तु एकात्माने--एक प- णाने हिंसक--हिंसा क- तारा, मारनारा आश्रित--जरेण रहेला अदुसरी -पाउळ चा- ली वर्तें जिनताय--तीर्थकर
पाकाळ मुऱी चरणरज--पगनीरेती पादपीठपां--पग मृ- कवाना वागोड उपर	कुँड--अटकीपेते तुं उत्कंठा--इन्हेत्र त्वीकार--कुल्ल	पण देव आरंभने--शरह करने सातक्रताते--आतम- सत्ताने	नजर स्त्राव--नहुवायवं अर्चन--पूजा।

चिरकाळना—शणा बरवतना प्रासाद—महेल जगतना—धणी	विश्वती—जगतनी द्वारने—चारणाने देशना—उपदेश भुवनेश्वर—ऋणभुवन-	हित्य ध्वनी—देवता- इ अवाज मृगलाओ—हरणाओ ग्रीवा—डोक	जित्र अज्ञ—हितकारी क्रम—पगलां मेह—यणां उंचा
सांपतकाळे—इयणां पाप—लायक मुक्तिना—मोक्षना निंधन—कारण	नना धणी दृष्ण—आरिसो, चा- टछु प्रतिविव—पड़छायो मूर्ति—विव	पंक्ति—लाइन, हार, श्रीणी संहासन—वेस्चावानुं आसन	सिंचन—चालुं मरहेशमां—मारचाडमां संचार—चालुं, मु- साफरी
संतंभ—धांभलो उद्योत—प्रकाश	समुद्रना नाः—मोटामां सोटा मंडप—मांडवो	गुंजारचवी—गणगा- णता अवाजथी रक्की—रागी, लाल पालव कौशीकीः—मा- लवकोशी, रागबालो ग्रोम—रागनी भेद	प्रहृ—पाणी पावानी परच—मुं कांतिओथी—तेजथी व्याप—व्यापी रहेल ल्योतस्ता—चंद्रपक्षाश ध्वनी—अवाज दुंदुधि—देवताइ वा
जित्र युक्त—सहित गृह—घर दुस्तर—हुँखे तरवा जातुमपाण—हीचण वगर	जित्र—हितकारी क्रम—पगलां मेह—यणां उंचा संचार—चालुं, मु- साफरी परच—माणी पावानी जग्या तुल्य—वरावर, सरखो अनुपम—उपमा रहित अश्रातं पणे—याच्या दुंदुधि—देवताइ वा	आनिमेषता—आवर्तु नहि पिंचावु सिंचन—चालुं द्विद्विपाडोओ—मोहु करो छो सिद्ध थप्लुं—नको यप्लुं	आनिमेषता—आवर्तु नहि पिंचावु सिंचन—चालुं द्विद्विपाडोओ—मोहु करो छो सिद्ध थप्लुं—नको यप्लुं

अने पांच अठुना नियान	निगिपा:-जीतवानी इच्छा	आदित्य—मूर्य कपिप—वांदराए चंद्रकान्तपणी—एक प्रिसडो—यंसटो मनाने—चूरकरने	भक्ति—पूजा निरंतर—हमेशा सर्वशुभन को परुप— ब्रह्म भूतपा कोठार लप	अत्युक्तिवाका—अनि शयोक्तिवाला प्रहृत—तेयार हास्यना—मशकरीना स्थानरूप—जग्या रूप व्यापक—पसरी जाय
	पा. २३ मं. प्रथमं छे—स्वापी- पाणे	मुकुत—पून्य मंपादनमां—मेठव- रेळा दुःखोने	पहेलानीलालाला संपर्कर्थी—स्पर्शर्थी वामां	प्रहृतपरावर्तनथी—ती- येना बढ़लावायी संपर्कर्थी—स्पर्शर्थी आकृतिवाका—रूप- गोचरः—गम्य
अने पांच अठुना नियान	निदिरता—चूरता गपना—गानि	मुकुत—पून्य मंपादनमां—मेठव- रेळा दुःखोने	वाका प्रिया—फोगट	व्यापी—पसरी पाशने—फांसाने अध्युदय—चढ़ती अपूर्व—नवाइ जेना बेफाल्कीका—एक जातुं याह हरी लयोछो—लङ्घयो चो
	निदिरगा—गिदानपणं गोडो—दृष्ट रहित इक्षपा—इसे बेळनाय	प्रतिकुङ्क—विलद् वर्तीनार—चालनार प्रमाद—आळस लायक	पराहृत—वदलायेलं निर्वाणरूप—मोक्षरूप वैताह्यागीरितुं—वैता- द्य पर्वततुं	दार—वारणं
अने पांच अठुना नियान	गिरिया—गोदाड	पां	नियाणु—निदान	आगह—सेव

उःमते=ददांथ गर्भेन्द्र-हाथी	दारिद्र्य=गरीबाई दृष्टिकारक-वरसावनार	पा. १६ मु समृद्धि=जर्जरो	छेद्याल्पणे-केवलज्ञा। न रहित अवस्था। समर्थ-वक्तव्यान	स्वाभाविक-प्रकृतिए प्रसर्यु-केलार्यु
गुक्ताहारादि=मोती- नाहार विसेरे	तंगाशा=ओआंचा पूर्णचंद्र=पुनमनों च-	आर्तिशार्यी=अतिदय दाळा	द्यातीकर्म-केवलज्ञान रोकनारा कर्म	समर्थ-वक्तव्यान
दाता=कहारना	द्रमा	स्फुरा=इच्छा लीन=मम	भुजाओ-हाथ स्थापन कर्या-सूक्ष्यां संपादन-मेळ, यासि	द्युजाथी-वेधथी, उपदेशथी-वेधथी,
आभूषण=घोणा	कुचोध=मिथ्यात्व अदुमोदना=प्रशंसा	वास्तुहमां=रहेवाना	अमंद-अरंड	व्याख्यानथी आराधन-पूजा, सेवा
विजय=क्रोह	याचज्जीविति=ज्यां मु धी जीर्वं लयां सुर्धी	स्थानकमां कुटिलताने-वांकाशने	वहन-धारण करतुं, पा. १७ मु.	तरिं-संतोष कुतीर्थकरूपी-अन्यती- थीरुपी
शासन=आज्ञा, शाल	जगदीश-जगतनाइश्वर	कुटिल-वांका	लेनारो	व्याघ्रथी-वाघथी
अधुना=हमणा	द्रहरूप=झरणारूप	गोप-गोचाळ, रक्क	परामर्च-हार्युं	त्रास-भय
दिनपरदिन=दरोज	चरणना=पगना	निःसंग-सोबत वि- निःसंगा-निःसंग	लोचन-आंखो	दिग्मुह-दिना शून्य
ओधका आधिक-वय- कृतपट्ट=वांछितप	ता वथता	भ्रांतिमां-वहेमया निःशंकपणे=निःसंदे-	ममता-हेत, राग, मेय प्रवर्तने-चालेछे	प्रवर्तने-अहंचीभाव स्वेच्छाथी-पेतानी
आपनारं शु. इ		पणे, खर्चीत		

मात्रजी पुत्रन्	उयोनितियोना पानि=	कट्की=केळ	दुवार=दुख करी नि  मदोत्सव—ओच्छव
पंडितपां—वरपां	चंद्र	वाटा=वाडा	वारण करी शकाय तें  कोप—गुस्सो
पा. २८ पुं.	झकाटिक=गङ्गनाततु	उद्यानोथी=वर्गीचा-	प्रचंड=आकरो जटाशारी—जटावाढा
लिए—पस्तह	स्तन	ओथी	आवच्च=भमरी निशाचरोथी—चेरोथी
स्वात्रवासी=तुयी आ-	मंत्रापदे=हुद्देवे	परिताप=अकडापण	सर्वस्वने—वर्धी वस्तु-
नेन्		पीडा	ओने उग=आकरा वडवानल=आमि
उद्यानी=नदी	यक्र=नंदनावाढं गोळ	पा. १९ शुं	चार्बीकलुपी—तास्तीक
गोपार्ण=पेट्टु देवडोऱ	पड़ि	कवायो=उकाला	रोद्धयान=माहुँयान मत
परंतुरो=गोदानी	जिश्वर=चणकक्षयाढु	प्रयोगोथी=उपायोथी	वेनवल्ली=नेतरती चेल तस्करोथी—चेरोथी
गान्यारामी=ग्राह्या-	हथीआर	प्रलयने=नाशने	स्वलक्षणा=भूल निषुणा—जाया
दां रघगाननार-	वव=इदुं ठथीआर	असाध्य=न वनी	नक्राना=मगरमच्छेना। यंडकी—टोकी
दां रघगान रघगानी	अदो=तवाइ जेवा	शके पटुं	दास्तण—भयंकर दोलाचार्य—मोदा
		नवा	उद्दार—नचान शियाऊ
दुर्मुख राप=वाटां	हथीआरो	सांय=नीं शके तें	उद्दिन=गाइलाथी वे पुष्प—हुल नादोथी—ताचोथी
गान्दरगला	नेत्राभी=भराई	दुर्दिन=गाइलाथी वे	पालंडी—कुतारा
	लेपनर्धी=चोपडवाथी	राण्डा दिवस कैपव—सावधी	

लगा - छोप	उच्चतुवास..भास का	पा. २१ सुं.	आश्रय..नवाइ	अचल=नाश न पामे
सदृश्यत-खरा	हठो ते	चार..मुंद्र	सरिताना .नदीना	तेवुं
सप्तय-करत	अवस्थ-जर	नृत्यादिक चेष्टा-नाच	प्रवाह .फांटा, बहेका	निर्गमन=विती जावुं
पा. २० शुं.	गंडप..घुँड्हो	विगेरे कृत्य	द्वीप..बेट	वाध करनारा=हर-
उल्लंघन करी--ओंभंगी	मगा-आनंदी	पेरावतःइङ्द्रो हाथी	मध्यस्थपणामा॒॑ - सम	कत करनारा
सेठुने-पूलने	स्वस्थ--शोत	स्फंथः-खभो	द्रष्टिणामा॒॑	द्वावित=भिनोथएलो
निश्रेणी-निसरणी	गोशीर्पचंदन-गोहचंदन	तेपथ्य-वेशा	उत्सुक- तप्पर	तत्काळ=तरतज
लोकाय-मोक्ष	अंगराग--शरीर उपर	अधिकार=सत्ता,	अजीत नदीतायतेवा	निःसंद=फरक्वं
श्रीपक्कुरु-उत्ताळो	विलेपन	अधीचर--राजा	परम .उङ्कुष्ट	चिरद्वतायी=उलटा-
वटेमार्गु-मुसाफर	देवदृष्ट्य--देवता ए आ-	अमृतांजीवनयी॒॑ .अमृ-	दानव--राक्षस	पणायी॒॑
सांसारिक-संसार	पेला	तना आंजवा वहे	महता-मोठाइ	सपृद्धिवाळा-आत्म-
	शंका--वेहम	आझ..अजाण	पा. २२ मुं	क मुखवाळा
	संवंधी	पुष्पमाळाफूलनीपाळा	निःसृहायी॒॑ -इच्छार-	पूर्वसंचित-पूर्वजन्म-
		मुजलहता ओ..हाथरुपी	हितपंगु	मां एकठां करेलां
अभाव-गोरहाजरी	मधी			क्रिद्धिवाळा-दोलता॒॑
	वहीओ			

नामा	कुट्-नाना	प्रज्ञाना-चक्रनी-पलय वक्षवान	हित	पा. २५ मं दीपकने-दीयाने हिमथी-वरफी
महाभासत्ववान्-महा- वक्षवान	पा. २३ मं परिपूर्ण-संपूर्ण	ऐश्वर्य-ठक्काई उणारेत-येकवर्तुं नि-नार्य-स्त्रार्थवीना	विशु-प्रधु विचित्व-चीतवी त शकाय तेउं.	सप्तष्टिद्वने-द्वीलत अहंत-अरिहंत पीडित-पीडा पामेलो
गिरि	पा. २४ मं विनिधी-प्रतिमायी	अङ्गकृत-गोभायमान परोपकारीपंच-पाद- सातुं भन्दु कुरवापण्य भाकर-ज्ञाण	प्रधुचि-प्रवेश मनोहर-पनने हरण करे पद्मु	आङ्गिक-प्रधानी-प्रहरी जिनमंदिर निःसंपणायी-असं- गणायी
	पा. २५ मं विनिधी-वियोगी	अङ्गकृत-गोभायमान परोपकारीपंच-पाद- सातुं भन्दु कुरवापण्य भाकर-ज्ञाण	ज्योत्स्ना-चंद्रद्वं तेज आङ्गिक-प्रधानी-प्रहरी तस्करो-चोरो	निर्देश-स्तन्दृ; निमङ्ग नक्षत्रयोनां-पाणीने ग्रेमानां डेलाणां पद्म-नृपद
	पा. २६ मं कुक्मो-प्राठां काम प्रसञ्चांज-उत्पन्न क-	कार दुखि ज्योत्स्ना-चंद्रद्वं तेज आङ्गिक-प्रधानी-प्रहरी तस्करो-चोरो	रोज दुर्घान-पाठुं व्यान तंतुयी-तांत्रिया (क- मं चंथनरूप)	प्रकाशप्रय-तरया दुर्घ-तराव
	वाकु	सत्वर-जलदीयी श्रोत शह गण्ला-था- केला		

विपन्निने—दूःखने	भवांतरमां—चीजा भ- योंमां	स्मृति—यादी	निवृत्ता करनार—पाढा	गळ
उच्छेद—नाश	वांछित—इच्छित	मनोरथने—वचने	कुशिलपी—कुलहपी	भुक्तिमा—सीपतु जोह
स्तोत्रपी—स्तुतिपी,	मनोरथने—इच्छतयस्य	प्रतिष्ठा—स्थापना	मुक्तामणी—मोती	मुक्तामणी—मोती
स्तैवनभी	कामवेतु—कामदूषा	परमेष्टि—उत्कृष्ट ऐ-	पा. १९ मुं.	पा. १९ मुं.
पा. २७ मुं.	गाय	धर्यवान	निधानस्य—भैरवस्य	
लघु लघु—नाना ना- ना, हळवा हळवा	ल्याग—ओड़ियु	प्रहार—या, मार	समस्त—वया	
अविरत—व्रत विनाना	कृष्णमंत्रयी—रक्षण क	कुमतने—कुमुदि, माठी	चरम—देवला	
निर्यक—फोगट	रनार मंथनी	तुळ्डि	अद्वितीय—जोडा चि-	
निर्मल्य—उत्तरेलां(झ- लादि)	संवर्मित—सहीसलामत	प्रवत्तीवनार—फेलाव-	नाना	आश्रय—रक्षण
न्यास थयेला—प्रसरेला	पिशाच—ठंयंतर	नार		विघ्नस—नाश
च्यवनकाढे—चयवा-	विचमान—हयात	टढ—सरवत, कठण		मुक्तामणी—मोती
वयते	लादि)	तिरस्कार—थिकार		ब्राता—तारनार
	साश्वत—जायु, हम्मेशा	अविकारी—विकार र-		निषित—कारण
	रहेनार	हित		
	वहिंगा—वहारना			
	विरापी—शांत पापी			

भर्ती-नाथ, वगी

दोहि-समर्पित

निरंतर-इमेन्ट

यानवने-पनने

दर्शिए-मक्कल

[ कठने

यद्युद्दलो-गाइनहु-

गोडग-टुँडा

कर्मना-ओना

अचिन-दोहर

अंधग-न अद्यग तैं

निनाथ-नकार

प्राणियां छापो

दुश्मनी-दंडा धा-

मह रातरा

प्राणिय-पापो

उद्दास्यपणाने-आ-

वरणपणाने

विमुक्त-विरेश मुका-

अहरनिन-अणरो-

काएँ

पा. ३० मुं.

पिंग-रायण

प्रियना-थलाना

दुसर-दुःखे करी त-

दी शकाय एवा

रोन-पूळ

कोग-भंडार

आपति-दुःख

निवारना-रोकनार

दानियाला-लाचाला

पा. ३? मुं.

स्थल-जल्या

गनिन-पापो

शेष-उचम

विधाता-बानादि-उ-

यन्त्र करनार

आदिकार-शरथात

करनार

प्रदीप-दीवो

प्रदोत-प्रकाश

अधीक्ष-प्रभु

मद्गंधी-मद्दरता

गंजेन्द्रल्प-हाथजिवा

दापक-आपता

देशक-देखाडनार

सारथी-रथ हांकतार

नेता-दोरनार

उद्दास्यपणाने-आ-

वरणपणाने

योगाचार्य-योगना

आचार्य

अप्र-गुह्य

विवृत-र

जिन-रागद्वेष जित-

नार

जापक-रागाहि शतु-

ओथी जीतावनार

पात्र-स्थानक

डयेट-वडील; पोटा

विष्वने-दुनियाने

अतुतर-श्रेष्ठ

उत्तर-वधना

मशालन करनार-थो

त्वं

त्वं

त्वं

त्वं

त्वं

त्वं

त्वं

नाचसपति-न्रहसपति उद्दित-उदय पामेला उँभर्सुवःस्यः-इया, मृत्युने पाताळने पूज- ना योग्य एवुं पञ्च प- रमोटि पद	ऐभर्सु-ठकुराइ परमेटि-मोदा इच्छर मेहेश-मोदा प्रभु उयोतिस्तत्त्वरूप-प-	चाला-रक्षक उत्पत्ति-उपजवुं ते स्थिति-हृषाती लय-विनाश वंश्या-वाङ्खणी	अदितिय-जेना जेवो बीजो कोइ नहि तेवो सर्वेतिकर्म-सर्वथा उं- ची स्थितिए; चढतीए प्रफुल्लित-खिलेला	समह-टोल्क चरणाविद-चरण क मङ्ग महसर - अदेवाइ जहाज-वहाण
आस-हितकारी पारंगत-पारपामेला - दक्षिणीय-दक्षिण गु- णवाळा [ हित निवेकार-विकार र वज्रकपभनाराच-ने पासां मकट चंथ उपर पाटो ते उपर खीली वाळा	पांजन समान ना अंजन समान पा. ३२ सुं. विरक्त-विरागी निपक्षी-सामा पक- वाळा अंगीकार करीए-क- बुल करीए	उदरपूर्ति-पेट भरवुं निनहव-निन्दक पुष्पवत् फूल जेवा निचारण-दर करवुं उच्छेदन-निषुल्लन निचारण-दरोवर आस्तिक्य-श्रद्धाळु देवीप्रभान-शोभावंत अग्रेसर-आगळ ज-	पा. ३३ सुं. कुशीरूप-कुखरूप गर्व-अहंकार विलास-रसत कमळाकर-सरोवर मध्यस्थ-तटस्थ वृथा-फोकट स्थीर-हाले चाले उपासना-ध्यान; सम-	वधु-वहु अजर-जरा रहित अचल-दिथर अडर-वीक रहित अपर-परभाव रहित युगादि-युगानी आ- त्रैलोक्य-त्रण लोकना नार
अमर-देवता रण	गतने आधार	नहों तेडुं.	अमर-देवता	जगत्याधार-त्रण ज-

पठियानिधान-पहि-	निरामी-उपार्थी- पाना भंटार	अनादिव-अकल्यण हित	जरा-दडपण लेग-जरा
गालि-तागतार- तिधान-क्रिया; चिधि	निर्मारी-विकार गहित	स्वपानरमणी-स्वपा- चपां रपण करनारा	प्रसाद-आङ्गस उक्त-यन-ओङ्गरुं
गमयन-यां [समृद्- भरानिधि-मंथार- निरपुरन्याश-पोऽन	पा. ३५ मुं अगत्यायी-जोडीया	मुकुटमुद्रा-मुकुटी आ आवर्त-फरी फरीने कुति	मुद्रेश-पारवाइ आवर्त-शाढ
यानि-यानि-पहि-	निरामी-क्रेड्या रहित नगरना गायी	आवर्तुं संपदा-वैभव अपायापगमातिशय- कट्टने हूर करनार	चात-चायु आतप-ताप वय-पारव्य, काप्यं वंधन-वांध्यं
युगमंगपी-अमृत- नेता संतप्तपती	युगमंगपी-अमृत- नेता संतप्तपती	अनकवाही-अकवा- हता रहित अन्नामी-परपां न वा-	शुभा-भूख विविष-जुदा जुदा आश्चित-परस्तर मंजेना
निर्विधि-पहित निरामी-आनंदन	निरामी-पहित निरामी-आनंदन	गंधर्व-देवताइ गवेया पो एवा	अपरस्पर-अन्योभ्य सराय-द्वारी, सराय आधि-पतनी पीडा योचन-जुवानी
निरामी - लोमण प- कारनी शाना रहित	गहित, भुल रहित अनिरोग-अंटम रहित	पा. ३५ मुं. आधि-पतनी पीडा	अपर्ण-क्रोध, रीस



मन्दनपण्ठं-गुणाणाश काहलपण्ठं-आजारी	जयन्त्यर्थी=ओळापां ओची	साचव्य=पापसाकृत आहिसा=दृथा
अनेहतं ज्ञानं = अर्द्धं करेण अने अनिवृत्ति करण वज्रांगो काळ विरः ३=जुगा, कोड़क अंतः ५=नेपडी-न्युन आह : ज्ञनर्थी=आपा-	शपक=क्षयकरवाना अंजने=भागते क्षीण=नाश, ओची पा. ३८ मुँ.	अचौर्य-चोरी न क- रवी ते अपारिग्रह-परिग्रह रहितपण्ठु
पांगो ते परिणाम ते गंभैहतं ज्ञानं = अर्द्धं करेण अने अनिवृत्ति करण वज्रांगो काळ विरः ३=जुगा, कोड़क अंतः ५=नेपडी-न्युन आह : ज्ञनर्थी=आपा-	रहितपण्ठु असारता=साररहित रथी	प्रीय-कठीन्तु कुनृत-सत्य पण्ठु
आधी गमपी=उपदे- गर्थी मेढ़प मेळी=दृढ़ेली, मेढ़ाएली जेहाते =गरीरानी उराते ५=उठाएली, मारेमी वयारे	कारागृह=वंथिखादुं आद्रिता=कोपक्रता निवारण=दूरकर्तुं आहेत-आरिहंतना कहेला	पा. ३९ मुं अञ्जनी-हयातीमांनादि विट्ठल-दोडादोड अनुरक्त-रागी पांगळा कुठापार-लवरान कुट्टी-कुट्टी आ कुणिल-लुंभापण्ठु
	पतियाति=विष्यास पराभव=तात्र	प्राणित-लुंभापण्ठु कुणिल-लुंभापण्ठु

ताहि विघ्नान ते  
अनंतादुर्योगाती  
चोहडी लघावाने  
आवाने छांडादु म-  
ने शाने आदाने  
ए गांधानष अर्थ  
परिगम ने

पाठ्य=ऐसे जलारा  
भवित्विभक्षण=पू-  
हृषीकृष हियाति दा-  
पासिति निष्क्र शुद्ध  
समानित पाये भि-  
खानादो उदय प-  
टे बेशार जान उर-  
गप्रयोगिता धाये

११७	रना	वस्थापां अनेक दु- पण हें एम विचा- रहुं ते	तत्काळ फळ मळेते प्रयाण—कातुल पूर्णपर—आगळ पा- छ	सिथर—कायम प्रतीती—दिशास आगामी—आवता, भविष्यना
		विपाक—अनंतपृष्ठम- यी जीव हें तो पण कर्मवशे हुःखी छे एचो कर्मनो विपाक चित्तच्वो ते	विरोध—उलडुं आ- वर्हुं ते विलिप्त—वक्तव्यान	राव माणसपणामा पा. ४२ सुं प्रतिहार—पोकीओ;
		संरथान—चौदराज मणी आक्षा—हुक्कम एट्टे वितरागनी आक्षा साच्ची माने	शासनोर्थी—आज्ञा- लोकहुं स्वरूप विचा- रहुं ते आस—ज्ञानी, पंडित प्रतिपादन—ज्ञाहेर जीविपां अभुदपणे	ओर्थी प्रज्वलित—सळगविलो स्वाधिन—पोतानेकवजे ठावाएलुं गणिपिटक—द्वादशां- संचाद—चादिविवाद आरङ्घ—आरंभेलुं,

?१६

आकारामा खाच—खाचायेऱय रौद्रपृष्ठ—कठोरपरि-	सिथर—कायम प्रतीती—दिशास आगामी—आवता, भविष्यना	कुपतुल्यपणामा—ख- राव माणसपणामा पा. ४२ सुं प्रतिहार—पोकीओ;	तिरोध—रोकामण लिस—खारेली आस्वाद—चाखवृं माझ—विशेष जाणना र मादिरापान—दारुपीचो	दरवान पा. ४१ सुं प्रतिक्षिप्त=नहाँ ह- स्वाधिन—पोतानेकवजे पारित्र्यपण—भगवं सामग्री—तेयारी
प्रतिधि संविभाग— मुनिने दान उपासना--सेचा पा. ४० सुं मुण—भोला वेहर्य—एक जातवृं भासा—हुक्कम एट्टे वितरागनी आक्षा साच्ची माने	विपाक—अनंतपृष्ठम- यी जीव हें तो पण कर्मवशे हुःखी छे एचो कर्मनो विपाक चित्तच्वो ते संरथान—चौदराज मणी आक्षा—हुक्कम एट्टे वितरागनी आक्षा साच्ची माने	विरोध—उलडुं आ- वर्हुं ते विलिप्त—वक्तव्यान	शासनोर्थी—आज्ञा- लोकहुं स्वरूप विचा- रहुं ते आस—ज्ञानी, पंडित प्रतिपादन—ज्ञाहेर जीविपां अभुदपणे	ओर्थी प्रज्वलित—सळगविलो स्वाधिन—पोतानेकवजे ठावाएलुं गणिपिटक—द्वादशां- संचाद—चादिविवाद आरङ्घ—आरंभेलुं,

योग्य नहि करता	देवासन-नेतरमुं आ- योग्य शनिंय-भट्टचणा,	देला आठनृचकपदेश सन आळरनी=पीतक्का हरकत	चिन्हनवाक्का=नीशानी वाक्का वट=वडो मुंग=पल्ला निचन्ना=नया निरमार=चिन्ना चापिन भएळी=गो- काएळी, दोपित ग- एळी	निश्चल-हाले चाले नहीं एवो परिचार=समुद्राय, स- मुह
योग्य नहि करता	देवासन-नेतरमुं आ- योग्य शनिंय-भट्टचणा,	देला आठनृचकपदेश सन आळरनी=पीतक्का हरकत	चिन्हनवाक्का=नीशानी वाक्का वट=वडो लांडनवाक्का=चिन्ह-इ-	परिचार=समुद्राय, स- मुह
योग्य नहि करता	देवासन-नेतरमुं आ- योग्य शनिंय-भट्टचणा,	देला आठनृचकपदेश सन आळरनी=पीतक्का हरकत	मुंग=पल्ला निचन्ना=नया निरमार=चिन्ना चापिन भएळी=गो- काएळी, दोपित ग- एळी	पा. ४६ मुं. टुप्पमो-चक्कडो बट्टक्कनां-चडक्काइना सद्वांग=मोघरी नागडुट्टु=एकजातमुं- शाड
योग्य नहि करता	देवासन-नेतरमुं आ- योग्य शनिंय-भट्टचणा,	देला आठनृचकपदेश सन आळरनी=पीतक्का हरकत	मुंग=पल्ला निचन्ना=नया निरमार=चिन्ना चापिन भएळी=गो- काएळी, दोपित ग- एळी	पा. ४६ मुं. अच्छो-चक्कडो अच्छो-वोडा आमियोगिक-सेवक अंतरिन-अंतरवाक्का
योग्य नहि करता	देवासन-नेतरमुं आ- योग्य शनिंय-भट्टचणा,	देला आठनृचकपदेश सन आळरनी=पीतक्का हरकत	मुंग=पल्ला निचन्ना=नया निरमार=चिन्ना चापिन भएळी=गो- काएळी, दोपित ग- एळी	परिचारित-वेराएळा अच्छि-इद; मर्यादा कांड़धी-भागरी विषक्त-भाग पडेला पा. ४७ मुं.

मेषासुख—वेदाना जेवा

पा. ५२ मु.

चादरापि—देखाय हे-

श्रेणीओ—हारो

संहरण—हरण करतुं

संज्ञामेदे—नामना भे-

दथी

शीलप—हुकर, कळा

पा. ५३ मु.

नापित—हजाम

पा. ५४ मु.

विदिशाओ—बुणा

पर्युक्तआसने—पलांडी

बाढ़ने

धूपघटी—धूपयाणु

वालुका—रेती

देवायतन—देवल, दे-

वक्को

संचार—जना आवना

श्रेणीओ—हारो

राट्—देवा

कूट—शिखर

वज्रपय—वज्रना

जगति—वेराचा आ-

गल रहेलो ओटलो

पा. ५० मु.

क्रोडास्थान—समवानं

ठेकाणा

वेदोका—चोतरो

पा. ५१ मु.

रौप्य—रूपानुं

प्रासादो—महेलो, दे-

वर्षाहिं

शिलापय—पत्थरनो

त्रिलिङ्गा—शिखर

मेषवाला—तरेटी

दूर—बहेकोयु

निकस्वर—स्वीकेलाँ

पा. ४८ मु.

आत्मरासको—देह र-

क्षण करनारा

परवरेली—वेराएली

स्पर्श कर्या—अडक्या

विकांभ—पहोळाइ

तट—किनारो, कांठो

पा. ४९ मु.

मासादो—महेलो, दे-

वर्षाहिं

स्त्रूप—यूम, चोतरो

दिव्य—देवता ह

वापिकाओ—वाचो

मुखवाला

पा. ५६ मु.

उचानो—चमीचाओ

शाली—शालर

विपूषित—शाणगारेला

आटानिकउत्सव—अ-

देवचन्द्रदक—आराम

लेवानो मंडप

पर्युक्तआसने—पलांडी

पा. ५७ मु.

कर्पशूमि—असि, मासि

ने कसीना अववहार-

वाक्को क्षेत्र

मिश्रित—मकेलुं

मेषासुख—वेदाना जेवा

मुखवाला

दयमुख—वोइता जेवा

मुखवाला

पा. ५५ मु.

वन्धु विकंभ—गोळ

आकारनो व्यास

अंजन—में श

देवचन्द्रदक—आराम

लेवानो मंडप

पर्युक्तआसने—पलांडी

बाढ़ने

पा. ५८ मु.

विदिशाओ—बुणा

शुक्लकण—द्विपुं नाम

आदर्शमुख—आरिसा-

ना जेवा मुखवाला

अंतरद्विपुं नाम

प्राचीन-जैकटीनो राज मंडीर-भूर्णा रामादि-राजा नि- नान्य-ओजागांधीदे- उत्तराधी-नगरेयां नगर-बोद्धु, सप- वंश-भानो	पर्कीण-डेवताइ-प्रजावर्ग अधिगोन्य-सेवक स- सेवेद्वय-सातावेद्वय राजा देव पा. ५०. मं.	पृथक-वेथी नव सदेद्वय-सातावेद्वय असदेद्वय-आचाता वेद्वयी गमनागमन-जवुं आ	पृथक-समस्त त्रसनाई-बैद्वराज- लोकपां जेटका भा- गमां वसनीयो रहेला हेतेद्वयी जगा पर्वते-हेद्वय वेद्वय-चरक-वाहाओ परिवाजको- संन्या- प्रगाय-पहिया; परा- क्रम	समग्र-समस्त त्रसनाई-बैद्वराज- लोकपां जेटका भा- गमां वसनीयो रहेला हेतेद्वयी जगा पर्वते-हेद्वय वेद्वय-चरक-वाहाओ परिवाजको- संन्या- प्रगाय-पहिया; परा- क्रम	समग्र-समस्त त्रसनाई-बैद्वराज- लोकपां जेटका भा- गमां वसनीयो रहेला हेतेद्वयी जगा पर्वते-हेद्वय वेद्वय-चरक-वाहाओ परिवाजको- संन्या- प्रगाय-पहिया; परा- क्रम
भृष्णिद्वय-पोर्णेन राजा पूर्णिमा-गानगोर; गुरु- पारापार-नगराना	पृथक-वेथी नव सदेद्वय-सातावेद्वय असदेद्वय-आचाता वेद्वयी गमनागमन-जवुं आ	उत्तर उत्तर-पनीता; गुरुराग-हेनेः; शाग नोह-गाननशासोऽपाल	संस्कृट-गाडा अनुराग-हेनेः; शाग परिचार-उंडो विचार	पा. ६०. मं. उत्तर उत्तर-पनीता; गुरुराग-हेनेः; शाग नोह-गाननशासोऽपाल	पा. ६१. मं. उत्तर-तान नानो संस्कृट-गाडा अनुराग-हेनेः; शाग परिचार-उंडो विचार
प्राचीन-जैकटीनो राज मंडीर-भूर्णा रामादि-राजा नि- नान्य-ओजागांधीदे- उत्तराधी-नगरेयां नगर-बोद्धु, सप- वंश-भानो	पृथक-वेथी नव सदेद्वय-सातावेद्वय असदेद्वय-आचाता वेद्वयी गमनागमन-जवुं आ	उत्तर उत्तर-पनीता; गुरुराग-हेनेः; शाग नोह-गाननशासोऽपाल	संस्कृट-गाडा अनुराग-हेनेः; शाग परिचार-उंडो विचार	पा. ६०. मं. उत्तर उत्तर-पनीता; गुरुराग-हेनेः; शाग नोह-गाननशासोऽपाल	पा. ६१. मं. उत्तर-तान नानो संस्कृट-गाडा अनुराग-हेनेः; शाग परिचार-उंडो विचार

आपसि-दुःख सप्तराते-कसावे तंत्र-देवपयोग निकितसा-रोगनी प- रोशा	शीर्धील-नरम, नवला कामीनीओ-सीओ न्यासकरो-सुको अपकार-कोइने तु- कशान करचुं सप्तरा-स्फुट त्वरा-स्फुट	का ( यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, अने समाधी) संजीवनी-जीवाडनारी सप्तराम-मेळाप सचराचर-जड अने	कर्त्तव्य-अ-करवायेऽय सत्तिकारा-शुभकिया प्रकार्य-पुद्गङ्गभा- वत्तुंजयादिक-मोतने जीतनारा बिगेरे	योर=चिह्नमणो; भ- यंकर ओर्नीय=वेदोक्त क- र्म पात्रतारो; वास्तव रुपी=कीडो
ग्राम-करवी-आठवा- सप्तराते-कसावे तंत्र-देवपयोग निकितसा-रोगनी प- रोशा	ग्रीष्मील-नरम, नवला कामीनीओ-सीओ न्यासकरो-सुको अपकार-कोइने तु- कशान करचुं सप्तराम-मेळाप सचराचर-जड अने	कार्य-अ-करवायेऽय सत्तिकारा-शुभकिया प्रकार्य-पुद्गङ्गभा- वत्तुंजयादिक-मोतने जीतनारा बिगेरे	वत्तुंजयादिक-मोतने जीतनारा बिगेरे	वालग्र=वालनाअग्र भाग जेटली
विक्रय-नाश संहार-नाश दाक्षिण्यता-पश्चपात दावातढ-अमि तिरपाय-रोग रहित	उपेद्धादि-इंद्रना हाथ नीचेना देवो बिगेरे शरणेच्छु-शरणने इ- च्छतारा	चेतन चतुरंग-चारपक्कार- चतुरंग चेतन	संचित-एकहुं संचित-एकहुं अरण्यमां-जगलमां पा. ६४ मुं	प्रायः=वर्ण करने वाशित=हुःखी उण-तापनी; गरमीनी अनुसारे-प्रमाणे वेरणशारीर=छुटाढुटा
भृकुटीयी-भमरवडे अट्टांग-आठ अंगवा- कंचना करवी-उगाउ	पा. ६२ मुं. पा. ६३ मुं.	निष्कंटक-दुष्पतन र- विरह-वियोग, छुटा पड़तुं	हित पा. ६५ मुं	वटीयंत्रो-काचनीअ- उथी घडी लेउं यंत्र

उत्तरार्थी- नानापो-	नी कुडायां तळवृं हेडी	अचाँचिन-जवा	ग्रास-भक्षण
शास्त्रीय-हेनेडी	कुंभियाक--नीपाडा	वर्णणा--वसाहु	विडंबना-नडतर
इनको...पौरी	मांचामण पकवनानी	अवृद्धा- हालत	तिंचंधन-कारण
वन्दुहट्टन- वन्दुनीकाटी	पेड नारकी बोने प-	भोजय-खाचायेन्य	दृश्य-हेशन
एड. मगाई	कुडवाहुं द्यान	परंपरानो-सनातिनो	संपत्ति-दोक्तन
शारग-विकाळ, भ-	इत्तानीत- भीना	नृण्यायञ्जे-भूकोथा-	उत्कर्प-चहती
नंकर	ब्यथा-दुःख	यक्के	अपकर्प-ओळाग, प-
विट्टो-रेन्डी	जन्नौका-जलो	निरकर्द- रीचोवनी	डीन-गरीब
गान्धरव-तर गारना	पूर्णि का- पार्टी	श्रुया-भूख	कट्टना-दुःख
तेगों पांडांगालों	मुट- केप	पिपासा-तरस	पिपासा-तरस
आर्किलन- भट्टे	वनीभृत-नहर	अमग-न खमाय एनी	निवास-रहेताण
दोडपार्गु- चाल्हु-	द्याङ्की-चासण; याकी	खेचर-आकाशमां चा-	जश-शडपण
पूर्ण	दगर-यक्केडा	अदृश्य-न देखायतेचा	लनारा
पाठु-नवोत्तोनक-	शीतोला-डंडा उंना	ताडनोयी- मारपी	शुक-पौष्ट
पार्चीन-जुना	विराचायक्के-नाशपा-	कुपोत-कुतुर	वाल्यनय-वसपण
			गोवन्यनय-तुनानी

रनिनिलास-काम भोग  
वृद्धावस्था-वडपण

पा. ६८ मुं.  
शीशुवय-वचपण  
मातुमुखी-माना में  
सामुं जोहने रहेतारो

अंतमुख-अंतर दृष्टि-  
जोनारो  
विहल-वाचरो, आ-  
कलो

अमर्प-क्रोध, रीस  
साम्राज्य-शोभा  
ज्ञानर  
शुत-जुगार  
जारपण-लंपटपण

पौह-अङ्गान  
अंध-आंधाठा  
पात्र-वासण  
शमिलायुग-शमिल  
मांडपांड-पराणे  
प्राप्त अप्लं-पेळवेलं  
परोक्ष-नजरे न पढे

तेलुं  
यावज्जीवित-जीवे

त्यां सुथो  
जबलित-वक्लती  
उमिओ-जवाला  
विक्षिण-वक्लतान

१२०

मुकुत-पुन्य  
संपादन करनारा-मे-

कवनारा  
प्रतिकार-उपाय  
शल्य-साल

अने धुसरे  
मांडपांड-पराणे  
कचवाया-वीजवाया;  
दुःखी थया  
उतरोत्तर-मोटा मोटा

मातुपत्न-मतुपत्नुं  
परोक्ष-नजरे न पढे  
तेलुं  
अमर्प-क्रोध, रीस  
साम्राज्य-शोभा

अंकरप-न हाले एवां  
संधिवंध-सांधानो  
एलुं  
विलाप-शोच

पातुं ७० मुं  
हतभाग्य-कमनसीव  
बांधो  
शीघ्रिल-हीलो, नरम

सर्वस्व-वधी चीजो  
दीनद्वित्ति-गरीवाइयी

गदगद स्वरे-गव्वगा-  
ला कंठे

स्वस्थपणुं-शांतपणुं  
देवशुब्रन-विमान  
च्यवच्युं-छोडी नीक-  
ल्लुं

चिन्ह-नीकानी  
गलानि पामे-करमाइ  
पातुं ६९ मुं  
उपवन-वगीचो, वाग

अंकरप-नेट्टुं  
आलिंगन-भेट्टुं  
पुर्वोक्त-उपर कहेलां  
जाय

हतभाग्य-कमनसीव  
वियोग पामेलां-जुदां  
पडेलों पडेलों

कंपायमान-हालतो  
अकस्मात-एकाएक

वाटा-भारे  
कुपथ्य-नहि खावा

योग्य चीज  
वाध-अडचण  
अपड-मूर्ख

परंप-धूजारो  
पुर्वोक्त-उपर कहेलां

आलिंगन-भेट्टुं  
पुर्वोक्त-उपर कहेलां

वियोग पामेलां-जुदां  
पडेलों पडेलों

१२०

संता-सौ	आण पकड़नुं गंक-पडा जेना आ- कारनो नहरे पढार्थ विक्षणपूर्ण- साधारणो-प्रश्नापणे गमिसा-गाला पातिगात-एक ना- नहुं कलावृभ प्रादृचि-अपविच भाद्याहन-चाचार्ह गरमी-गरमी गनि-हामकोजा गीमय-अंडी, दुग्ध- गाँवी	पा. ७१ मुं. प्रतिपादन केरो-स- मजावेलो अउ-अजाण अनाहियपूर्ण-आ- त्याखी रहितपूर्ण अधिक-वयारे पिय-वहानुं अन्यत्व-उदापूर्ण तुंगोका-तुंवडी निवारी-दूर करो तरंग-योजा पदार-या तिरंगापणे-निळो- बेद्युदि-उद्युपणानी	पा. ७२ मुं. श्रीर-दृष्ट इशु-शेजडी बृतादि-यी विमेर पा. ७२ मुं. वलेपन करेलो-बोप- देलो	गंडिपृद्द-मंडोऽा स्वादिष्ट-मीटुं शीर-दृष्ट इशु-शेजडी बृतादि-यी विमेर पा. ७२ मुं. वलेपन करेलो-बोप- देलो
पदांकिए- गुरु-महिन	अण पकड़नुं गंक-पडा जेना आ- कारनो नहरे पढार्थ विक्षणपूर्ण- साधारणो-प्रश्नापणे गमिसा-गाला पातिगात-एक ना- नहुं कलावृभ प्रादृचि-अपविच भाद्याहन-चाचार्ह गरमी-गरमी गनि-हामकोजा गीमय-अंडी, दुग्ध- गाँवी	एकटुं: थरुं संकल्प-विचाई विलास-मेज रघिर-लोकी तिरंगापणे-निळो- बेद्युदि-उद्युपणानी	एकटुं: थरुं संकल्प-विचाई विलास-मेज तिरंगल-तंचोळ आस्तादान-चावरुं जुणसा-दुरंचा लतः:-गोतानी मेजे	यशकद्दम-कपुरु, अ- गर, कस्तुरी कंसर अने मुखदुरुं निलेपन तांचुल-तंचोळ आस्तादान-चावरुं जुणसा-दुरंचा लतः:-गोतानी मेजे
विदार्द-भागासारां,	विदार्द-भागासारां,	कर्म-	कुपि-मीडा	अभुविस्थान-आपति-

<p>मालिले—चोलीते थो-</p> <p>पलो</p> <p>कलाल—दारुनालो</p> <p>स्त्रिका—याटी</p> <p>गतांगतिक—गएला-</p> <p>नो पुँठे जनार</p> <p>फलोतपादक—फळ उ-</p> <p>त्पव करनार</p> <p>उद्दार—मोक्ष;</p> <p>उत्पत्तिस्थान—उत्पन्न</p> <p>थवातुं ठेकाणुं</p> <p>आश्रव—जे थकी कर्म</p> <p>जंतुओने—जीवोने</p> <p>घोग—जोग</p>	<p>आश्रवे—उत्पन्न करे</p> <p>चासित—भावीत</p> <p>आकांति—जीताण्डुं</p> <p>पकडाएँ</p> <p>आश्रित—आधीन; यरा</p> <p>उपार्जन—उत्पन्न</p> <p>हेठुभूत—कारण भूत</p> <p>गोपवेळुं—रक्षण करेलुं</p> <p>असत्—खराच; माठा</p> <p>आरंभी—हिसक</p> <p>विघ्न—अड्हचण</p> <p>निनहव—असर् वात</p> <p>आवे ते</p> <p>पिशृनता—चाई</p>	<p>पा. ७३ मं.</p> <p>विनाली</p> <p>सहैच—शाता वेदनी</p> <p>आकंदन—ईडुं</p> <p>उपार्जन—उत्पन्न</p> <p>हेठुभूत—कारण भूत</p> <p>उन्मार्ग—खोटे मार्ग</p> <p>अनर्थ—उंधोर्थ; ऊ-</p> <p>आस—कंटाळो, ऊळम</p> <p>शोच—अफसोस</p> <p>हृदन—रोहुं</p> <p>स्थापनार</p> <p>लीनता</p>	<p>उदयधी—उत्तवाथी</p> <p>तीव—गरम; आकरा</p> <p>उक्ति—वाणी</p> <p>उत्कंठा—ईच्छा; दैशा</p> <p>आकर्पुं—हेंच्वुं</p> <p>असूया—अदेखाइ</p> <p>प्रकृति—स्वभाव</p> <p>अकुशल—माटुं, खराच</p> <p>आस—कंटाळो, ऊळम</p> <p>शोच—अफसोस</p> <p>आग्रह—हृठ</p> <p>आसक्ति—अति स्नेह,</p> <p>भ्रष्ट</p>	<p>तिरस्कार—धिकार</p> <p>इण्ठी—अदेखाइ</p> <p>लोडुपता—लालचुपण्युं</p> <p>अतिवक्रता—धणीतो—</p> <p>अनीज्याळु—अदेखाइ</p> <p>न करवानो</p> <p>मंद—ओळे</p> <p>अवकाचाचार—सरळ री-</p> <p>तभाते</p> <p>स्पर्श—अडकवुं</p> <p>चुंचतादि—वची कर-</p> <p>बी विनेरे</p> <p>अनंगसेवा—कांपक्रीडा</p>	<p>१२९</p>
--	--	---	---	--	------------

यु-आको	पा. ७५ यु.	प्रयत्न-आको वीर-आको	अनुद्वाद-कृपा, सहाय कानेन-ग्रा-चिपानां ग्रा	प्रयोग—अन्नपाएश प्रानेनचंडि-नकल,	उपयात-तुकमान, नाश	सपाधि-जांति आश्रो=सधानको
प्रिच्छ-प्रतिशय, अ- टन्त्रण	यम	यम	यम	नामण करवुँ-वाकाकरवुँ दांभिक पर्ण—कपटीपर्ण उन्मागो—सोडि रसो	(नीशस्थानक) स्पर्शला=आचेन्ता अन्नशा—अपपान	गर्व=अहंकार शाश्वत-योहा वल- तपां नाश पापे तेवा संनर=भानता कर्त्तने
गारु-द	देवता- उपदेश	प्रयत्न-द्वयनु प्रयत्ना-द्वयनु	प्रयत्नी=पांचनं आदमप्रयत्नमा—पोतानी	कोतक-नवाइ, अ- जायमी	जनार	गर्व=अहंकार शाश्वत-योहा वल- तपां नाश पापे तेवा संनर=भानता कर्त्तने
प्रयत्न-द्वयने- यमातिराजो-नीरं हु-	द्वयने	द्वयने	द्वयने-प्रथम यान	स्तुति	प्रिय-वहावुँ	प्रियाज-नाश
प्रयत्न-द्वयने- यमातिराजो-नीरं हु-	द्वयने	द्वयने	द्वयने-प्रथम यान	अद्वयचर्य—कुरील कनिष्ठ—स्वराज, अ- मध्य	प्रियाज-नाश	प्रियोण—अठकार योजो—जोड्नो
प्रयत्न-द्वयने- यमातिराजो-नीरं हु-	द्वयने	द्वयने	द्वयने-प्रथम यान	आकेश-गृहसो	पातु ७५ यु	उचित=नवित, लायह पातुं ७६ मं
प्रयत्न-द्वयने- यमातिराजो-नीरं हु-	द्वयने	द्वयने	द्वयने-प्रथम यान	सोभाय—भाग- सांनि—भपा	प्रण=दान, आपु	सांप—वश, तापे

११२ साधनी-कवने करनी

द्विप्रतायी=डरेली

शालत

स्नेह-ची काश

बद्द=नशाली, चो-  
टेली

गतीकां=पाणीना चारा-  
छिद्दो-काणां

रंथन=रोकनुं

प्रेतना=पेसवुं

पारंगतोमां-पारपामेला

स्वेदाविंदु=परसेवादुं

द्विचंसदेष=आजीवि-

निजरणा-लेवरवं

सकापा=मोक्षनी इ-

कहने करनी

कहनी इ-

परिप्रवता-पुरेपुरं

पाकी जवुं

स्वयमेव=पोतातीमेवे

प्रदीप=सळोला

अनशन=आहारनी

वैयाहिय-वैयावच

त्वाध्याय-सङ्गायःऽयान

व्युत्सर्प=काउसग

शुभायान=सारिंह्यान

उत्कर्ष पामे छे-व-

रसतयाग=विग्रहतयाग

दुर्जर-दुखे करने

शय थाय एवं

फायर्केलेश=कौयान

अकागा=मोक्षनी इ-

न्नां रहित

कहने करनी सं-

कोचवुं

वाहातप-उपलो,

द्रव्यथी

प्रायश्चित्त=करेला अ-

पराधनी शुद्धि

शारिरिक-शारीरसं-

वर्षी

उपाख्यन-उत्पन्न

शारिरिक-परिस्त-

विभवतसल-दुनिया

मृदुता-कामलता, मा-

वंध करेलो

प्रचंड-आकाश

आचान्दुना ; अटक्या

वगरना

आचान्दुना

आश्वसन-सुख

आच्चित्य-अणधायों

विभवतसल-दुनिया

तुं भलं करनार

तात्वीकपो-तत्त्वथी

तत्त्वार्थ-तत्त्वसंबंधी

मतलव

पराधीन-परवशा

मोमध-गायहोमवानी

ननो हयग

पा. ७८ बुं.

वात्सलयने-वत्तक्तता।

आश्वासन-उत्पन्न

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

आश्वसन-दुनिया

निषप्रिग्रहिता-परि-

यश

नरपेत-मनुष्य द्वौप-	सर्वेन्द्रन-वर्षी वन्मु- अन्यपात्र-जरापण	कल्पित-हेश पामेलों याग-बड़ी हेवने अ- पण करते.	आपणु नो चर रोगी होवा- यी अथवा परी ग- पाथी पोताना दिय- रनो संग करी अ- यवा सासरीयांनी रजाभी धणिना गो-	विद्वन्नेना-दोंग, दुःख भस्मरहे-राहवेड अंगराय-शरीरे लेप कोपिन-लंगोटी भश्य-खानायोग्य अभक्ष्य-तहीं लावा
भरपेत-गोडो दो- सवानो यश	अपण-गुनो गाय-श्राव	होप-आविते चल्लदिन नो नाश करनार	आपवं ते वापी-चाव फूप-कुवो	योग्य पेय-पीनायोग्य अपेद-तहींपीचायोग्य गम्य-जन्माय, जनाय सप्तज्ञाय एवा अगम्य-त जनाय सप्तज्ञाय एवा
सवानो यश- माणीयत-मणीश्रो- नो नाश करनार	गाय-श्राव-जाइगीनी	मजल	संग करी दीक्को पिठओ-वापदादा ओ हुस-संसोप घृनयोनि=वीतीयोनी	जणे ते सैत्रामणि-एकना- तनो यज्ञ सप्ततनु-होप आपानि आ-भाफतो
वानो यश- माणीयत-उत्तरी	चोयो आध्या-संन्यास म्यांगीदक-मीनांयी	सुरां-कृष्ट	हुस-संसोप वर्दी वर्दी	सप्ततनु-होप इन्हे-पता योग्य पदार्थ
दमनान-मोक्ष	आपदय-गर्वने पा- यो	निदृपता-दोपरहित निदृपता-नीतीन	पर्णु	रिष्ट-गाय, उपदय भ-पीत-होला

आराधनार्थी—आच-

दवाधी; सेववार्यी  
कृपि—सेवी

लाघवता—इलकाश;  
पाठन—मुख, परिप्रे-  
णीता

दीर्घ—लंडु  
कर्याचिते=कोइकवार  
धर्मकथक—धर्म कहेनार  
जोगधाइ=मेकाप, अ-  
त्रुकुल आचे तेवो

चोक्हस वरवत  
श्रवण—सांभळु  
वोधिरत्न=समाफित  
भाव—वनाव

परिप्रणण=रेवडुँ

भटक्कु  
बुश्वल परावर्तन—अ-

नेताकाल चक्र  
सीमाडा=सरदद  
सीदाइने=दुँवे

पा. ८१ मुं  
अरण्यचिते=कोइकवार  
ध्यास—जंगल  
व्याप—भरेला

परासा=यथायोज्य  
पर्याप्तिपूरी करे ते

आलाप=चातचीत  
संईर्णी=मनवाला

शीतोष्ण=ठाडीउनी  
दीक्षिय=केंद्रियवाका

पा. ८२ मुं.

चलार्दिय=चारिंदि-  
मुश्वल परावर्तन—अ-

नेताकाल चक्र  
सीमाडा=सरदद  
सीदाइने=दुँवे

पा. ८१ मुं  
अरण्य=जंगल  
व्याप—भरेला

संचित—सजीव  
आचित=जीवविनाटुं  
संचिताचित=सजीव

पराष्ट्राति=पाछाफरवुं  
वदलाटुं

नयय—नाश  
श्रोद्य—सिधरभाव  
कीटीरुप—पीखीते की

पा. ८४ मुं

पटदव्य=हड्डव्य  
मदेश=खेंधनी साथे  
संवेष्यालो मृद्घम नि

विभाऊय भाग  
समूह=जट्ठो  
अचेतन=जड

अकर्ता=क्रिया नक-  
रनारा।

उत्पाद—उत्पत्त यत्तु  
नयय—नाश  
श्रोद्य—सिधरभाव

अणु—परमाणु, रजका  
संक्ष—संवंध

अद्वद—छुटो  
दीक्षिय=केंद्रियवाका

यन्म-चारीक, प्रीषं	तेष्टित-क्रियाचालुं	तदात्पकपणे-ते रूपे	योग्य	उपेशा-वेदरकारी
स्थृत-पोटो	पा. ८५ अं.	पा. ८३ अं.	आगामीकाळे-भवि-	प्रयासे-मेहनते
उत्तोत-तेज, प्रकाश	रोध-अटकावतुं	जनित-उपत्त यतां	प्रकाळमा, आवता	प्रलय-नाश. [एकर-
उपग्रह-संचय, भेकाप	स कृपायीणुं-क्रपाय	दृथ-वक्तीणाएलों	ब्रह्मतमां	अंगोकारकर-धार-
अमूर्त-अरुणी	सहितपणुं	निंजन-तेजोपय	समिध-हैपवाना ला-	कोधांध-कोवे करी
निकिय-क्रियारहित	परतंक्रता-पराधिनता	कडां	आंधका	आंधका
महस्य-प्राचलुं	स्थिति-क्राक्षमान	जन्मतरे-वीजा ज-	महापि-मोटालपि	
गति-नां	अदुभाग-रस	न्मोमा	पर्मपीडक-मध्यमेदक	
सशायकारी-पद्मदगार	कदपना-धारणा	सहोदर-भाइ	उन्मत-ताता मिजा-	
अभिशपणे-सार्ये र-	अभाव-अञ्जतपणुं	सत्त्वर-जलदी	जनो; मगलर	
हेलों	तरीओ-तरनरो	पा. ८७ अं.	विस्मय-त्रोश्य	
काळवेताओ-काळने	चतुर्वर्ण-चार वर्णां	अपकार-मुँहं, खोडं	पा. ८८ अं.	
जाणनारा	अग्रणी-मुख्य	दहन-चाळ्डुं	गलानि-दुःख	
नीर्णशपणी-जुनारु-	सावध्ययोग-पापव्या	संभार-समूह	जांगुली-झेर उतार-	
पर्णी	पय-दृथ	पय	नार	
	असेव्य-न	सेवदा-		
	पार	धान-कुतरो		

मुशील—सारा आचार	चलकल—शाइनी आल बालो	अवरोप—वाकी रहेलो उद्दोग—भय; शोक	लक्ष—लाख युद्ध—लडाइ
हानीदृष्टि—वधवट	फटाक्ष—आंखेना भ- चकारा	अक्षिम—स्वामाचिक कौटिल्यता—कपट	ग्रामजनन—ग्रामदाना माणसो
पा. ८९ मुं.	शूतकारी—कुगारीओ	अङ्ग—अणसमजु	सोह—भाव—पित्रा- चारी
नियोण—नकी	सुहद—पित्र	पा. ९१ मुं	राज्यहमा—शयरोग
निरुपाधिक—उपाधि	वंदि—भांड	आसक्त—अनुरक्त	निधनस्थान—दब्बना
रहित	धीवर—माझी	प्रायः—घणुं करीने	भंडार
प्रतिकार—उपाय	प्रवीण—हुंशीआर	वकोक्ति—वांकुं वोल्हुं	लीन—आसक्त
निरास—काढी नांखवुं	स्थलचारी—जमीनपर	सुन्वण—सोहुं	निधि—निधान, द्रव्यो
अविद्यानी—अझाननी	चालनारं	पार—छेडो	जता
कौटिल्यपायो—कपट	ग्रास—आहार; कोळी-	आलोचना—विचार;	निदृत करतुं—गाडा
उळ भेदपां	ओ	अधिग्रायक—रक्षक	हठबुं
पहुण—उगुण	उग्र—आकरी	पा. ९२ मुं	शब्ददैदितज—एकधारो
नास्तिको-पिच्याती-	वाध—अहचण	विजय—जीत	अचार
ओ	सहस—हजार	पतित—पडेला	विराकि—तयाग

पा. ९३ टुं

म निनि--ओळखाण  
ठगि--नेवी

पश्चाकड़ति--ढोर

पा. ९४ टुं

संडिला--नोड्लो  
कुलवात--कुलनो जाश  
पात--पटती  
पश्चाकड़ति--चाला अ-

चन्द्रवनी

पश्चाम--पह्ननत

नांदा--नांदपापेनवी  
आगामरोहित--पहेनत

निनानुं  
अहेनमुल--एकन

सुख

उडय--उनण्ठं

भर्ता--नहि नेवा,

नहि रुखने रुखना

डीपर--माली

योन्य

अपेय--नहि पीकायोया  
अगम्य--नहि जवा

योन्य, नहि आचरवा  
योन्य

पा. ९५ टुं

महृति--पेसारे  
जायन=जागती

चरप--चेल्हा  
गाथायात्रि--कुडवाना

इधियारि हथियारवेडे  
दुरंत--अपार, दुर छे

कलेगपां--दुःखमां  
अगाध--अपार

ग्रामने--समूहने

सर्ववा--कवे मकारे

निहित--मुकेला अय-

वा गोलेला

जामिंओ--मोजां

निरंकुश--कुटो

यदाचारी

कुडवात--कुडनो जाश  
कण्ठताळ--कानतो

श्राव्य-सांखज्ञा योन्य

दुःश्वाल्य--दुःखे क-

री सांखज्ञा योन्य

रति--सुखपां आनेद्  
स्वस्त्यपणाने--जांतप-

एने

रुचिकर--गपतो

जलभपरीओ--गणी

नी चकरी

नाविका--होडी, बहाण

पा. ०६ टुं.

आहितकारी--विन फा-

निःशक्तपणे- शकार-	छपण-दृष्यमणो	भुमुङ्ग-माझमी इच्छा-	अचाहन-योग, अ-	पति-द्वापि
हितपणे	परिचार-संवंधी	बाला	भ्यास	गुह-गुस; संताएलंड-
निकाचर-राक्षस अ-	मिळ्याभिमान-खोटो	योग-मेलाप	परम निर्दिति-योक्ष;	अचार्य-वारी यकाय
यवा चोर	गर्व	ठथाघ्र-वाय	सप्तस्तपणे कर्मयी मु-	नहीं पांतु
रोग-कवजी	अभिन-एकमेक	निर्बिणपद-मोक्षपद	कांतु	शाखतपद-मोक्ष; हमे-
उपहासय-मकरी	पितायह- दादो	स्वतः-पोतानी मेले	शा टके पांतु स्थानक	उपसगो-आफतो; उ
परिभ्रमण-सप्तस्तपणे	वारिधिमा-सपुद्दों	पूर्णिमाना-पूर्णमना	गुस-डांना, संताएला-	पद्मो
भमंतु	भमंद-अरंड	अंमद-अरंड	स्वसंवेश-पोतानी मे-	अद्भूत-आश्रयकारी
मलिनता-मेलाश	सफाटिकमणि-फटक-	तीव्र-आकरो	ले जाणी यकाय पांतु	पा. ९९ मु.
आत्माधीन-आत्माने	मणी	शालाका-शक्की	खाच-खाचा योग्य	शार-द्वारा
वश	उपाधियी-दुःख, का-	रण	ठेहा-चाटवा योग्य	निष्कंचनपण्ठ-परिग्रह
पराधीन-परंत्र	मनोघुति-मनना भा-	तद्दुपणे-तेना जेवोज़	चुप्य-दुसधा योग्य	रहितपण्ठ
तिमिरयी-अंथारायी	विश्व-दुनिया	व; परिणाम	पेय-पीवा योग्य	परीसह-समस्त प्रकार
पा. ९७ मु.	निर्दिय- दया रहित	समान-सरला	भंदार-कल्पदृश	(दुःख) सहन करतुं ते
विस्पय-आश्रय	शुक्ति-मोक्ष	कोंयाध-गुस्साथी	माळा-द्वार	माला-द्वार

निःशक्तपणे- शकार-	छपण-दृष्यमणो	भुमुङ्ग-माझमी इच्छा-	अचाहन-योग, अ-	पति-द्वापि
हितपणे	परिचार-संवंधी	बाला	भ्यास	गुह-गुस; संताएलंड-
निकाचर-राक्षस अ-	मिळ्याभिमान-खोटो	योग-मेलाप	परम निर्दिति-योक्ष;	अचार्य-वारी यकाय
यवा चोर	गर्व	ठथाघ्र-वाय	सप्तस्तपणे कर्मयी मु-	नहीं पांतु
रोग-कवजी	अभिन-एकमेक	निर्बिणपद-मोक्षपद	कांतु	शाखतपद-मोक्ष; हमे-
उपहासय-मकरी	पितायह- दादो	स्वतः-पोतानी मेले	शा टके पांतु स्थानक	उपसगो-आफतो; उ
परिभ्रमण-सप्तस्तपणे	वारिधिमा-सपुद्दों	पूर्णिमाना-पूर्णमना	गुस-डांना, संताएला-	पद्मो
भमंतु	भमंद-अरंड	अंमद-अरंड	स्वसंवेश-पोतानी मे-	अद्भूत-आश्रयकारी
मलिनता-मेलाश	सफाटिकमणि-फटक-	तीव्र-आकरो	ले जाणी यकाय पांतु	पा. ९९ मु.
आत्माधीन-आत्माने	मणी	शालाका-शक्की	खाच-खाचा योग्य	शार-द्वारा
वश	उपाधियी-दुःख, का-	रण	ठेहा-चाटवा योग्य	निष्कंचनपण्ठ-परिग्रह
पराधीन-परंत्र	मनोघुति-मनना भा-	तद्दुपणे-तेना जेवोज़	चुप्य-दुसधा योग्य	रहितपण्ठ
तिमिरयी-अंथारायी	विश्व-दुनिया	व; परिणाम	पेय-पीवा योग्य	परीसह-समस्त प्रकार
पा. ९७ मु.	निर्दिय- दया रहित	समान-सरला	भंदार-कल्पदृश	(दुःख) सहन करतुं ते
विस्पय-आश्रय	शुक्ति-मोक्ष	कोंयाध-गुस्साथी	माळा-द्वार	माला-द्वार



तेद्-भंगः नाश पा. १०१ बुं	सहवानोऽकाल अमृद्द=पंडित श्वावा--वरवाण वासित--वासनावाको यज्ञोऽहाड़ुमांना	पदासन--वैते पग पग उपर पग चढावी तद्वीर्यां साथङ्गपर राखी वैसवादुंआसन उत्संगमां=खोलामां	सर्वात्मपणे-सर्वार्थे; सर्वया या वज्जीवित-जीवि त्यां कुधी उपासक=पुजनार;	स्वामी--कृष्णी शब्द=महादुं धान--हृतचं विवर-पोलाण; दर विचित्र-नवाह जेवा दाहजवर-शरीर; वज्ञ- त्रा यथा तेवो ताव
निष्टिति--दूर रहेदुं ग्रंथीआ-गांठो यज्ञोऽहाड़ुमांना	माधुकरीटिसि--भमरा जेवी आजीविका मुनिचयोऽमुनिरुंभि विपर्यपणुं--वदलुं वदलो	माधुकरीटिसि--भमरा जेवी आजीविका मुनिचयोऽमुनिरुंभि विपर्यपणुं--वदलुं वदलो	मुकिगृहनी=पोक्खरपी घरनी चयो=आचरणः क्रिया विश्रुतमा=विजळीना संयोग=मेळप	दिल्ल--कठोल, वे दा- लवालुं पुष्पित--फुलधीत्रासीत व्यतीत--थइ गएला वियोग=जुहापदुं संभवत--थांभलाजेवो पा. १०२ मुं
वाधकारी--हरकतक- रनारा; दुःखदायी प्रतिकार-उपाय भवस्थितिने-भवोर-	सावच्य-पापवयापार संक्ष-वांध; खमो	सावच्य-पापवयापार वापमो-वल्लदो	मिया=ल्ली रांक-गरीब	मशपान-दारुपीनो शौच-पवित्रता

प्रियीति-नाथ तापदं	डी नारें दे	नवा अंकुर	जनगारी-वरचार	मुग्ध-श्रुतं
उद्घोटि-उद्यन्त या- गेड़े	प्रवृत्तिन-वृद्धता लुड़ा-लालकुरु	तचा-आळ गिरिकणिका-विला-	मिनाना आगारी-वरचारी	रहस्य-झानीवान
पा. २०३ मं	द्वियां-लाकड़ी भुक्त-किर्ण	डीना दोप विलड़-कल्लीओ	सुक्तने-पुण्यने उविच्छेद-नाककान	कृष्टचेसु-कुठां सत के दृहनावेज
मिया-नामी अराहत-निंदा	गोगित-लोही वै-वाह-पार्वतीपुनर	गुड़ची-नाको पलंयक-पालकुरु, पालो	असनेय-चोरी न करवी आदि आंग छेदवाँ	अनुगा-र-रजा
द्वानि-लाल भी उपग-नीटि	रोग दार-दिवद	मुकुर-लील नपन नोना-उलटी कोइळा	प्रहार-मार आपात-अजाण्या निरक्षयने-स्वतं- त्रपणे	लंघन-ओक्कावुं प्रतिना-सरत्ता, प- कती
भागनि-हुन पारन-भागन-	पा. २०४ मं	रोध- उपहेश-उपहेर दारि-दारि	पिल्याउपहेश-बोटो रोध-आटकाव	पा. २०५ मं
पारार-नार उपरन लोटि-उटो-	पा. २०५ मं	सहमा-गार विचार पूर्णपा-पानित संयाइ-मीना इ	सहमा-गमन- एक्कदम अञ्जनहयान-कुठं आता-रक्षण करनार	आपरियाहिता गमन- अणपरणेलो के कुं- चारी साथे कामधोग इत्तर-पोडा काळ

**पाटे शखेली** तिन्हीं-मध्य; वचला उलंगत करतुं-ओं-  
तीय--आकरी अनुराग-इच्छा  
अंगक्रीडा=कपोग प्रपाणातिक्रम--प्रपाण  
ओळंगी जरुं दीपद- ने पगवाळा  
चतुपद- चोपां रुप्य--रुपु  
ताम्रादि=तांचा विगेरे धारुना  
भाजन=चासण एकत्र--एकठा  
सृष्टि=यादी

**पाटे शखेली** तिन्हीं-मध्य; वचला उलंगत करतुं-ओं-  
तीय--आकरी अनुराग-इच्छा  
अंगक्रीडा=कपोग प्रपाणातिक्रम--प्रपाण  
ओळंगी जरुं दीपद- ने पगवाळा  
चतुपद- चोपां रुप्य--रुपु  
ताम्रादि=तांचा विगेरे धारुना  
भाजन=चासण एकत्र--एकठा  
सृष्टि=यादी

**माजार-बिलाडो** भाटक-भाटु सफोट-खोद काम,  
ब्यसन-टेव निर्लिंगन-खासी क-  
रवी सरःशोप-तल्लाच सु-  
हुळ्ह-हल्लकी ओपधी-वनस्पति  
अपकन्व- काची दुपरन्व-काची पाकी;  
कांडक शोकेलुं कांड-  
क आण शोकेलुं  
सर-तुकशानकारक;  
पापवाळा कम्पादानसप-कम्पह-

**न थाव एवी निशा-** नीओ  
दुष्पणिशान-भाटुं-  
इयान अनादर-आदरमान  
न आपदुं  
अतुपस्थापन-विस्म-  
रण, भूलीजहुं  
मेष्य-मोकलवा योग्य  
प्रयोग-प्रेरवुं  
अनायन-अणाववाने  
प्रक्षेप-नांखवुं, मुकुं  
शब्दानुपात-खांखा-  
रो करवो

रामानुजदास-न्यायार्थी	उडगनि-इच गनि	अनुरागी-रामदासा हिंनोपदेश-कायदा-	दास्त्वविनोदपां-हस- तां रपतां	काञ्चकमे-कन्वन गा- ङ्गायामं
पुरुषदा-ल्लया	पुरुषदा-ल्लया	कारीं चौथ तत्त्वदीर्घीं- तत्त्वनो जा-	पा. १०८	परेक्षे-यैहेतत कर्त्तव्ये
मध्यार्थी-भृत्या	मध्यार्थी-भृत्या	णनार् के देखाडतार	नीर-कैर्यवान	हेशन-दुःखी
न्यायदेव-क्षमात्	न्यायदेव-क्षमात्	आमक-शीन	अग्र-आगळ पडता	उजमाळ-तत्त्वर
गा. १०३	गा. १०३	कापामुक-पोगपाः	समिनिवंता-सम्बद्धे-	निःसार-आसार
रामार्थ-वांहन, गि- काळ	रामार्थ-वांहन, गि- काळ	नीन	द्वांचित	अहिन-अकल्पाग
नोरानि-नीरीगिरि	निषुः-दुःखी			



संगदे रामाय

वात्सल्यात् जिन स्तुति देवाना





f  
t  
+